चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 317, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | रविवार 17 दिसंबर 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

संसद में खुद को आग लगाना चाहते थे आरोपी

पुलिस पूछताछ में किया चौंकाने वाला खुलासा, भाजपा सांसद प्रताप सिम्हा के बयान दर्ज करएगी पुलिस

नई दिल्ली
संसद में घुसपैठ करने वाले आरोपियों ने पुलिस पूछताछ में एक चौंकाने वाला खुलासा किया है। आरोपियों ने बताया कि उन्होंने संसद में खुद को आग लगाने की भी योजना बनाई थी। साथ ही संसद में पर्चे फेंकने पर भी विचार किया था। हालांकि काफी विचार के बाद उन्होंने इन दोनों विकल्पों को छोड़ दिया और आखिरकार संसद में घुसकर स्मोक कैनिस्टर से रंगीन धुंआ छोड़ने पर सहमत हुए।

पुलिस पूछताछ में बताया क्या थी योजना

दिल्ली पुलिस के अधिकारियों ने शनिवार को बताया कि आरोपियों ने पूछताछ में खुलासा किया है कि विजिटर्स गैलरी से लोकसभा चैंबर में कूदने की योजना तय करने से पहले उन्होंने कई अन्य विकल्पों पर भी विचार किया था। पुलिस ने बताया कि पहले आरोपियों ने अपने शरीर पर फायरप्रूफ जैल लगाकर संसद भवन में खुद को आग लगाने की योजना पर भी विचार किया था लेकिन बाद में ये विचार छोड़ दिया। इसके अलावा आरोपियों ने संसद भवन में पर्चे फेंकने की भी योजना बनाई थी लेकिन आखिरकार उन्होंने लोकसभा में स्मोक कैनिस्टर से रंगीन धुंआ छोड़ना तय किया और बीते बुधवार को वैसा ही किया।

भाजपा सांसद प्रताप सिम्हा के बयान दर्ज कराएगी पुलिस

मामले की जांच कर रही दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल मैसूर से भाजपा सांसद प्रताप सिम्हा के भी बयान दर्ज करने पर विचार कर रही है। बता दें कि प्रताप सिम्हा ने ही आरोपियों सागर शर्मा और मनोरंजन डी के विजिटर पास को अपनी स्वीकृति दी थी। शुक्रवार को पुलिस आरोपियों को उन जगहों पर लेकर गई, जहां आरोपियों ने मिलकर संसद में घुसपैठ की साजिश रची थी।

कांग्रेस का ऑनलाइन क्राउडफंडिंग अभियान

सदन में कांग्रेस के 13 सांसदों को निलंबित करने के एक सवाल पर वेणुगोपाल ने कहा, 'आपलोग हमसे कहते हैं कि यह इमारत (संसद भवन) दुनिया की सबसे सुरक्षित जगह होगी और जो दूसरी तरफ हुआ, वह सुरक्षा में चूक की वजह से हुआ। सदस्यों (विपक्ष) को सजा दी गई। किन कारणों से उन सांसदों को निलंबित किया गया है?' कांग्रेस के 13 सांसदों के अलावा तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के सांसद डेरेक ओ ब्राइन को पूरे शीतकालीन सत्र के लिए निलंबित कर दिया गया है।

कांग्रेस ने शनिवार को ऑनलाइन क्राउडफंडिंग अभियान (पैसे जुटाने का अभियान) डोनेट फॉर देश की शुरूआत की घोषणा की। मीडिया को संबोधित करते हुए वेणुगोपाल ने कहा, 'इस अभियान को आधिकारिक तौर पर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा 18 दिसंबर को शुरू किया जाएगा।

छठे आरोपी को कोर्ट में किया गया पेश, सात दिन की पुलिस रिमांड पर भेजा

नई दिल्ली
संसद में घुसपैठ करने वाले आरोपियों से पुलिस लगातार पूछताछ कर रही है। अब इस मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपी को दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट में न्यायाधीश के सामने पेश किया गया है। कोर्ट ने आरोपी महेश को सात दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया है। इस मामले में पुलिस ने महेश कुमावत नाम के एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने इस मामले में ये छठे आरोपी की गिरफ्तारी की है। आरोपी महेश कुमावत है। जो मूल रूप से राजस्थान का रहने वाला है। स्पेशल सेल के सूत्र बताते हैं कि जब ललित झा ने दिल्ली पुलिस के सामने कर्तव्य पथ थाना में सरेंडर किया था।उस वक्त महेश कुमावत भी साथ में था। वहीं दूसरी तरफ अदालत ने संसद में सुरक्षा उल्लंघन के पीछे के मास्टरमाइंड होने के आरोपी ललित झा को शुक्रवार को सात दिनों की पुलिस हिरासत में भेज दिया। पटियाला हाउस कोर्ट के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश हरदीप कौर ने इसी मामले में गिरफ्तार चार अन्य लोगों को गुरुवार को सात दिन की पुलिस हिरासत में भेज दिया था।

संसद सुरक्षा चूक मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसे जल्द ही दिल्ली के पटियाला हाउस कोर्ट के संबंधित न्यायाधीश के समक्ष पेश किया जाएगा।

'इसकी वजह बेरोजगारी..', संसद में घुसपैठ की घटना पर आया राहुल गांधी का बयान

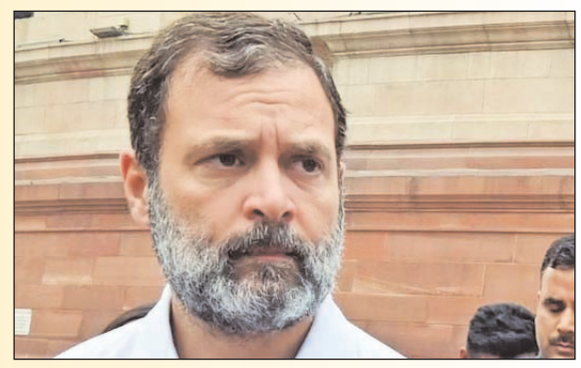

नई दिल्ली
संसद की सुरक्षा में चूक मामले पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने इसके लिए मोदी सरकार की नीतियों को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने कहा कि इसकी बड़ी वजह बेरोजगारी है। राहुल गांधी ने इस मामले को लेकर केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा है। मीडिया से बात करते हुए राहुल गांधी ने कहा, 'यह क्यों हुआ है? देश में मुख्य मुद्दा बेजोरगारी है। पीएम मोदी की नीतियों के कारण देश के युवाओं को नौकरी नहीं मिल रही है। इस घटना का मुख्य कारण बेरोजगारी और महंगाई है।' कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा, 'यह एक गंभीर मुद्दा है। इस पर सरकार को ध्यान देना चाहिए। हम बार बार सदन में मांग कर रहे हैं कि केंद्रीय मंत्री यहां आए और बयान दें, लेकिन वह आना नहीं चाहते हैं। वह सदन को चलने देने के लिए तैयार नहीं है। यह लोकतंत्र के लिए सही नहीं है, लेकिन उन लोगों से भी बात करके को फायदा नहीं जिन्हें लोकतंत्र पर भरोसा नहीं है। वह कांग्रेस का नाम लेकर और नेहरू-गांधी को बदनाम करके वोट लेते हैं। उनका काम केवल हमें बदनाम करना और वोट लेना है।'

एनआईए ने संघ नेता श्रीनिवासन की हत्या के आरोपियों पर लुकआउट नोटिस किया जारी

नई दिल्ली
पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया आतंकी भर्ती मामले की जांच कर रही एनआईए ने आरएसएस नेता के श्रीनिवासन की हत्या के कई आरोपियों को लेकर लुकआउट नोटिस जारी किया है। श्रीनिवासन की हत्या 16 अप्रैल 2022 को केरल के पलक्कड़ में कर दी गई थी। एएनआई ने एक्स पर कई आरोपियों की फोटो जारी करते हुए जानकारी साझा की है। एजेंसी ने लिखा, "पीएफआई से जुड़े ये आरोपी शख्स दूसरे समुदाय के लोगों को निशाना बनाने की एक बड़ी साजिश में शामिल थे और 16 अप्रैल 2022 को पलक्कड़ केरल के रहने वाले श्रीनिवासन की हत्या में शामिल थे। उनके बारे में कोई भी जानकारी मिले तो कृपया व्हाट्सएप पर जानकारी दें।" एएनआई ने इसके लिए व्हाट्सएप नंबर+919497715294 भी जारी किया है।"

एनआईए ने आरोपियों के नाम जारी किए

आरोपियों की पहचान एनार्कुलम जिले के अब्दुल वहाब और मुहम्मद याजेर अराफात, पलक्कड़ जिले के अब्दुल रशीद के, अयूब टीए, मुहम्मद मंजूर, शाहुल हमीद और मुहम्मद अली केपी और मलप्पुरम जिले के सफीक पी के रूप में की गई है।

एनआईए ने श्रीनिवासन की हत्या में शामिल एक अज्ञात आरोपी की कुछ तस्वीरें भी साझा की हैं। एजेंसी ने उस व्यक्ति के बारे में भी जानकारी मांगी है जिसने 4 जुलाई 2010 को केरल के थोडुपुझा में एक कॉलेज प्रोफेसर टीजे जोसेफ की हथेली काट दी थी।

मालवाहक जहाज को लुटेरों से रेस्क्यू करने में जुटी भारतीय नौसेना

नई दिल्ली
भारतीय नौसेना ने अरब सागर में लुटेरों से माल्टा का झंडा लगे एक मालवाहक जहाज को रेस्क्यू करने में जुटी है। नौसेना ने तुरंत कार्रवाई करते हुए अपने एक सर्विलांस एयरक्राफ्ट और युद्धक जहाज को भेजा और लगातार माल्टा के जहाज की निगरानी की जा रही है।

महिला आरक्षण विधेयक 2024 की जनगणना के बाद होगा लागू: वित्त मंत्री

मंगलुरु
केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि केंद्र 2024 की जनगणना के बाद महिला आरक्षण विधेयक को लागू करने के लिए कदम उठाएगा। दक्षिण कन्नड़ जिले के मूडबिद्री में रानी अब्बक्का के नाम पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करने के बाद सीतारमण ने कहा कि महिला विधेयक एक वास्तविकता बन गया है क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हमेशा राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका में विश्वास करते हैं। पुर्तगालियों के खिलाफ लड़ने वाली 16वीं सदी की उल्लाल की रानी रानी अब्बक्का के साहस और वीरता की सराहना करते

हुए, सीतारमण ने कहा कि केंद्र सरकार ने कई अज्ञात सेनानियों के योगदान का दस्तावेजीकरण करने के लिए कदम उठाए हैं, जिन्होंने शाही ताकतों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। उन्होंने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में, सरकार ने 14,500 कहानियों के साथ एक डिजिटल जिला भंडार तैयार किया है, जिसमें स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े स्थानों पर प्रकाश डाला गया है। केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय ने स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका, संविधान सभा में महिलाओं और स्वतंत्रता संग्राम के आदिवासी नेताओं पर तीन किताबें लाने के लिए अमर चित्र कथा के साथ भी समझौता किया है। वित्त मंत्री ने उम्मीद जताई कि तटीय कर्नाटक में रानी अब्बक्का के नाम पर एक सैनिक स्कूल खोला जाएगा। उन्होंने स्मारक डाक टिकट के लिए इस्तेमाल किए गए रानी अब्बक्का के चित्र के लिए कलाकार वासुदेव कामथ को बधाई दी।

पाकिस्तान की एक और हरकत का खुलासा: भारत में घुसपैठ की फिराक में आतंकी

श्रीनगर
पाकिस्तान अपनी नापाक हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। एक बार फिर सीमा पार से आतंकवादी भारतीय सीमा में घुसने की फिराक में हैं। खुफिया एजेंसियों से सूचना मिलने के बाद बीएसएफ ने अलर्ट जारी कर दिया है। बीएसएफ के एक शीर्ष अधिकारी ने जानकारी देते हुए कहा कि पाक सीमा से लगभग 250 से 300 आतंकवादी जम्मू-कश्मीर में घुसपैठ की फिराक में हैं। सीमा पार लॉन्चपैड पर ये आतंकवादी मौजूद हैं। अधिकारी ने कहा कि सुरक्षा बलों को अलर्ट कर दिया गया है। सीमा

पार से घुसपैठ की किसी भी कोशिश को नाकाम कर देंगे। बीएसएफ के महानिरीक्षक अशोक यादव ने दक्षिण कश्मीर के पुलवामा जिले में मीडिया से बातचीत के दौरान कहा कि खुफिया जानकारी है कि 250-300 आतंकवादी लॉन्च पैड पर इंतजार कर रहे हैं। लेकिन हम और सेना सभी संवेदनशील इलाकों पर हावी हो गए हैं। उन्होंने कहा कि बीएसएफ और सेना के बहादुर जवान सीमावर्ती इलाकों में सतर्क हैं और घुसपैठ की किसी भी कोशिश को नाकाम कर देंगे।

लोकसभा अध्यक्ष ने सांसदों को लिखा पत्र, कहा- सदन की घटना को निष्कासन से जोड़ना दुर्भाग्यपूर्ण

नई दिल्ली
लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सांसदों को पत्र लिखकर कुछ सदस्यों के सदन से निष्कासन को 13 दिसंबर को हुई घटना से जोड़ने को दुर्भाग्यपूर्ण बताया है। साथ ही उन्होंने कहा कि सदन की सुरक्षा की जिम्मेदारी सबकी सामूहिक है। उन्होंने सांसदों से सदन को सुचारू रूप से चलाने में सहयोग की भी अपील की। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने पत्र में कहा है कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ राजनीतिक दल और कुछ सांसद सदन द्वारा लिये गए सांसदों के निलंबन के फैसले को संसद में हुई घटना से जोड़ रहे हैं। यह सर्वथा अनुचित है। सांसदों के निलंबन और सदन में 13 दिसंबर को हुई घटना का परस्पर कोई संबंध नहीं है। सांसदों का निलंबन विशुद्ध रूप से संसद भवन में श्रेष्ठ संसदीय परंपराओं के अनुपालन से जुड़ा है।

बिरला ने सदन की सुरक्षा में हुई चूक के मामले में सदस्यों को अब तक उठाए गए कदमों की जानकारी देते हुए कहा है कि संसद की सुरक्षा संसद के क्षेत्राधिकार में आती है। सबसे प्राप्त विचार-विमर्श और सुझावों के आधार पर कार्य योजना बनेगी और संसद सचिवालय उसे क्रियान्वित करेगा। पूर्व में तत्कालीन अध्यक्षों और सदन ने ऐसी घटनाओं का संज्ञान लेते हुए उन पर आवश्यक कार्रवाई की है। सबसे सदन संचालन में सहयोग की अपील करते हुए अध्यक्ष ने कहा कि वे सदस्यों से अनुरोध करते हैं कि समर्पण भाव के साथ देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभायेंगे। साथ ही उन्होंने कहा कि देश की जनता सदन की कार्यवाही को बाधित करने और अनुचित व्यवहार की सराहना नहीं करेगी।

संसद की सुरक्षा मामले में राहुल गांधी के बयान को भाजपा ने बताया राजनीति से प्रेरित

नई दिल्ली
संसद की सुरक्षा में सेंध के मामले को बेरोजगारी और महंगाई से जोड़ने के कांग्रेस के बयान पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने पलटवार किया है। शनिवार को भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने यहां संवाददाता सम्मेलन में कांग्रेस और आईएनडीआई गठबंधन पर निशाना साधते हुए बयान को बचकाना और गैरजिम्मेदाराना बताया। शहजाद पूनावाला ने कहा कि देश और संसद की सुरक्षा जैसे गंभीर मुद्दे पर राजनीति नहीं की जानी चाहिए। संसद के भीतर 13 दिसंबर की घटना दुर्भाग्यपूर्ण थी। इसकी निंदा की जानी चाहिए लेकिन कांग्रेस के नेता हमलावरों के प्रति सहानुभूति दिखा रहे हैं। कांग्रेस के अभियान डोनेशन फॉर देश पर शहजाद पूनावाला ने कहा कि इन्होंने साठ सालों तक देश को लूटा है। तीन राज्यों में हार के बाद यह साफ है कि देश तो कांग्रेस को वोट देने के मूड में भी नहीं है। राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी से सवालों की बौछार करते हुए शहजाद पूनावाला ने सवालिया लहजे में कहा कि संसद के अंदर हमला करने वालों के बचाव में उतरे विपक्ष के तार तो कहीं इनके साथ नहीं जुड़े हैं? हमले की आरोपित नीलम आजाद कांग्रेस के कार्यकताओं के साथ दिखाई दी थी और उसके लिए ही वोट मांगती दिखाई दी थी। इनको कानूनी सहायता भी कांग्रेस पार्टी तो नहीं दे रही हैं? ये रिश्ता क्या कहलाता है?

'लोकसभा के लिए कांग्रेस की मजबूत तैयारी, मजबूत एजेंडा के साथ आगे बढ़ेंगे'

नई दिल्ली
कांग्रेस के शीर्ष नेताओं ने आगामी लोकसभा के लिए शनिवार को गुजरात में पार्टी की तैयारियों पर चर्चा की। इस दौरान पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि वह संगठन को मजबूत बनाने के लिए सकारात्मक एजेंडे के साथ आगे बढ़ेंगे। खरगे ने दिल्ली में एआईसीसी के मुख्यालय में गुजरात कांग्रेस नेताओं के साथ बैठक की अध्यक्षता की। कांग्रेस नेता राहुल गांधी और पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेता भी इस बैठक में शामिल हुए। बैठक में गुजरात में पार्टी को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है जैसे मुद्दों पर बातचीत हुई। इसके साथ ही लोगों के सामने भाजपा के कुशासन को उजागर करने के तरीकों पर भी चर्चा की गई।

खरगे ने सोशल मीडिया पर बताया

यह हर राज्य में पार्टी की स्थिति को मजबूत करने के लिए आयोजित बैठकों की श्रृंखला का हिस्सा था। इसके साथ ही आगामी लोकसभा चुनाव के लिए तैयारियों पर भी ध्यान दिया गया। इस बैठक के बाद खरगे ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर हिंदी में कहा, 'गुजरात में निरंतर भाजपा सरकार के कुशासन की वजह से मुद्दे वही हैं - बेरोजगारी, महंगाई, आर्थिक असमानता, दलितों-अदिवासियों के खिलाफ अत्याचार, फजीर्वाड़ा और अपार भ्रष्टाचार।' उन्होंने आगे कहा, '2024 लोक सभा चुनाव के परिपेक्ष्य में आज गुजरात कांग्रेस की तैयारियों पर हमने मिलकर विचार-विमर्श किया। कांग्रेस पार्टी, एक सकारात्मक एजेंडे के साथ, नये सिरे से आने वाली चुनौतियों के लिए संगठन को मजबूत करेगी।'

इन नेताओं ने भी लिया बैठक में हिस्सा

इस बैठक में शामिल होने वाले अन्य नेताओं में एआईसीसी के महासचिव केसी वेणुगोपाल, मुकुल वासनिक और गुजरात कांग्रेस के अध्यक्ष शक्तिसिंह गोहिल थे। बैठक के बाद मीडिया से बात करते हुए शक्तिराज गोहिल ने कहा, 'मैं इस बैठक का आयोजन करने के लिए कांग्रेस हाई कमांड का धन्यवाद करना चाहता हूं। भाजपा के शासन में गुजरात में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है, इसके लिए हम सकारात्मक एजेंडा के साथ आगे बढ़ेंगे। राज्य को लूटा जा रहा है, जिससे वहां की जनता बहुत दुखी है।' पार्टी के वरिष्ठ नेता वासनिक ने कहा कि हम उम्मीद कर रहें कि कांग्रेस को मजबूत करने के कार्यक्रम के साथ हम गुजरात में जीत हासिल करेंगे। हमने लोकसभा चुनाव के लिए ढाई घंटे की लंबी बैठक की। इस दौरान हमारे सामने आने वाली चुनौतियों का सामना कैसे करना है, इस पर चर्चा की गई। बता दें कि गुजरात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का गृह राज्य है। भाजपा यहां पिछले सात वर्षों से लगातार जीत हासिल कर रही है।

'30 अप्रैल तक पूरी होगी शहरी स्थानीय निकायों की चुनाव प्रक्रिया'

नई दिल्ली
नगालैंड सरकार ने उच्चतम न्यायालय को बताया है कि राज्य में शहरी स्थानीय निकायों के लिए चुनाव प्रक्रिया 30 अप्रैल तक पूरी कर ली जाएगी। नवंबर में नगालैंड विधानसभा ने महिलाओं के लिए शहरी स्थानीय निकायों में 33 फीसदी सीटें आरक्षित करने वाला एक विधेयक पारित किया था। उत्तर पूर्वी राज्य में शहरी स्थानीय निकाय चुनाव आखिरी बार 2004 में हुए थे।

अदालत ने मुख्य सचिव के हलफनामे का लिया संज्ञान

इस महीने की शुरूआत में नगालैंड के मुख्य सचिव ने शीर्ष अदालत में हलफनामा दायर किया था। इसमें कहा गया था कि आठ जनवरी से पहले एक महीने के भीतर नियम तैयार कर लिए जाएंगे।

मांडा में सड़क दुर्घटना में बाइक चालक की मौत,साथी नाजुक

बाइक सवार युवकों को टक्कर मारते हुए बिजली के पोल से जा टकराई बोलेरो, हड़कंप

अखंड भारत संदेश

मांडा। मांडा थाना क्षेत्र के कुखुड़ी गांव के समीप प्रयागराज- मिजार्पुर राजमार्ग पर तेज रफ्तार में अनियंत्रित बोलेरो ने बाइक सवार युवकों को टक्कर मारते हुए बिजली के पोल से टकरा गई। इससे आसपास के लोगो मे हड़कंप मच गया। हादसे में बाइक चालक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जबकि साथी समेत बोलेरो में सवार कई लोग गम्भीर रूप से घायल हो गए। पुलिस कि मदद से घायलों को इलाज हेतु अस्पताल एवं शव को पोस्टमार्टम के लिए शहर भेजा गया। मांडा थाना क्षेत्र के नरवर चौकथा गांव निवासी अनुज तिवारी (23) अपने साथी लकी तिवारी को लेकर शनिवार को रिश्तेदारी में गए हुए थे। इस दौरान दोपहर लगभग तीन बजे के आसपास बाइक से ही घर लौट रहे थे कि कुखुड़ी गांव के सामने प्रयागराज- मिजार्पुर राजमार्ग पर सामने से आ रही तेज रफ्तार में अनियंत्रित होकर बोलेरो ने टक्कर मारते हुए बिजली के पोल से टकरा गई। और सड़क हादसे में बाइक चालक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। जबकि बाइक पर सवार लकी व बोलेरो में सवार कई लोग बुरी तरह घायल हो गए। हादसे को लेकर स्थानीय लोगो मे हड़कंप मच गया। उक्त हादसे में सड़क के किनारे श्याम बहादुर निवासी कुखुड़ी की खड़ी बाइक सहित बोलेरो के साथ मृतक की बाइक भी क्षतिग्रस्त हो गई। सूचना पर थानाध्यक्ष मांडा वैभव सिंह, चौकी प्रभारी विनय सिंह सहित पुलिस दल बल के साथ मौके पर पहुँचे। और सभी घायलों को एम्बुलेंस से नजदीकी अस्पताल भेजकर शव को कब्जे में लेकर मृतक के स्वजनों को सूचना दी। उक्त जानकारी पर रोते बिलखते परिजन भी मौके पर पहुचें। उधर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए शहर भेज दिया है। मामले में थानाध्यक्ष वैभव सिंह ने कहा कि शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। घायलों का नजदीकी अस्पताल में इलाज कराया जा रहा है।

चार पहिया वाहन ने गर्भवती महिला संग पुत्री को मारी टक्कर,मौत

सोरांव। शुक्रवार तेजा का पूरा अब्दालपुर खास निवासिनी रजई उर्फ रीना देवी 32 अपनी दो वर्षीय पुत्री राखी उर्फ परी को लेकर नहर ददौली सब्जी खरीदने आई थी। वापस जाते समय एक अज्ञात चार पहिया वाहन जो की प्रयागराज से प्रतापगढ़ की तरफ जा रहा था। जोरदार टक्कर मार दिया। टक्कर इतनी तेज थी कि मौके पर 2 वर्षीय राखी उर्फ परी की मौत हो गई। तथा राखी की मां रीना देवी 32 साल बुरी तरह से घायल हो गई। सूचना पर पहुंची सोरांव पुलिस ने घायल रीना देवी को इलाज के लिए सीएससी सोराव भेज दिए जहां पर डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वहीं पुलिस मृतक किशोरी परी के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। शनिवार सुबह इलाज के दौरान गर्भवती रीना देवी 32 साल की भी मौत हो गई। एक ही घर में दो लोगों की मौत से पूरा परिवार सदमे में है। जानकारी के अनुसार मृतक का पति मनोज कुमार मेहनत मजदूरी करके अपना और अपने परिवार का पेट पालता था मृतका के जेठ शंकर लाल पुत्र बाले राम निवासी तेजा का पूरा अब्दालपुर खास ने अज्ञात वाहन के खिलाफ मुकदमा लिखवा दिया है। पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई है मृतक के घर वालों का रो-रोकर बुरा हाल है।

प्रभु श्रीराम के प्राण प्रतिष्ठा के दिन घरों में जलाएं दीप करें भजन कीर्तन : डा. एल एस ओझा

अखंड भारत संदेश

मेजा। नव वर्ष में 22 जनवरी को अयोध्या में प्रभु श्रीराम के प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रयागराज सहित सम्पूर्ण यमुनापार वासी अपने अपने घरों में दीप जलाकर आराध्य प्रभु श्रीराम के भजन कीर्तन का आयोजन करें उक्त उदगार वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ एस एल ओझा ने शनिवार को मेजा क्षेत्र का दौरा करने के पश्चात प्रेस वार्ता के दौरान व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि अयोध्या में नवनिर्मित राम मंदिर में प्रभु श्रीराम के प्राण प्रतिष्ठा को दिव्य एवं अलौकिक बनाने के लिए संकल्प यात्रा के जरिए जन जन को जोड़ने के लिए भाजपा की टीम क्षेत्र में पूरी तन्मयता के साथ सक्रिय है ऐसे में प्रयागराज सहित संपूर्ण यमुनापार के लोग अपने अपने घरों तथा आस पास स्तिथ मंदिरों में दीप जलाएं और इस ऐतिहासिक पल को भजन कीर्तन के आयोजन से यादगार बनाएं। डा ओझा ने आगे कहा कि प्रभु श्रीराम त्रेता युग के अवतार हैं और सनातन धर्म को मानने वाले हैं हमारी हर सांस में उनका अस्तित्व है बिना श्रीराम के धरती पर कुछ भी संभव नहीं है। उन्होंने लोगों से अपील करते हुए कहा कि सभी लोग मयार्दा पुरुषोत्तम श्रीराम के इस आयोजन सर जुड़कर स्वयं को उनके चरणों में समर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त कर जीवन को धन्य बनाएं। भाजपा नेता का मानना है कि अपने आराध्य प्रभु श्रीराम का प्रयागराज से काफी लगाव था। एक उदाहरण में उन्होंने कहा जिस तरह गंगा पार करने के दौरान माझी ने उतराई के रूप में जीवन की नैया पार करने के लिए प्रभु श्री राम से अनुनय विनय किया था उसी प्रकार हम सभी लोगों की भी जीवन की नैया वहीं पार लगाएंगे जब हम सब लोग मिलकर अपने आराध्य के प्राण प्रतिष्ठा के लिए पूरी तरह से समर्पित होंगे।

नीलगाय को गोली मारने की सूचना पर मचा हड़कंप, पुलिस वन विभाग मौके पर पहुंचे

मऊआइमा। इलाके के गादियानी (सरैया)गांव में नीलगाय को गोली मारने की फैली अफवाह पर लगा विराम।कटीले तारों से घायल हुआ नीलगाय को इलाज कर वन विभाग में छोडा गया। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम गदियानी सरैंया में एक नीलगाय के गोली मारे जाने की सूचना पर पुलिस के साथ पहुंची डॉक्टरों की टीम उपचार में जुट गई। बताया गया है कि नीलगाय कहीं कटिले तार से जख्मी हो गया था।घायल होने की स्पष्ट पर पुलिस ने राहत की सांस ली। इंस्पेक्टर मऊआइमा राघवेन्द्र सिंह एंव पशु चिकित्सा अधिकारी एंव वन दरोगा मसूद अहमद ने देखे तथा उपचार के बाद नीलगाय को वन विभाग में छुड़वा दिए।

विकसित भारत संकल्प यात्रा पहुंची गड़ेवरा, हुआ स्वागत

कोहड़ार। विकसित भारत संकल्प यात्रा पहुंचने पर मुख्य अतिथि विधायक कोरांव राजमणि कोल सहित ग्रामीणों ने जोरदार स्वागत किया। शनिवार को कोरांव विधान सभा क्षेत्र के मेजा विकास खंड अंतर्गत ग्राम पंचायत गड़ेवरा में विधायक ने कहा कि केंद्र व प्रदेश की डबल इंजन की सरकार लोगों के लिए कई योजनाएं लागू की है। जिसे विकसित भारत संकल्प यात्रा के माध्यम से लोगों तक पहुंचाने का काम किया जा रहा है।इस दौरान उन्होंने ग्रामीणों को पीएम आवास प्रमाण पत्र,आयुष्मान कार्ड,क्रेडिट कार्ड वितरित किए। विधायक ने केंद्र सरकार से किसान सम्मान निधि को 6 हजार से बढ़ाकर 12 हजार करने की मांग की। उन्होंने उपस्थित लोगों को विकसित भारत यात्रा के तहत संकल्प भी दिलाया। मुख्य अतिथि ने प्रधान द्वारा निर्धारित खेल मैदान के लिए भूमि पूजन किया। खंड विकास अधिकारी मेजा सरिता सिंह ने विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। भाजपा नेता योगेश शुक्ल ने विकसित भारत संकल्प यात्रा की परिकल्पना को विस्तार से बताते हुए कहा कि इस यात्रा से आम लोगों को लाभ मिल रहा है।उन्होंने कहा कि पीएम की महत्त्वाकांक्षी योजना हर घर जल की है,जो कुछ ही महीनों में आपके घर नल से जल पहुंचने लगेगा। इससे पूर्व मुख्य अतिथि ने सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान अनिल शुक्ल और संचालन प्रभारी एडीओ आईएसबी राजेश त्रिपाठी ने किया। इस मौके पर प्रमुख प्रतिनिधि गंगा प्रसाद मिश्र, भाजपा नेता बबुआन द्विवेदी, वरिष्ट समाजसेवी नित्यानंद उपाध्याय, समाजसेवी शेषमानी शुक्ल,अखिल भारतीय प्रधान संघ के अल्पसंख्यक के प्रदेश अध्यक्ष काजी मोहम्मद मुअज्जम (पप्पू काजी)जिलाध्यक्ष सुरेश तिवारी, भाजपा नेत्री संतरा निषाद ने अपने विचार रखे। इस मौके पर शिव शंकर उर्फ बदऊ मिश्रा राजू दुबे, राजेंद्र तिवारी रामकुमार कोल प्रयाग जी शुक्ला आदि लोग उपस्थित रहे।

न्यूज झरोखा

भगवत भजन से ही होता है सारे दुःखों का नाश

सहसों। सप्त दिवसीय संगीतमय चल रही श्रीमद्भागवत महापुराण कथा ज्ञान यज्ञ के समापन पर शनिवार को कथा व्यास श्री अभयेश्वर प्रपन्नाचार्य जी महाराज द्वारा सुदामा चरित्र का सजीव वर्णन सुनकर उपस्थित श्रोता नर नारी भाव-विभोर हो गए। कथा व्यास ने कहा कि मित्रता करो तो भगवान श्रीकृष्ण और सुदामा जैसी। जो अपने मित्र की परेशानी को समझे और बिना बताए ही मदद कर दे वही सच्चा मित्र है। भक्त सुदामा अपनी पत्नी के कहने पर मित्र कृष्ण से मिलने द्वारकापुरी जाते हैं। द्वारपाल द्वारा सुचित होने पर भगवान कृष्ण नंगे पांव ही दौड़ते हुए अपने मित्र सुदामा को गले लगाकर दोनों मित्र भाऊक होकर रोने लगे। भगवान अपने मित्र को महल में ले जाकर सिंहासन पर बैठाया और मित्र सुदामा के पैरों को अपनी आंसुओं से धो डाला। भगवान अपने मित्र की प्रसन्नता में उनके सर्व दुःखों को दूर करते हुए तीन मुट्ठी चावल के बदले भोग विलास हेतू सुंदर सा राजमहल सुख समृद्धि शारीरिक सुंदरता तथा देवी रूकमणि ने धन संपदा से उनको परिपूर्ण कर दिया। यह है भगवत भक्ति का अनुराग कथा व्यास ने कहा भगवत भक्ति और अनुराग से ही सारे कष्ट दूर होकर मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। कथा विश्राम पर मुख्य यजमान वेदमणि तिवारी प्रबंधक एवं शिव प्रकाश तिवारी प्रधानाचार्य ने व्यास पीठ, भागवत भगवान एवं आवाहि देवी देवताओं की आरती उतारी तत्पश्चात भक्तों में प्रसाद का वितरण कराया गया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से प्रयाग दत्त तिवारी, रामदत्त तिवारी, शिवदत्त तिवारी, आशुतोष तिवारी, हरिहरनाथ तिवारी, डॉक्टर सूर्य नारायण तिवारी, चिंतामणि शुक्ला, कृष्ण बल्लभ द्विवेदी, कृष्ण मोहन तिवारी, राजकुमार सिंह परिहार सहित आदि भक्त रसिक श्रोता नरनारी कथा का रसपान करते उपस्थित रहे।

संकल्प यात्रा के दौरान बेदों में सरकार की गिनाई उपलब्धियां

करछना। विकासखंड करछना के अंतर्गत ग्राम पंचायत बेदों में विकसित संकल्प यात्रा का आयोजन प्राथमिक विद्यालय पर आयोजित किया गया जिसमें बड़ी संख्या में स्कूली छात्र गांव के गणमान्य लोग एवं पुरुष महिलाएं उपस्थिति रही संकल्प यात्रा के दौरान भारत सरकार द्वारा चलाई जाने वाली जनकल्याणकारी योजनाओं के विषय में जानकारी दी गई उज्ज्वला योजना आवास शौचालय सड़क पानी पेयजल आदि सभी ग्रामीणों को विस्तृत जानकारी दी गई इस मौके पर सहायक विकास अधिकारी राम शिरोमणि तिवारी सचिन दीपेश सिंह प्रधान प्रतिनिधि बडेलाल पटेल चंद्र प्रकाश तिवारी दुष्यंत सिंह अतुल कुमार मिश्रा स्कूल के शिक्षक शिक्षिकाएं सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

पंचायत सचिवालय बेंदौ का एडीओ ने किया उद्घाटन

करछना। विकास खंड करछना के अंतर्गत ग्राम पंचायत बेंदौ में नवनिर्मित ग्राम पंचायत सचिवालय का सहायक विकास अधिकारी करछना राम शिरोमणि तिवारी ने फीता काटकर उद्घाटन किया इस मौके पर ब्लॉक कर्मियों में पंचायत सचिव दीपेश सिंह दुष्यंत प्रताप सिंह अतुल कुमार मिश्रा प्रधान प्रतिनिधि चंद्र प्रकाश तिवारी कबरा,बंदों पंचायत के प्रधान प्रतिनिधि बड़े लाल पटेल सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण एवं ब्लॉक कमी व गणमान्य लोग उपस्थित रहे पंचायत सचिव दीपेश सिंह ने कहा कि ग्राम पंचायत बेदौ में बहुत दिनों से पंचायत भवन जर्जर हो गया था जिसकी वजह से सरकार द्वारा नये पंचायत भवन का निर्माण कराया गया है जिससे गांव की समस्त समस्याएं पंचायत सचिवालय स्तर से ही निपटाए जाएगी एडीओ पंचायत राम शिरोमणि तिवारी ने बताया कि सरकार की मनसा के अनुरूप प्रत्येक गांव में पंचायत भवन का निर्माण कराया जा रहा है जिससे ग्रामीणों को त्रिरस्तरी पंचायत का लाभ गांव स्तर पर ही लोगों को मिल सके।

पुलिस कर्मियों ने विद्यालय के छात्रों को किया जागरूक

मांडा। महिला सशक्तिकरण, महिला अपराधों से बचाव, महिला हेल्प डेस्क आदि के बारे में मांडा थाने के एंटी रोमियो दस्ते ने बीएफबीएस इंटर कॉलेज चिलबिला की छात्राओं को जागरूक किया। शनिवार मांडा थाने के एंटी रोमियो दल के प्रभारी दरोगा रीतेश यादव, महिला आरक्षी किरन, सिपाही हरे राम राय व सतीश यादव ने बीएफबीएस इंटर कॉलेज चिलबिला में महिला सशक्तिकरण के तहत एक कार्यक्रम का आयोजन कर छात्राओं को जागरूक किया। एंटी रोमियो दस्ते ने सरकार द्वारा महिला सुरक्षा हेतु जारी विभिन्न आकस्मिक मोबाइल नंबर व सरकारी योजनाओं के बारे में भी बताया। मोबाइल से छात्राओं को अनजान लोगों से बात करने से होने वाले नुकसान की भी जानकारी दी। छात्राओं को आकस्मिक दशा में हर पल त्वरित सहायता हेतु तैयार महिला हेल्प डेस्क का भी मोबाइल नंबर दिया। विद्यालय के प्रबंधक रमेश बहादुर सिंह व प्रधानाचार्य ने एंटी रोमियो दस्ते के प्रति आभार व्यक्त किया।

विकसित भारत संकल्प यात्रा पहुंची पगुवार, स्थानीय विधायक रहे मौजूद

बारा/शंकरगढ़। विकसित भारत संकल्प यात्रा शनिवार को दूसरे पहर में ग्राम सभा पगुवार में पहुंची।संकल्प यात्रा में बारा विधायक डॉक्टर वाचस्पति ने ग्रामीणों को विभिन्न योजनाओं की जानकारी देने के साथ-साथ उनका लाभ उठाने का आह्वान किया। प्रयागराज सांसद डा. रीता बहुगुणा जोशी के प्रतिनिधि के रूप में आलोक गुप्ता ने संकल्प यात्रा का स्वागत किया और यात्रा से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर रोशनी डाली।समाजसेवी आलोक गुप्ता ने कहा कि किसी भी योजना के संचालन का उद्देश्य तभी पूरा होता है, जब वह पात्रों के काम आए। विकसित भारत संकल्प यात्रा इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए निकाली गई है। ग्राम प्रधान पगुवार गुलाब सिंह ने कहा कि केंद्र और प्रदेश सरकार के द्वारा हर वर्ग और क्षेत्र की जरूरतों के अनुसार विविध प्रकार की योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। जरूरत है कि उसके प्रचार-प्रसार और उसका लाभ जन-जन तक पहुंचे। संकल्प यात्रा के स्वागत में आए ग्रामीणों को उन्होंने ग्रामीण आजीविका मिशन, आवास, पेंशन, उज्ज्वला, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, आयुष्मान कार्ड, गर्भवती महिलाओं को मिलने वाली सुविधाओं, विधवा-दिव्यांग पेंशन आदि की जानकारी दी। आयोजित कार्यक्रम में राजस्व, स्वास्थ्य, विकास, शिक्षा विभाग, जल जीवन मिशन व कृषि विभाग के द्वारा लोगों को जागरुक किया गया। कार्यक्रम में विधायक बारा डॉक्टर वाचस्पति, डॉ विनोद त्रिपाठी, शिवराम सिंह, सुधा गुप्ता, सांसद प्रतिनिधि आलोक गुप्ता,खंड विकास अधिकारी शंकरगढ़ रामविलास राय,एडीओ सहकारिता लल्लन प्रसाद, एडीओ पंचायत शंकरगढ़ विजय राज सिंह,ग्राम विकास अधिकारी अतुल रंजन , कृषि विभाग से चंद्रशेखर, जल जीवन मिशन से केशव प्रसाद व मंजुला समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

जनता दरबार में बारा विधायक ने सुनी समस्याएं, दिलाया निस्तारण का भरोसा

बारा। बारा विधायक डॉ वाचस्पति ने शनिवार को शंकरगढ़ में जन समस्याओं के निस्तारण के लिये जनता दरबार लगाया। जहाँ उपस्थित लोगों ने तमाम समस्याओं से अवगत कराया।जिस पर विधायक ने संबंधित अधिकारियों को फोन व पत्र लिखकर निस्तारण करने का निर्देश दिया। डॉ वाचस्पति ने शासन स्तर पर संचालित योजनाओं का लाभ आम जनता को मिले, इसके लिये अधिकारियों को निर्देशित किया।विधायक ने आमजन की समस्याओं को सुनते हुए कार्यकताओं से आहवान किया कि वे सरकारी स्तर पर संचालित योजनाओं को आम जनता को अधिक से अधिक लाभ दिलाने में सहभागिता करें।आज शासन स्तर पर तहसील समाधान दिवस, थाना दिवस, ब्लॉक दिवस व गांव-गांव में ग्राम चौपाल लगाकर फरियादियों की फरियाद सुनकर संबंधित विभागीय अधिकारियों द्वारा समस्याओं का निस्तारण किया जा रहा है। यही वजह है कि जनता दरबार के शिविर में फरियादियों की संख्या कम है। डबल इंजन की सरकार देश से लेकर प्रदेश तक पंक्ति में खड़े आखिरी व्यक्ति तक मूलभूत सुविधाओं को मुहैया कराने में प्रयासरत है। पूर्व सभासद सुजीत केसरवानी ने शंकरगढ़ में जर्जर स्थिति में मिनी स्टेडियम और ट्राली ट्रांसफार्मर के लिये विधायक से आग्रह किया। इसीतरह प्रधान नेवरिया और बिहरिया प्रधान परमेश्वर सिंह ने क्षेत्र की तमाम समस्याओं से विधायक को अवगत कराया। मौके पर सावित्री हॉस्पिटल एंड ट्रामा सेंटर के प्रबंधक डॉक्टर विनोद त्रिपाठी, शिवराम परिहार, सुधा गुप्ता, श्यामू निषाद, जेई विद्युत विभाग रवि प्रकाश, श्यामू निषाद,छेदी लाल कोटरय,सुधा गुप्ता, नेहा सिंह,ज्योति कनौजिया,कुलदीप सिंह,रामजतन, व पुलिस प्रशासन के साथ भाजपा के तमाम पदाधिकारी व कार्यकर्ता, संम्भ्रात नागरिक व फरियादीगण मौजूद रहे।

श्री कृष्ण और रुक्मणी विवाह का प्रसंग सुन श्रोता हुए मंत्र मुग्ध

करछना। श्रीमद् भागवत कथा के श्रवण मात्र से जीवन की व्यथा नष्ट हो जाती है।एवं मनुष्य को जीवन जीने की सच्ची राह मिलती है। इसलिए भगवान श्री कृष्ण का वंदन आनंद का सदन है।उक्त बातें अमिलो गांव में करछना भाजपा मंडल के पूर्व अध्यक्ष प्रेम शंकर मिश्र के आवास पर चल रही संगीतमय श्रीमद् भागवत ज्ञान कथा के छठे दिन शुक्रवार को कथा व्यास पं लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने कही। उन्होंने मथुरा गमन, कंस वध ,के साथ रुक्मणी विवाह की कथा सुना कर लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया । वही कलाकारों की ओर से श्री कृष्ण और रुक्मणी की सुंदर व मनमोहक झांकी भी निकाली गई जो लोगों को आकर्षित करती रही। वही सांय कालीन में भाजपा के वरिष्ठ नेता योगेश शुक्ल व डॉ एल एस ओझा की ओर से सामूहिक रूप से भागवत भगवान की आरती की गई । कथा के मुख्य श्रोता यजमान प्रेम शंकर मिश्र व श्याम कली मिश्रा की ओर से कुलगुरु पं माधव पति त्रिपाठी सहित कथा व्यास व आचार्य लोगों का माल्यार्पण कर अभिनंदन किया गया। कथा के आयोजक कृष्ण कुमार मिश्र व दिनेश मिश्र संयोजक रमेश मिश्र व सूर्य प्रकाश मिश्र और व्यवस्थापक चंद्र प्रकाश मिश्र की ओर से सभी भक्त लोगों के प्रति आभार जताया गया । इस मौके पर त्रिवेणी प्रसाद पांडेय ,प्रधानाचार्य कृष्ण प्रकाश तिवारी , डॉ एलएस ओझा, योगेश शुक्ल, विनय शुक्ल ,संजय तिवारी, प्रदीप तिवारी ,धीरज तिवारी, नीरज तिवारी ,राहुल ओझा, अरुण कुमार ओझा ,बैकुंठ नारायण मिश्र ,राधेश्याम द्विवेदी, राम जी शुक्ल, रमेश द्विवेदी, महेंद्र नारायण पांडेय ,शोभनाथ द्विवेदी, गिरजा शंकर मिश्र ,जयशंकर पांडेय ,सालिकराम तिवारी ,रमानाथ द्विवेदी ,विजय पांडेय आदि भक्त लोग मौजूद रहे।

युवक को लाठी डंडो से मार पीट कर लहूलुहान कर दिया गया तीन पर केस

मऊआइमा। घर से निकल कर दुकान जा रहे युवक को रास्ते मे लाठी डंडा सरिया से मार कर लहुलुहान कर दिया गया। पुलिस ने तीन के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। मऊआइमा कस्बा के आजमपुर पूर्वी निवासी तालिब अख्तर पुत्र असीम उद्दीन का आरोप है कि उसका पुत्र मोहम्मद हमजा मोहल्ला पूरे मियां जी स्थित दुकान पर जा रहा था। आरोप है कि रास्ते में उसे लाठी डंडा सरिया से मार कर लहूलुहान कर दिया गया।जिसे बेली में भर्ती कराया गया है। तालिब अख्तर ने मऊआइमा थाने में पूरे मियां जी निवासी कैसर उस्मान,हारिश अख्तर, नावेद अख्तर के खिलाफ केस दर्ज करा दिया है।

ग्राम्य रत्न सम्मान से आपकी आवाज संगठन ने प्रधानों को किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

करछना। विकास खंड करछना में शनिवार को ब्लाक मुख्यालय सभागार में आयोजित कार्यक्रम में आपकी आवाज सामाजिक संगठन की ओर से ब्लाक करछना के प्रधानों एवं क्षेत्र पंचायत सदस्यों को संस्थान की ओर में प्रमाण एवं अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया,आपकी आवाज सामाजिक संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष संतोष पाण्डेय पूर्व प्रधान मेडरा के संयोजक ने सभी उपस्थित अतिथियों को सम्मानित किया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व ब्लाक प्रमुख करछना विजय राज सिंह उर्फ राजू सिंह ने आए हुए सभी क्षेत्र पंचायत सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए शुभकामनाएं दी, और निकट भविष्य में कंधे से कंधा मिलाकर क्षेत्र के विकास एवं प्रगति को आगे बढ़ाने में मदद का भरोसा दिलाया, इस मौके पर ब्लाक के प्रधान संघ अध्यक्ष अवतार किशन सिंह एडवोकेट एवं महा मंत्री धीतेश तिवारी, राज कुमार प्रधान महोरी, परमानंद मौर्य, अभिषेक सिंह, बसही, सुनील कुमार प्रधान कैथी आदि प्रमुख रूप से शामिल रहे के अलावा संतोष पांडे अवधेश निषाद शैलेंद्र श्रीवास्तव आकाश जायसवाल श्रीमती जूही श्रीवास्तव शिव कैलाश पांडे छोटे लाल शर्मा सीताराम यादव एवं अन्य साथी गण प्रधान क्षेत्र पंचायत एवं जिला पंचायत सदस्य कुलदीप त्रिपाठी एवं विजय बाबू यादव विजय राज सिंह और प्रमुख सत्यम शर्मा दीपक पांडे ज्ञान यादव राजेश भारतीय जिलेदार भारतीय पंकज पांडे हिमांशु मिश्रा को सम्मानित किया गया आपकी आवाज सामाजिक संगठन द्वारा विकासखंड कार्यालय के अनवरत कई वर्षों से सेवा दे रहे कर्मचारियों में मनीष शुक्ला बृजेश दुबे एवं पंचायत कार्यालय से समर अन्य साथियों को सम्मानित किया गया प्रदीप पाठक सत्यम शर्मा शिव शंकर पांडे आदि मौजूद रहे।

जन-शिकायतों के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता क्षम्य नहीं : डीएम

अखंड भारत संदेश

सम्पूर्ण समाधान दिवस-तहसील हण्डिया : कुल 365 शिकायतें प्राप्त हुई, जिनमें से 22 शिकायतों को मौके पर ही किया गया निस्तारित

प्रयागराज। जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल की अध्यक्षता में शनिवार को हण्डिया तहसील में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर जिलाधिकारी ने लोगों की शिकायतों को सुनते हुए राजस्व, पुलिस एवं अन्य सम्बंधित विभागों के अधिकारियों की शिकायतों को गुणवत्तापूर्वक एवं समयबद्धता के साथ निस्तारित करने के निर्देश दिये है । साथ ही साथ उन्होंने यह भी निर्देशित किया है कि शिकायतों के निस्तारण से शिकायतकर्ता को संतुष्ट भी होना चाहिए। जिलाधिकारी ने प्रार्थना पत्रों की समयबद्ध जांच, कार्रवाई एवं समस्याओं के निस्तारण के लिए निर्देशित किया साथ ही अधिकारियों को चेतावनी दी कि निस्तारण में विलम्ब पर कड़ी कार्रवाई की जायेगी। जिलाधिकारी ने कहा कि जन-शिकायतों का निस्तारण शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता वाले बिंदुओं में से एक है, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता स्वीकार्य नहीं है।सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर अवधेश कुमार पुत्र राजाराम तहसील हण्डिया के द्वारा आम रास्ते में हो रहे अवैध कब्जे, प्रार्थिनी मंजू देवी निवासी ग्राम कुन्दौरा ने गलत बैनामा की जांच के सम्बंध में, मनीष चन्द्र गुप्ता पुत्र समईलाल गुप्ता निवासी ग्राम जुड़ई का पुरा तहसील हण्डिया ने अपनी भूमि पर कराये जा रहे कार्य में व्यवधान व धमकी दिए जाने, दिनेश कुमार पुत्र स्व0 श्री नारायण ग्राम बरियांवा तहसील हण्डिया के द्वारा सरकारी भूमि पर हो रहे अवैध निर्माण व अतिक्रमण की शिकायत की गयी। जिलाधिकारी ने सभी सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी प्रकरणों की जांच कर आवश्यक कार्रवाई करते हुए आख्या उपलब्ध करायें जाने के निर्देश दिए है।सम्पूर्ण समाधान दिवस पर कुल 365 शिकायतें आयीं, जिनमें से 22 शिकायतों का मौके पर ही निस्तारित कर दिया गया। जिलाधिकारी ने शिकायतों के निस्तारण हेतु सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को आज ही अपने विभागों से सम्बंधित शिकायती प्रार्थना पत्रों को प्राप्त करते हुए निर्धारित समय सीमा में गुणवत्ता के साथ निस्तारित करने के निर्देश दिये है। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी हण्डिया, तहसीलदार हण्डिया सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

संपूर्ण समाधान दिवस में 172 शिकायतें मिलीं

मेजा। शनिवार को सम्पूर्ण समाधान दिवस एसडीएम मेजा जयजीत कौर मिश्रा की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिसमें विभिन्न विभागों से कुल 172 शिकायतें मिलीं।शिकायतों के क्रम में परनीपुर निवासी 30 वर्षीय सौ प्रतिशत दिव्यांग मुन्ना यादव का राशन कार्ड विभागीय अधिकारियों की लापरवाही से एक वर्ष पूर्व कट गया और उसे राशन मिलना बंद हो गया।शिकायत के बाद भी उसका नाम नहीं जोड़ा गया। एसडीएम ने मौके पर आपूर्ति निरीक्षक राजेंद्र यादव को राशन कार्ड बनाने के निर्देश दिए। मांडा के दसवार प्रधान प्रतिनिधि हीरालाल हरिजन ने मांडा अस्पताल के कर्मचारियों द्वारा पिटाई किए जाने को लेकर मुकदमा दर्ज किए जाने की फरियाद की। मेजा के सुकाठ निवासी दुर्गा सिंह ने विद्युत करंट से भैंस की मौत मामले में विभाग के खिलाफ केस दर्ज करने की मांग की। वहीं नहवाई निवासी राधेश्याम, गरेथा निवासी साहब अली,सिंकी कला निवासी सीमा देवी ने गांव के दबंगों द्वारा उनकी जमीन पर अवैध कब्जा किए जाने की शिकायत की।कनिगड़ा निवासी कृष्ण कुमार,चांद खामहरिया निवासी जगदीश सिंह ने बिजली विभाग के खिलाफ अवैध बिल आने की शिकायत दर्ज कराई। डेलौहां गांव के ग्रामीणों ने गांव के ही दबंगों द्वारा चकमार्ग पर अवैध कब्जा कर रास्ता रोके जाने की शिकायत दर्ज कराई।सभी मामलों को गंभीरता से लेते हुए संबंधित अधिकारियों को एक सप्ताह के अंदर निस्तारण करने को निर्देशित किया। इस दौरान राजस्व से सर्वाधिक 84, पुलिस से 34,विकास से 17,समाज कल्याण से 4, स्वास्थ्य से एक और अन्य से 32 शिकायतें दर्ज हुई।मौके पर एक का भी निस्तारण नहीं हुआ। इस मौके पर नायब तहसीलदार मेजा अनुग्रह नारायण सिंह, नायब तहसीलदार मांडा अशोक सिंह,खंड शिक्षा अधिकारी कैलाश सिंह सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

डीसीपी कैम्प कार्यालय यमुनापार में स्थापित करने की उठी मांग

यमुनापार विकास समिति ने किया समर्थन

नैनी। नैनी यमुनापार के निवासियों के हितों को ध्यान में रखते हुए डीसीपी कैम्प कार्यालय यमुनापार क्षेत्र में स्थापित करने की मांग का समर्थन करते हुए यमुनापार विकास समिति के अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार गजेन्द्र प्रताप सिंह ने शासन-प्रशासन से इस पर त्वरित कार्यवाही करने की अपील की हैं। ज्ञातव्य है कि वर्षों से प्रशासनिक तौर पर पुलिस सुरक्षा को दृष्टिगत जनपद को तीन भागों में बांट कर यमुनापार, गंगापार एवं नगर क्षेत्र में पुलिस अधीक्षक की नियुक्ति होती रही है लेकिन इनका कैम्प कार्यालय एक ही जगह शहर में स्थापित होने से क्षेत्रीय जनता को खास कर यमुनापार के निवासियों को उच्च अधिकारियों से मिलने में भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वर्तमान में जब पुलिस बल को मजबूत बनाने हेतु प्रयागराज को पुलिस कमिश्नर का दर्जा प्राप्त हो चुका है तो जनहित में डीसीपी कैम्प कार्यालय भी सुविधाजनक स्थान पर स्थापित किया जाना जनहित में आवश्यक है। वरिष्ठ समाजसेवी नैनी निवासी गिरीश श्रीवास्तव ने जिलाधिकारी प्रयागराज को पत्र के माध्यम से उपयुक्त एवं सर्वसुलभ स्थान इंगित करते हुए डीसीपी यमुनापार का कैम्प कार्यालय नैनी मिजार्पुर रोड पर स्थित गाटा संख्या 244 जो कि वृहद उद्योग के नाम अंकित है के जुज भाग पर स्थापित करने की मांग की हैं।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के साथ साथ मनाया गया डीपीएस का वार्षिकोत्सव

नैनी। नैनी डीपीएस के प्रांगण में वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता के साथ साथ विद्यालय का वार्षिकोत्सव पूर्ण उल्लास के साथ मनाया गया। प्रातः काल की सुन्दर बेला में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि संजय सिंह (एडिसनल डिवीजनल रेलवे मैनेजर प्रयागराज) के कर कमलों से दीप प्रज्वलन के साथ विद्यालय की अध्यक्षा सोनू सिंह, प्राचार्या डॉ० सुजाता सिंह, शिक्षक गण, विद्यार्थी गण, एवं आए अतिथि गण की उपस्थिति में किया गया। तत्पश्चात सभी सदनों के विद्यार्थियों ने मार्च पास्ट के भव्य प्रदर्शन द्वारा सभी को सम्मान देने के साथ सबका स्वागत किया। विद्यालय की प्राचार्य ने सभी का हार्दिक अभिनंदन करते हुए अपने वक्तव्य द्वारा बताया कि खेल में जीतने से ज्यादा मिल जुल कर समूह में खेलने, परस्पर भाईचारे की भावना

होनी चाहिए। मुख्य अतिथि ने भी अपने वक्तव्य द्वारा बच्चों में जोश एवं उत्साह भर दिया। विद्यार्थियों द्वारा शपथ ग्रहण करने के पश्चात खेल का शुभारंभ हुआ। इंटर हाउस की टीमों ने विभिन्न खेल प्रतियोगिता में भाग लेकर जीत हासिल करने का प्रयास किया एथलेटिक्स, फुट बॉल, बॉलीबाल, बास्केट बॉल, शतरंज, टेबुल टेनिस, क्रिकेट, लान टेनिस आदि खेल के साथ साथ बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी भाग लेकर विद्यालय के वातावरण को रंगीन बना दिया । गीत, नृत्य, संगीत से डी० पी० एस० का प्रांगण गूंज उठा। सायंकाल की मधुरिम बेला में वार्षिकोत्सव का शुभारंभ मुख्य अतिथि सिद्धार्थ वर्मा (न्यायधीश हाईकोर्ट प्रयागराज) विशिष्ट अतिथि सुनील शुक्ला (रिटायर्ड डाइरेक्टर प्रसार भारती) के कर कमलों से दीप प्रज्वलन के साथ विद्यालय की अध्यक्षा सोनू सिंह, प्राचार्या डा० सुजाता सिंह, शिक्षक गण, विद्यार्थी गण, एवं अतिथि गण की उपस्थिति में किया गया। विद्यालय की प्राचार्या ने सभी का तहे दिल से स्वागत कर प्रेरणास्पद वक्तव्यों से अभिसिंचित किया। मुख्य अतिथि ने भी विद्यालयी वातावरण की सराहना करते हुए कहा कि इसी तरह विद्यालय में बच्चों के चतुर्दिक विकास पर बल दिया जाना चाहिए। खेलकूद एवं पठ्योत्तर गतिविधियों में यमुना हाउस विजयी रहा। खेल एवं अन्य गतिविधियों में स्थान बनाने वाले बच्चों व टीमों को ट्रॉफी, सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। एक तरफ विजयी बच्चों का उत्साह दूसरी तरफ गीत, संगीत, नृत्य से डी० पी० एस० प्रयागराज का प्रांगण खुशियों से सराबोर हो गया। धन्यवाद ज्ञापन के बाद अंत में राष्ट्रगान के साथ समारोह का समापन किया गया।

हाईकोर्ट समाचार

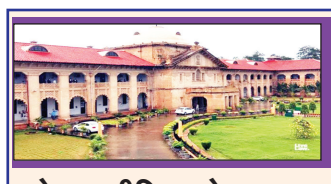

सोशल मीडिया पोस्ट पर हाईकोर्ट अपनी अंतर्निहित शक्तियों का नहीं कर सकती प्रयोग

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने आरोपी पति की ओर से दहेज हत्या के मामले की निष्पक्ष विवेचना की मांग वाली याचिका को यह कहते हुए खारिज कर दिया कि सोशल मीडिया की पोस्ट पर विचार के लिए अदालत अपनी अंतर्निहित शक्तियों का प्रयोग नहीं कर सकती। यह फैसला न्यायमूर्ति वीके बिरला और न्यायमूर्ति विनोद दिवाकर की खंडपीठ ने मैनपुरी निवासी अभय गुप्ता की ओर से पत्नी की मौत के मामले में दर्ज दहेज हत्या की एफआईआर पर निष्पक्ष विवेचना की मांग वाली याचिका पर सुनवाई करते हुए सुनाया।मामला मैनपुरी के थाना कुरावली का है। याची की शादी हर्षिता के साथ 1 दिसंबर 2020 को हुई थीं। याची की पत्नी की लाश फंदे पर लटकी मिली थी। इसके बाद हर्षिता के भाई ने हर्षिता के पति अभय गुप्ता, ससुर सतीश चंद्र, सास मंजू, जेठ गौरव, जेठानी स्तुति निधि, देवर अजय , ननद और नंदोई के खिलाफ दहेज हत्या के आरोप में एफआईआर दर्ज कराई थी। विवेचना के बाद पुलिस ने सभी के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। पुलिस द्वारा दाखिल आरोप पत्र से क्षुब्द पति ने मामले की निष्पक्ष विवेचना की मांग को लेकर याचिका दाखिल की थी।

आरोपी पति की दलील : याची की दलील थी कि पत्नी की मौत दहेज उत्पीड़न के कारण नहीं हुई है, बल्कि उसकी पत्नी ने अपने भाई की प्रेमिका की ओर से उसके संबंध में सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक और अपमानजनक पोस्ट वायरल किया गया था, जिसे लेकर वह सदमे में थी। इस कारण उसने आत्महत्या की है। इस बारे में उसकी पत्नी ने भाई की प्रेमिका के खिलाफ 19.10.2022 को शिकायती पत्र भी पुलिस को दिया था। उसने यह भी कहा कि पत्नी की मौत की खबर उसने खुद हर्षिता के मायके और महिला हेल्प लाइन को दी थी। विवेचनाधिकारी ने इन तथ्यों और सोशल मीडिया से संबंधित सुबूतों का न तो संकलन किया और न ही उसे केस डायरी का हिस्सा बनाया। यह पुलिस रेगुलेशन के अध्याय 11 पैरा 107 का उल्लंघन है।

ठोस सुबूतों के बिना अंतर्निहित शक्तियों का प्रयोग नहीं : मामले की सुनवाई करते हुए कोर्ट ने कहा कि यह सही है निष्पक्ष विवेचना पक्षकारों का मूल अधिकार है और इसके लिए अदालत अपनी अंतर्निहित शक्तियों का प्रयोग कर सकती है, लेकिन उसके लिए पक्षकार को अदालत के समक्ष जांच एजेंसी के खिलाफ ठोस सबूत पेश करना होगा। कोर्ट ने कहा वर्तमान मामला एक नौजवान युवती को ससुराल में संदिग्धावस्था में मौत का है। आरोपी पति की ओर से मृतक के भाई की उस प्रेमिका की सोशल मीडिया पोस्ट के आधार पर आत्महत्या का दावा किया जा रहा है, जिसका परिवार से कोई संबंध ही नहीं है। इसके अलावा सोशल मीडिया पोस्ट पर विचार करने के लिए हाईकोर्ट अपनी अंतर्निहित शक्तियों का प्रयोग नहीं कर सकती। कोर्ट ने याचिका खारिज कर दी।

स्वच्छ सारथी क्लब प्रयागराज के मलिन बस्ती के बच्चों ने दिया स्वच्छता का संदेश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज नगर निगम के तत्वाधान में शहर के 100 विद्यालयों और संगठनों में स्वच्छ सारथी क्लब बनाए गए हैं जिनमें से एक है मलिन बस्ती कीडगंज में संचालित विशाल संकल्प संस्था, जहां आज नगर निगम प्रयागराज की ओर से स्वच्छ सारथी क्लब के सदस्यों की एक बैठक रखी गई। बैठक रखने के लिए एक पार्क को चुना गया जहां पर मलिन बस्ती के बच्चे रोजाना शाम को अपनी पठन-पाठन करते हैं। स्वच्छ सारथी क्लब के सदस्यों ने पहले इस पार्क में सफाई अभियान चलाया और जो भी गंदगी थी उसे नगर निगम के साथ मिलकर साफ किया और फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय और आसपास के युवा साथियों के साथ मिलकर इस पार्क में स्वच्छता संबंधी स्लोगन और चित्र बनाएं। चित्र बनाने के बाद स्वच्छ साथी क्लब के सदस्यों ने आसपास की आम जनमानस को भी स्वच्छता में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया। आपको बता दें मलिन बस्ती में जहां स्वच्छता बेहद जरूरी होती है यह बच्चे इस पार्क का सौंदरीकरण करके स्वच्छता का एक बड़ा संदेश दिया है।कार्यक्रम की शुरूआत नगर निगम प्रयागराज के आई.ई.सी. प्रमुख कृष्ण कुमार मौर्य ने स्वच्छ सारथी क्लब समिति के सदस्यों को बड़े ही मनोरंजक ढंग से दो कूड़ेदानों हरे और नीले की कहानी सुनाई और स्वच्छता की अलख जगाई।नगर निगम प्रयागराज की ओर से सहायक नगर आयुक्त दीपशिखा पांडे ने स्वच्छ सारथी क्लब के सदस्यों को बधाई दिया और उन्हें हर संभव मदद करने की आश्वासन भी दिया।इस दौरान जोनल अधिकारी नगर निगम संजय ममगाई ने मलिन बस्ती के बच्चों के पढ़ने के लिए एवं सर्दी से बचने और क्लब संचालित करने हेतु टीन सेट एवं शौचालय निर्माण के लिए नगर निगम की ओर से हर संभव प्रयास करने के लिए कहा। इस दौरान सिविल डिफेंस के रौनक जी ने नगर निगम प्रयागराज और विशाल संकल्प संस्थान के इस कार्य को सराहना करते हुए कहा कि बच्चे स्वच्छता का संदेश देंगे तो यह वास्तव में एक बड़ा कार्य होगा और हमारा शहर और जल्दी स्वच्छ और स्वस्थ होगा। असम से आए मेजर कैलाश पति बनर्जी ने नगर निगम प्रयागराज के प्रयास की सराहना की। सृष्टि वेस्ट मैनेजमेंट सर्विस की ओर से विजय बहादुर सिंह ने बच्चों को कूड़े को अलग-अलग करने के फायदे के बारे में विस्तार पूर्वक बताया।विशाल संकल्प संस्थान की निर्देशक डॉ अंजलि केसरवानी में स्वच्छ सारथी क्लब के आगामी कार्यक्रमों के बारे में अतिथियों को बताया और कहां कि हम नगर निगम प्रयागराज के साथ मिलकर आने वाले कुंभ में स्वच्छता का एक बड़ा संदेश देंगे साथी उन्होंने आए हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन भी किया। इस दौरान नगर निगम प्रयागराज की ओर से अशोक पटेल, मनोज, विजय, अभिलाष इत्यादि मौजूद रहे।

जूनियर राष्ट्रीय हैंडबॉल बालिका प्रतियोगिता नैनी की दो खिलाड़ियों का चयन

नैनी। नैनी 16 से 20 दिसंबर तक आयोजित 46 व जूनियर बालिका हैंडबॉल प्रतियोगिता वाराणसी उत्तर प्रदेश में प्रतिभा करने के लिए जिला हैंडबॉल संघ प्रयागराज नैनी की दो खिलाड़ी अंशिका सिंह व चंदा पांडे का चयन उत्तर प्रदेश जूनियर बालिका हैंडबॉल टीम में हुआ है अंशिका सिंह व चंदा पांडे इससे पूर्व कई राष्ट्रीय प्रतियोगिता में प्रतिभा कर चुकी है उक्त विषय में सूचना उत्तर प्रदेश हैंडबॉल संघ के महासचिव आनंदेश्वर पांडे ने जिला हैंडबॉल संघ के सचिव कौशल कुमार दीक्षित को दिया अंशिका सिंह व चंदा पांडे के चयन पर क्षेत्रीय क्रीड़ा अधिकारी श्रीमती विमला सिंह व उप क्रीडा अधिकारी देवी प्रसाद क्षेत्रीय खेल कार्यालय मदन मोहन मालवीय स्टेडियम प्रयागराज व प्रयागराज हैंडबॉल संघ के पदाधिकारी बी एन दीक्षित योगराज मिश्रा दिनेश कुमार मिश्रा गोविंद कुमार निषाद खिलाड़ी सचिन रावत अनुपम सिंह सोनम सिंह सृष्टि अगरवाल तेजस्विनी सिंह नेहा पांडे अतुल सिंह मयंक दीक्षित ने हार्दिक बधाई दी।

रोजगार मेले में 121 अभ्यर्थियों का हुआ चयन

प्रयागराज। क्षेत्रीय सेवायोजन कार्यालय, प्रयागराज परिसर में शनिवार को एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में निजी क्षेत्र की विभिन्न कम्पनियों द्वारा कुल 121 अभ्यर्थियों का चयन किया गया। रोजगार मेले में कुल 261 बेरोजगार अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया। सी0 के0 सिंह, जिला सेवायोजन अधिकारी प्रयागराज द्वारा बेरोजगार नवयुवकों के उज्जवल भविष्य की कामना की गयी साथ ही उन्होने यह भी कहा कि जिन अभ्यर्थियो का चयन न हो पाया हो वे आगामी दिनांक-18.12.2023 को रोजगार सृजन केन्द्र प्रयागराज निकट बालसन चैराहा में प्रतिभाग कर सकते है। इस कार्यक्रम में कार्यालय के मेला प्रभारी अधिकारी प्रशांत तथा मेला प्रभारी मारूफ अहमद व कार्यालय के अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे। मेले में कैरियर काउंसलिग का कार्य विश्वमोहन द्विवेदी, अनु0 द्वारा किया गया।

माघ मेला में पैरासेलिंग, हॉट एयर बैलून , वॉटर स्पोर्ट्स के लिए मुंबई की कंपनी से करार

प्रयागराज। महाकुंभ के रिहर्सल के तौर पर माघ मेला बसाने की परिकल्पना को अंतिम रूप दे दिया गया है। इस सांस्कृतिक समागम में पहली बार संगम की लहरों पर संत-भक्त वॉटर स्पोर्ट्स का लुत्फ उठाएंगे। इसके लिए मुंबई की लिटमस प्राइवेट लिमिटेड से करार हो गया है। कैमराइन बोट की पहली खेप यहां पहुंच गई है। वॉटर स्पोर्ट्स का स्टेशन त्रिवेणी दर्शन के पास बनकर तैयार हो गया है। माघ मेला में वॉटर स्पोर्ट्स जनवरी के प्रथम सप्ताह में शुरू होने की उम्मीद हैहॉट एयर बैलूनिंग के लिए अरैल में टेंट सिटी के पास जगह देखी गई है। पर्यटन विभाग की ओर से इस योजना को अमली जामा पहना दिया गया है। नेवी के सेवानिवृत्त अफसर कमांडर निगम की देखरेख में वॉटर स्पोर्ट्स की गतिविधियां होंगी। टिकट का निर्धारण जल्द ही किया जाएगा।

दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल 62 रनो से बनी विजेता

सिरसा। मेजा क्षेत्र में शनिवार को प्रयागराज जनपद के मेजा तहसील के गोसौरा कला चंपारण एस्टेट में स्थित दुर्गावती इस्टरनेशनल स्कूल में चल रहे टूनार्मेंट के आखिरी दिन दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल के टीचिंग स्टॉफ और प्रयागराज शहर के प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान ₹सौरभ जैन इंग्लिश क्लासेज₹ और मेरी लूकस स्कूल की टीम के बीच हुआ जिसमे दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल की टीम 62 रन से विजयी हुई। जिसमे दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल के चेयरमैन सुशील मिश्र ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए अर्धशतक पूरा किया और टीम ने 147 रन का मजबूत स्कोर बनाया। जवाब में सौरभ जैन इंग्लिश क्लासेज की टीम केवल 85 रन पर ही ढेर हो गई। जिसमे मैन आफ द मैच सत्यम सिंह राजपूत, बेस्ट बॉलर रहे जय भारत, बेस्ट बल्लेबाज कार्तिकेय रहे। इस अवसर पर क्षेत्र के सैकड़ों लोग तथा विद्यालय के हजारों छात्र उपस्थित होकर खिलाडियों का उत्साह बढ़ाया साथ ही इस क्रिकेट मैच का सजीव प्रसारण किया गया। स्कूल की प्रबंधक श्रीमती डॉक्टर स्वतंत्र मिश्र ने विजेता टीम को पुरस्कृत किया तथा उत्साह बढ़ाया व खेल के महत्व को समझाते हुए यह आश्वासन दिया कि भविष्य में इसी प्रकार के आयोजन होते रहेंगे।

पं. मदन मोहन मालवीय स्मृति में साप्ताहिक उत्सव आज

प्रयागराज। अखिल भारतीय मालवीय सभा, प्रयाग के तत्वावधान में रविवार 17 दिसम्बर, 2023 को सायंकाल 3 बजे से सायंकाल 5 बजे तक महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी स्मृति में साप्ताहिक उत्सव प्रतियोगिता सरस्वती शिशु निकेतन, 23, कटघर, (गौतम सिनेमा हॉल के सामने प्रयागराज में मनाया जाएगा।

पासी समाज विवाह कल्याण के तत्वावधान में सामूहिक विवाह आज

झूंसी। पासी समाज विवाह कल्याण समिति के द्वारा रविवार को सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जिसमें 20 जोड़े एक दूजे के होंगे। समिति की ओर से वर वधु को उपहार भेंट किया जाएगा। जानकारी देते हुए समिति के अध्यक्ष विनय प्रकाश ने बताया कि विवाह श्यामलाल सामाजिक सेवा संस्थान गेस्ट हाउस गंगा दीप कॉलोनी छतनाग नैका झूंसी में आयोजित होगा।

भूकम्प से सुरक्षा एवं बचाव, सीपीआर एवं प्राथमिक उपचार के सम्बन्ध में मॉक एक्सरसाइज का किया गया आयोजन

प्रयागराज। 11वीं वाहिनी, राष्ट्रीय आपदा मोचक बल, गृह मंत्रालय भारत सरकार, वाराणसी एवं जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, प्रयागराज के संयुक्त तत्वधान में भूकम्प से सुरक्षा एवं बचाव, सी0पी0आर0 एवं प्राथमिक उपचार के सम्बन्ध में मॉक एक्सरसाइज का आयोजन किया गया। उक्त मॉक एक्सरसाइज में जगदम्बा सिंह, एडीएम (वि0/रा0), प्रयागराज की अध्यक्षता में अनिल कुमार, दलनायक, 11वीं वाहिनी राष्ट्रीय आपदा मोचक बल, वाराणसी एवं उनकी टीम, डॉ0 राशीद अली, मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय एवं उनकी टीम, विवेकानंद तिवारी, उप निरीक्षक, उ0प्र0 राज्य आपदा मोचक बल, के0के0 चौरसिया, अग्निशमन अधिकारी, प्रयागराज एवं उनकी टीम, अन्तिम कुमार श्रीवास्तव प्रधान सहायक आपदा, दीपक चौधरी आपदा विशेषज्ञ प्रयागराज, नरेन्द्र शर्मा उप नियन्त्रक नागरिक सुरक्षा, राकेश तिवारी ए0डी0सी0 नागरिक सुरक्षा एवं उनकी टीम आदि अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मोदी सरकार में हुआ ऐतिहासिक विकास कार्यः विनोद सोनकर

परसीपुर व पूरनेमउ में सांसद ने की जनसभा

अखंड भारत संदेश

परसीपुर में आयोजित जनसभा को सम्बोधित करते सांसद विनोद सोनकर।

कुण्डा, प्रतापगढ़। मोदी सरकार में ऐतिहासिक विकास कार्य हुआ है। समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक सरकार की योजनाएं पहुंचे। इसके लिए प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने मोदी की गारन्टी गाड़ी गांव गांव में पहुंच कर योजनाओं की जानकारी एवं योजनाओं से छूटे व्यक्ति का नाम अंकित किया जा रहा है।

देश के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी पहले ऐसे प्रधानमन्त्री है जिन्होंने सरकार की योजनाएं आम जनमानस तक पहुंच रही है या नही इसकी जानकारी करने के लिए गांव में ही विकसित भारत संकल्प यात्रा में मोदी की गारन्टी गाड़ी गांव गांव पहुंच रही है। उक्त बाते शनिवार को कौशांबी सांसद, संसदीय आचार समिति लोकसभा के चेयरमैन विनोद सोनकर विकास खण्ड कुण्डा के परसीपुर एवं पुरनेमउ में उपस्थित जनसमूह के बीच कहीं। जिन लोगों को सरकार की योजनाएं मिल गई उन्हें बधाई, जिन्हें नहीं मिली उन्हें योजनाओं से लाभान्वित कराने के लिये नाम अंकित किया जा रहा है। सरकार सभी पात्रों को योजनाओं का लाभ देना चाहती है। प्रदेश की योगी सरकार ने गुंडे माफियाओं को सही जगह पहुंचाया। कुण्डा बाबागंज में सड़कों का जाल विछाया जा रहा है। 2014 के पहले यहां की सड़के कैसी थी यह किसी से छिपा नहीं है। कुण्डा का रोडवेज बस अड्डा अब बन कर तैयार हो गया है। रेलवे-स्टेशन कुण्डा की 10 करोड़ से तस्वीर बदल गई। मवई रेलवे फाटक में ओवरब्रिज का कार्य प्रारम्भ हो गया। अब कुण्डा बाबागंज में विकास का रथ रुकने वाला नहीं है। कार्यक्रम में पूर्व प्रत्याशी सिंधुजा मिश्रा, मध्य प्रदेश महिला मोर्चा की प्रदेश महामन्त्री चन्द्र प्रभा तिवारी, जिला उपाध्यक्ष राजन मिश्र, सांसद मीडिया प्रभारी भूपेन्द्र पाण्डेय, अजय सोनकर, हीरागंज बाजार नगर पंचायत चेयरमैन प्रतिनिधि उदय शंकर पाण्डेय, प्रथमेश मिश्र सेनानी, महिला मोर्चा की जिलाध्यक्ष रुचि केसरवानी, सरोज त्रिपाठी, डा0 सुमन साहू, रूपा गौतम, नायब तहसीलदार, खंड विकास अधिकारी कुण्डा, सुमन गौतम, अंकित पाण्डेय, चुन्ना तिवारी सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

उपजिलाधिकारी द्वारा ही हो शस्त्र लाइसेंस का नवीनीकरण

अखंड भारत संदेश

शस्त्र अनुभाग को दिया गया अधिकार, पुनर्विचार पर अधिवक्ता ने डीएम से की मांग

लालगंज, प्रतापगढ़। शस्त्र लाइसेंस के नवीनीकरण का अधिकार पुनः पूर्व की भांति सभी तहसील एसडीएम को दिए जाने को लेकर संयुक्त अधिवक्ता संघ के निवर्तमान वरिष्ठ उपाध्यक्ष ने डीएम को प्रार्थना देकर अनुरोध किया है। डीएम ने शस्त्र अनुभाग के अधिकारी शस्त्र को उक्त जिम्मेदारी सौंपी है, जिससे शस्त्र धारकों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

स्थानीय तहसील के संयुक्त अधिवक्ता संघ के निवर्तमान उपाध्यक्ष शहजाद अंसारी के मुताबिक शस्त्र लाइसेंस का नवीनीकरण का अधिकार उपजिलाधिकारी से शस्त्र अनुभाग के अधिकारी शस्त्र को डीएम द्वारा दिया गया है। डीएम के इस निर्णय से शस्त्र लाइसेंस के नवीनीकरण में शस्त्र धारकों के सामने समस्या खड़ी हो गई है। इससे पूर्व सभी तहसीलो में ही एसडीएम द्वारा नवीनीकरण की प्रक्रिया होती रही है।शस्त्र धारकों को सुविधा थी, उन्हे लंबी यात्रा के साथ ही कम भीड़ का भी सामना करना पड़ता था।वहीं उपजिलाधिकारियों द्वारा सभी लोग अपनी तहसीलों में सुगमता से नवीनीकरण की प्रक्रिया कर लेते थे। डीएम के नए आदेश से अब एक ही स्थान पर जिले के सभी शस्त्रों का नवीनीकरण होना है।अब इस दशा में सभी तहसीलों के शास्त्र धारको को कलेक्ट्रेट स्थित शस्त्र अनुभाग में नवीनीकरण की प्रक्रिया को करनी पड़ेगी। इस दशा में अधिक भीड़ का सामना करने के साथ ही दूर-दराज के शस्त्र धारकों के सामने समस्या पैदा हो गई है। श्री अंसारी ने प्रार्थना पत्र देकर उक्त समस्या के निदान हेतु डीएम द्वारा पुनर्विचार करने का अनुरोध किया है।

विद्युत उपकेंद्र की लापरवाही से संविदा लाइनमैन की मौत

शव का अन्तिम संस्कार करने से परिजनों ने किया इंकार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के दिलीपपुर थाना क्षेत्र सोनाही विधुत उपकेंद्र पर तैनात संविदा लाइनमैन धर्मेंद्र प्रजापति की लाइन ठीक करते समय मौत हो गई। बता दें कि सोनाही विद्युत उपकेंद्र पर तैनात संविदा लाइनमैन धर्मेंद्र प्रजापति (26) वर्ष पुत्र रामदीन प्रजापति थाना कधंई कांपा हरी बतौर संविदा लाइनमैन सोनाही विद्युत उपकेंद्र पर 3 वर्षों से तैनात था। शटडाउन लेने के बाद भी उपकेंद्र पर मौजूद विजय बहादुर गौतम करुणेश शर्मा द्वारा आपूर्ति बहाल कर दी गई जिसमें धर्मेंद्र प्रजापति की दर्दनाक मौत हो गई।

मौत के बाद परिजनों में कोहराम मच गया शव पोस्टमार्टम होने के बाद परिवार के लोग शव लेकर गांव चले आए और दाह संस्कार करने से मना कर दिया। उपजिलाधिकारी पट्टी को दिए गए अपने मांग पत्र में 25 लाख रुपए परिवार के एक सदस्य को नौकरी दिए जाने की मांग की है। मृतक धर्मेंद्र प्रजापति के पिता रामदीन प्रजापति ने मांग की है कि तहरीर में दिए गए नाम में से एक व्यक्ति को आरोपी बनाया गया है जबकि विद्युत उपकेंद्र के अवर अभियंता रणविजय सिंह की जानकारी में धर्मेंद्र प्रजापति 3 वर्षों से कार्य कर रहा था। घटना के बाद बिजली विभाग अपना पल्ला झाड़ लिया बिजली विभाग के एसडीओ शैलेंद्र सिंह ने बताया था कि धर्मेंद्र प्रजापति विद्युत उपकेंद्र सोनाही में किसी भी पद पर कार्यरत नहीं है।

अब सवाल यह उठता है कि रणविजय सिंह और अभियंता की जानकारी में 3 वर्षों से कार्य कर रहा धर्मेंद्र प्रजापति का रजिस्टर नाम अंकित क्यों नहीं किया गया जबकि वहीं अवर अभियंता के पैतृक गांव खूझी कलां के एक दर्जन से अधिक अनुभवहीन लोगों से बिजली विभाग का कार्य कराया जाता है। धर्मेंद्र प्रजापति की तरह ही पिछले कुछ महीने पहले मुजफ्फर अली नामक युवक भी दुर्घटना का शिकार हो गया था। धर्मेंद्र प्रजापति के परिजन शव घर पर रखें बैठे हुए हैं अभी तक जिले का कोई प्रशासनिक अधिकारी एसडीएम तहसीलदार बिजली विभाग का कोई अधिकारी गांव नहीं पहुंचा है और ना ही किसी प्रकार का कोई आश्वासन दिया गया। परिजनों की मांग है कि आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई 25 लाख रुपए आर्थिक सहायता एक सदस्य को नौकरी देने के बाद ही धर्मेंद्र प्रजापति के शव संस्कार किया जाएगा।

विधायक मोना के हाथों करोड़ों की विकास परियोजनाओं की हुई सौगात, खिले ग्रामीणों के चेहरे

अखंड भारत संदेश

जनसभा को सम्बोधित करतीं विधायक मोना।

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधान मण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने शनिवार को स्वयं तथा राज्य सभा सदस्य प्रमोद तिवारी की ओर से क्षेत्रवासियों को सड़क व पुल तथा पेयजल योजना से जुड़ी करोड़ों की सौगात सौंपी। विधायक आराधना मिश्रा के हाथों महत्वपूर्ण विकास परियोजनाओं की सौगात पाकर जगह जगह ग्रामीणों के चेहरे खिल उठे भी देखे गये।

विधायक मोना ने पूरे इच्छाराम गांव में सगरा रजबहा के ग्रामीण मार्ग पर तेरह लाख छप्पन हजार रुपए की लागत से पुल के निर्माण कार्य तथा कटरा संग्राम सिंह, रामपुर रजबहा के ग्रामीण मार्ग पर भी नौ लाख तीस हजार की लागत से पुल निर्माण की सौगात सौंपी। पूरे इच्छाराम गांव में विधायक आराधना मिश्रा मोना द्वारा एक करोड़ सतहत्तर लाख रुपए की लागत से पेयजल योजना के तहत पीने के पानी की टंकी तथा कमरा में डेढ़ सौ मीटर सीसी रोड की भी सौगात सौंपी। वहीं विधायक मोना ने खण्डवा के रामपुर रजबहा पर पूरे भिच्छुकराम में पैदल मार्ग से जुडे पांच लाख चालीस हजार के पुल के निर्माण कार्य तथा लोक निर्माण विभाग द्वारा पूरे भिच्छुकराम तक तेरह लाख की लागत से बनी सड़क को जनता को समर्पित किया। कटरा संग्राम सिंह ने आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए विधायक आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि रामपुर खास में सुदृढ़ विकास की निरंतरता इसी तेजी के साथ जारी दिखेगी।

उन्होनें कहा कि क्षेत्र में महत्वपूर्ण परियोजनाओं को वह तथा राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी इसलिए गतिशील बनाए हुए हैं कि यह आदर्श क्षेत्र विकास की आत्मनिर्भरता की भी चमक लिये दिखे। उन्होंने कहा कि जनता के अधिकार तथा विकास और मान सम्मान रामपुर खास के लिए उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। जनसभा का संचालन राकेश चतुर्वेदी ने किया। इसी क्रम में विधायक आराधना मिश्रा मोना अनेहरा गांव पहुंचकर पूर्व प्रधान व कई शिक्षण संस्थानों की संस्थापक रहीं राजकली शुक्ला के निधन पर परिजनों को ढ़ाढंस बंधाया। वहीं क्षेत्रीय दौरे पर पहुंची विधायक आराधना मिश्रा मोना का जिले की सीमा अगई में पहुंचने पर कार्यकताओं व ग्रामीणों द्वारा जोरदार स्वागत हुआ दिखा। कटरा संग्राम सिंह, पूरे इच्छाराम, पूरे भिच्छुकराम तथा जलेसरगंज आदि स्थानों पर भी विधायक आराधना मिश्रा मोना के स्वागत में ग्रामीणों तथा व्यापारियों व युवाओं तथा महिलाओं को उत्साहित देखा गया। इस मौके पर प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, ब्लाक प्रमुख इं. अमित सिंह पंकज, भुवनेश्वर शुक्ल, कालूराम यादव, रमाशंकर शुक्ल, बलराम शुक्ल, रज्जन शुक्ल, पप्पू तिवारी, पूर्व प्रमुख ददन सिंह, मोनू पाण्डेय, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, अभिनव शुक्ला, शैलेन्द्र मिश्रा, रोहित शुक्ला, आशीष तिवारी, अशोक सिंह, रज्जन उपाध्याय, महन्थ द्विवेदी आदि रहे।

जिले के चारों तरफ को नेशनल हाईवे से जोड़ने का हो रहा प्रयासः संगम लाल

प्रतापगढ़ बाईपास विस्तारीकरण योजना का सांसद ने किया भूमिपूजन

अखंड भारत संदेश

बाईपास विस्तारीकरण योजना का भूमिपूजन करते सांसद संगम लाल गुप्ता।

प्रतापगढ़। सांसद प्रतापगढ़ एवं राष्ट्रीय महामंत्री ओबीसी संगम लाल गुप्ता ने प्रतापगढ़ बाई पास विस्तारीकरण योजना के भूमिपूजन के अवसर पर बोलते हुये कहा कि जनपद को चारों तरफ से नेशनल हाईवे से जोड़ने का प्रयास आज फलीभूत हो रहा है।

उन्होंने कहा कि बदलते प्रतापगढ़ की परिकल्पना लेकर हमने अपने कार्यकाल की शुरूआत की थी और उसी दिशा में प्रतापगढ़ के 14 किमी बाई पास का निर्माण अंतिम दौर में है और उसी कड़ी में उसके 6 किमी के विस्तारीकरण कार्य का भूमिपूजन कर विधिवत कार्य आरम्भ करने का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि बाई पास के साथ साथ भुपियामऊ में फ्लाईओवर के अलावा एक रेलवे अंडरब्रिज का भी निर्माण अतिशीघ्र आरम्भ कराकर स्थानीय नागरिकों को आवागमन में राहत देने का प्रयास फलीभूत होने जा रहा है। सांसद ने कहा कि लालगंज से रानीगंज के स्वीकृत 52 किमी के बाई पास की प्रक्रिया भी युद्ध स्तर पर जारी है और निकट भविष्य में वह भी प्रगति पर दिखने लगेगा,इसके अलावा भुपियामऊ से गोंडें के 11.3 किमी डिवाइडर सहित सीसी रोड का निर्माण कार्य की प्रक्रिया भी आरम्भ हो चुकी है जो प्रतापगढ़ के बड़े बदलाव का आधार बनेगी, उसी सड़क में कुसमी ओवरब्रिज, बेल्हा देवी का नया पुल भी सम्मिलित होकर बेल्हा के विकास को एक नया आयाम देगा। इस अवसर पर बोलते हुए सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य ने कहा कि जनप्रतिनिधियों के बेहतर समन्वय से बेल्हा के विकास की योजनाएं फलीभूत होकर मोदी योगी की परिकल्पना को साकार करने का कार्य हो रहा है। विधायक विश्वनाथगंज जीतलाल पटेल ने बाई पास विस्तारीकरण के आरम्भ होने कार्य को ग्रामीणों के लिये वरदान साबित होंना बताते हुये कहा कि इस परियोजना के पूर्ण होते ही आवागमन का बेहतर विकल्प मिलना आरम्भ हो जायेगा। इस अवसर पर जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि राम सिंह, दिनेश सिंह, गिरधारी सिंह, सुनील यादव प्रधान, राजेश सिंह, विद्यासागर शुक्ल, नवीन सिंह, रविन्द्र पटेल, सूर्य प्रकाश पटेल, अभिषेक पाण्डेय, लल्लन यादव आदि उपस्थित रहे। समारोह का संचालन विवेक उपाध्याय द्वारा किया गया।

रिश्तेदारी आए युवक ने नाबालिग के साथ जबरन किया दुराचार

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। बीती रात घ्र से लघुशंका के लिए बाहर निकली नाबालिक बालिका के साथ रिश्तेदारी आए पड़ोसी गांव के एक युवक ने उसका मुंह दबाकर जबरन शारीरिक संबंध बनाया और उसे घर के समीप छोड़कर भाग निकला। घर से गायब बालिका की खबर मिलते ही रिश्तेदारी गए। परिजन रात में ही वापस आकर उसकी तलाश करने लगे तो पीड़िता आरोपी युवक के रिश्तेदार के घर से रोते बिलखते आ रही थी। घटना से आहत बालिका के पिता की शिकायत पर जेठवारा पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया और बालिका को चिकित्सीय परीक्षण के लिए अस्पताल लेकर गए। घटना के संदर्भ में सी.ओ.सदर अमरनाथ गुप्ता ने बताया कि पीड़िता की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ अभियोग पंजीकृत किया गया है। पीड़िता को मेडिकल परीक्षण के लिए भेजा गया। आरोपी की तलाश में पुलिस टीम गठित की गई है जल्द ही आरोपी पुलिस की गिरफ्त में होगा।

सिर पर कलश लिये महिलाओं ने निकाली शहर में भव्य यात्रा

16 सितम्बर से प्रारंभ भागवत कथा के पूर्व स्नेह होटल से निकली कलश यात्रा

अखंड भारत संदेश

सिर पर कलश लेकर कलश यात्रा निकालती महिलाएं।

प्रतापगढ़। शहर के प्रमुख व्यवसायी श्याम बाबू खण्डेलवाल द्वारा 16 सितम्बर से प्रारंभ भागवत कथा के आयोजन के पहले दिन स्नेह होटल से लेकर किशोरी सदन तक महिलाओं द्वारा भव्य कलश यात्रा निकाली गई जिसमें लाल साड़ी पहनी महिलाएं अपने सिर पर कलश लेकर आगे-आगे चल रही थीं।

पुरुष भी पीला वस्त्र धारण कर कलश यात्रा में शामिल हुए थे। यह कलश यात्रा स्नेह होटल से निकलकर चैक घंटाघर होते हुए किशोरी सदन पहुंची। बता दें कि 16 सितम्बर से 24 सितम्बर तक किशोरी सदन में अपरान्ह ढाई बजे से भागवत कथा श्रीराम कृष्णाचार्य जी (ज्रामानुजदास) के मुखारबिन्दु से होगी। आज की कलश यात्रा में श्याम लाल खण्डेलवाल, विष्णु खण्डेलवाल, सुरेश खण्डेलवाल, प्रहलाद खण्डेलवाल, सुनीता खण्डेलवाल, हिमांशु खण्डेलवाल, विक्रांत खण्डेलवाल, विजय श्रीवास्तव, संजय झालानी, राघव खण्डेलवाल आदि रहे।

उद्योग व्यापार मण्डल ने व्यापारियों के निधन पर जताया शोक

अखंड भारत संदेश

प्रतिष्ठान पर व्यापारियों के निधन पर शोक जताते व्यापार मण्डल के पदाधिकारी।

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल प्रतापगढ़ की एक शोकाकुल बैठक जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी की अध्यक्षता व जिला संरक्षक प्रकाश चंद्र खंडेलवाल जी के संरक्षण में जिला संगठन मंत्री नारायण खंडेलवाल के प्रतिष्ठान पर संपन्न हुई। बैठक का संचालन जिला महामंत्री संजय सोनी ने किया।

शोकाकुल बैठक में विगत दिनों जनपद के सम्मानित व प्रतिष्ठित दिवंगत स्वर्गीय रामकृपाल खंडेलवाल (व्यापार मंडल जिला संरक्षक प्रकाश चंद्र खंडेलवाल के बड़े भाई), स्वर्गीय संतोष उमरवैश्य (आर.के. इलेक्ट्रॉनिक्स श्री राजेश कुमार के मझले भाई), स्वर्गीय शिव शंकर सोनी (मोहनलाल बजाजा रोड के सुपुत्र), स्वर्गीय रवि गुप्ता (भोला पान भंडार के सुपुत्र), स्वर्गीय राकेश जायसवाल (डेरवा व्यापार मंडल महामंत्री रमेश जायसवाल के भाई) व्यवसाईयों व उनके परिजनों, स्वर्गीय ऊषा देवी (छेदीलाल बजाज रोड की पत्नी) और व्यवसाईयों से संबंधित दिवंगत विभूति स्वर्गीय द्वारिकानाथ मल्होत्रा (पूर्व मैनेजर स्टेट बैंक, बाबागंज कालोनी, प्रतापगढ़) को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस दौरान जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुमार केसरवानी ने दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए स्व.रामकृपाल खंडेलवाल को एक कर्मशील, व्यवहारशील, वरिष्ठ और सरल व्यवसाई बताया। अंत में सभी ने खड़े होकर दिवंगत आत्माओं के शांति हेतु दो मिनट का मौन धारण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। उपरोक्त शोकाकुल बैठक में मुख्य रूप से सरदार कुलविंदर सिंह, तुषार खंडेलवाल, शकील अख्तर, मनोज खंडेलवाल, राहुल केसरवानी, जयंत कुमार गुप्ता, जगदीश मौर्य (जंबो), कदीर अहमद, राहुल श्याम गुप्ता, दीपक केसरवानी (दीपू), राजेश कुमार, अमित केसरवानी, सरदार महेंद्र सिंह, सरदार वसिंदर सिंह, शैलेंद्र कुमार गुप्ता आदि अन्य व्यवसाई उपस्थित रहे।

समाधान दिवस में 77 मामलों में मौके पर 5 का हुआ निस्तारण

पट्टी, प्रतापगढ़। शनिवार को समाधान दिवस पर पट्टी में कुल 77 मामले आए जिसमे मौके पर कुल 5 मामलो का निस्तारण हुआ। पट्टी में समाधान दिवस के अवसर पर कुल 77 मामले आए जिसमें राजस्व के 33 पुलिस के 19 विकास के 12 समाज के दो शिक्षा के एक तथा अन्य के 10 मामले आए जिसमें राजस्व के कुल पांच मामलों का मौके पर निस्तारण किया गया।

ब्रहमौली अमृत सरोवर का भुगतान न होने से बना शो पीस

माह दिसंबर 23 मे तैयार होना था

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। परियावां, प्रतापगढ़। केंद्र व प्रदेश सरकार की महत्वकांक्षी योजना अमृत सरोवर को हाई फाई करने के लिए लाखो रुपये खर्च कर रही है तो दूसरी तरफ अधिकारियो की उदासीनता के चलते सरकार की सारी मंशा पर पानी फिरता नजर आ रहा है।

मामला विकास क्षेत्र कालाकांकर के ब्रहमौली ग्राम पंचायत का है जहां सरकार की मंशा पर शत प्रतिशत खरा उतरने के लिए ग्राम प्रधान ने ड्रीम प्रोजेक्ट अमृत सरोवर को सरकार की मंशा के अनुरूप निर्माण कार्य शुरू किया। तत्कालीन सीडीओ ईशा प्रिया ने निरीक्षण के दौरान ग्राम प्रधान के अमृत सरोवर ड्रीम प्रोजेक्ट की सराहना किया और आश्वासन दिया कि अमृत सरोवर के निर्माण कार्य मे पैसे की कोई कमी नही रहेगी, उसी बीच सीडीओ का स्थानांतरण हो गया। प्रयागराज लखनऊ नेशनल हाइवे से जुड़ा होने के कारण छोटे बड़े वाहनों की नजर अमृत सरोवर की तरफ देखने को विवश कर देती है, जिसका स्टीमेंट ग्राम पंचायत के जेई द्वारा पास न करने पर भुगतान नही हो पा रहा है भुगतान न होने से निर्माण कार्य रोक दिया गया है। इस बाबत मनरेगा प्रभारी जी डी शुक्ला का कहना है कि जल्द ही स्टीमेट पास करके भुगतान होने पर निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा।

संदिग्ध दशा में विवाहिता की मौत

मायके वालों ने लगाया हत्या का आरोप

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। शादी के छह महीने बाद ही एक विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई वहीं मायके वालों ने छह लोगों के विरुद्ध नामजद तहरीर देकर दहेज हत्या का मामला दर्ज कराया है। पुलिस ने मामला दर्ज करने के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है ।पट्टी तहसील क्षेत्र के पट्टी थाना अंतर्गत भरोखन तिवारीपुर गांव के रहने वाले श्रीपाल यादव के बेटे योगेंदर यादव की शादी बीते 11 जून को सुल्तानपुर जनपद के चांदा थाना अंतर्गत बरनी गांव के जयप्रकाश यादव की बेटी संध्या के साथ हुई थी संध्या की मां रेखा देवी ने शिकायती पत्र में आरोप लगाया कि बीते 15 दिसंबर को ससुरालीजन उसकी हत्या कर दिए पुलिस ने अस्पताल से शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया वहीं मृतक संध्या की मां रेखा की तहरीर पर पुलिस ने ससुर श्रीपाल यादव पति योगेंद्र यादव जेठ मुलायम यादव जेठानी नीलम तथा नंद पूनम के विरुद्ध गैर इरादतन हत्या तथा दहेज उत्पीड़न सहित अन्य मामलों में मुकदमा दर्ज किया है पुलिस ने ससुर श्रीपाल यादव तथा पति योगेंद्र यादव उर्फ रोशन को गिरफ्तार करके न्यायालय भेज दिया।तो दूसरी तरफ अधिकारियो की उदासीनता के चलते सरकार की सारी मंशा पर पानी फिरता नजर आ रहा है।मामला विकास क्षेत्र कालाकांकर के ब्रहमौली ग्राम पंचायत का है जहां सरकार की मंशा पर शत प्रतिशत खरा उतरने के लिए ग्राम प्रधान ने ड्रीम प्रोजेक्ट अमृत सरोवर को सरकार की मंशा के अनुरूप निर्माण कार्य शुरू किया। तत्कालीन सीडीओ ईशा प्रिया ने निरीक्षण के दौरान ग्राम प्रधान के अमृत सरोवर ड्रीम प्रोजेक्ट की सराहना किया और आश्वासन दिया कि अमृत सरोवर के निर्माण कार्य मे पैसे की कोई कमी नही रहेगी, उसी बीच सीडीओ का स्थानांतरण हो गया। प्रयागराज लखनऊ नेशनल हाइवे से जुड़ा होने के कारण छोटे बड़े वाहनों की नजर अमृत सरोवर की तरफ देखने को विवश कर देती है।

तहसील सिराथू में डीएम एसपी ने सुनी जनशिकायतें

सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 130 शिकायतें प्राप्त हुई जिसमें से 07 शिकायतों का मौके पर हुआ निस्तारण

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने तहसील सिराथू में जनशिकायतों को सुनकर सम्बन्धित अधिकारियों को गुणवत्तापूर्ण व समयान्तर्गत निस्तारित करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने राजस्व से सम्बन्धित शिकायतों पर राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर जाकर शिकायत को निस्तारित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने सभी अधिकारियों से कहा कि तहसील दिवस एवं आईजीआरएस के शिकायतों के निस्तारण में गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दिया जाय। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 130 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 07 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया तहसील मंझनपुर में कुल 29 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 03 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया तथा तहसील चायल में कुल 41 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से 03 शिकायत का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

समाधान दिवस में नगर पंचायत के भ्रष्टाचार की शिकायत

कौशाम्बी। संपूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर नगर पंचायत चायल के अधिशासी अधिकारी और नगर पंचायत अध्यक्ष के भ्रष्टाचार और मनमानी पूर्ण कार्य कराए जाने की शिकायत सभासद गुड्डी देवी सीमा देवी राजकुमार शिव दर्शन विनीत देवी राजू आदि सभासद ने संपूर्ण समाधान दिवस में अधिकारियों से करते हुए नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी और नगर पंचायत के अध्यक्ष पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाया है शिकायतकर्ता सभासदों ने बताया कि नगर पंचायत के विकास कार्यों में जमकर धांधली हो रही है घटिया क्वालिटी के सामानों से इंटरलॉकिंग कराया जा रहा है अध्यक्ष पर गाली गलौज करने का आरोप सभासदों ने लगाया है नगर पंचायत चायल के विकास कार्य के नाम पर सरकारी रकम में धांधली कर घटिया क्वालिटी के सामान से निर्माण करा कर हेरा फेरी करने के मामले की सभासदों ने जांच कर दोषियों को दंडित किए जाने की मांग की है।

पेंशन दिवस का आयोजन आज

पेंशनर पारिवारिक पेंशनर, पेंशन से सम्बन्धित समस्याओं का करायें निस्तारण

कौशाम्बी। जिलाधिकारी की अध्यक्षता में दिनांक 17 दिसम्बर 2023 को पूर्वान्ह 11 बजे कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में पेंशन दिवस का आयोजन किया जा रहा है। यह जानकारी वरिष्ठ कोषाधिकारी विनय कुमार प्रजापति ने देते हुए बताया कि पेंशन दिवस में पेंशन से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं यथा-पेंशन रुकी हो, 80 वर्षीय लाभ का मामला, पारिवारिक पेंशन से सम्बन्धित समस्या, पेंशन एरियर से सम्बन्धित समस्या, बैंक से सम्बन्धित समस्या एवं जीवित प्रमाण पत्र आदि समस्याओं का निस्तारण किया जायेगा। वरिष्ठ कोषाधिकारी ने जनपद के पेंशनर पारिवारिक पेंशनर को सूचित किया है कि पेंशन दिवस में अपनी पेंशन से सम्बन्धित समस्याओं का निस्तारण करा सकते हैं। उन्होंने जनपद के समस्त कार्यालयाध्यक्षों आहरण वितरण अधिकारियों को समय से बैठक में प्रतिभाग करने का आग्रह किया है।

राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्षता में बाल शिकायत निवारण पीठ शिविर का आयोजन

कौशाम्बी। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की टीम शिकायत निवारण पीठ/शिविर आयोजित करने और बच्चों के अधिकारों के उल्लंघन और वंचित होने से सम्बन्धित मामलों के खिलाफ आपकी शिकायत लेने के लिए विकास खण्ड एवं जनपद का भ्रमण कर रहा है। जनपद के बच्चें, माता-पिता,अभिभावक,देखभालकर्ता या बाल अधिकारों के लिए कार्य करने वाला कोई भी व्यक्ति छब्च्ब्त् की पीठ/शिविर के समक्ष अपनी शिकायत प्रस्तुत कर सकते है राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग (छब्च्ब्त्) की बेंच/कैम्प दिनांक 21 दिसम्बर 2023 को प्रातः 09 बजे से सम्राट उद्यन सभागार कलेक्ट्रेट, कौशाम्बी में पंजीकरण तथा बेंच/ कैम्प सुबह 10 बजे से संचालित किया जायेगा। यह जानकारी जिला प्रोबेशन अधिकारी श्री नीरज कुमार ने देते हुए बताया कि सड़क पर रहने वाले बच्चों, स्कूलों,बाल देखभाल संस्थानों, बालगृहों, छात्रावासों या किसी अन्य स्थान जहां बच्चे शिक्षा/ प्रशिक्षण लेते है या रहते है, आदि सहित सभी वर्गों के बच्चे खण्डपीठ के समक्ष अपनी समस्या प्रस्तुत कर सकते है। उन्होंने बताया कि बाल श्रमिकों को खतरनाक कार्यों में संलग्न करना घरेलू श्रमिक के रूप में रखना, बकाया/मुआवजा का भुगतान न करना, भीख मांगने को मजबूर, शारीरिक शोषण/हमला, परित्याग/उपेक्षा, घरेलू हिंसा का शिकार, एच0आई0वी0 स्थिति के आधार पर बच्चे के साथ भेद-भाव, पुलिस द्वारा बच्चे को पीटा जाना, संस्थाओं में उनके साथ दुर्व्यवहार, अवैध गोद लेना, बाल देखरेख संस्थानों द्वारा बच्चों के विरूद्ध हिंसा, बच्चों का व्यापार, अपहरण, लापता बच्चा, इलेक्ट्रानिक/ सोशल/ प्रिन्ट मीडिया में बाल अधिकारों का उल्लंघन, पड़ोस में स्कूल का अभाव, बुनियादी ढांचे की कमी, स्कूल में शारीरिक दंड/शोषण, स्कूल में प्रवेश से इंकार, बच्चों की दिव्यांगता सम्बन्धित शिकायत, रोग सम्बन्धी, कुपोषण, मध्यान्ह भोजन-पीने के पानी, पुस्तकालय, खेल के मैदान की अनुपलब्धता, आधार कार्ड, मादक द्रव्य/नशीली दवाओं का दुरुपयोग, बचपन के विकास सम्बन्धी विकारों, भीख मांगना, बाल विवाह, शादी के लिए यौन शोषण, दिव्यांगता प्रमाण पत्र व उपकरण, छात्रवृत्ति, योजना से वंचित बच्चे के सम्बन्ध में शिकायत/विस्तार प्रस्तुत कर सकते है राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग सरकार का वैधानिक निकाय है। जिसका मुख्य उद्देश्य सभी बच्चों को संविधान में निहित और विभिन्न अधिनियमों/ कानूनों के तहत प्रावधानित उनके अधिकारों का लाभ लेने में सक्षम बनाता है।

17 दिसम्बर को आयोजित होगा विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम

कौशाम्बी। जनपद की ग्राम पंचायत-अफजल पुरवारी, पिपरकुण्डी, बसेढ़ी, खानपुर, बिदॉव व सोनौली में प्रातः 10 बजे से दोपहर 12:30 बजे तक तथा मोहम्मदपुर अनेठा, हिसामपुर, कुरई, चकपिन्हा, भटवरिया व सिंधवल में 02 बजे से सायं 4:30 बजे तक दिनांक 17 दिसम्बर 2023 को विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी तथा छूटे हुए पात्र लाभार्थियों को विभिन्न योजनाओं-आयुष्मान भारत, पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना, दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, पीएम आवास योजना(ग्रामीण), पीएम उज्ज्वला योजना, पीएम विश्वकर्मा योजना, पीएम किसान सम्मान निधि योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, पीएम पोषण अभियान, हर घर जल-जल जीवन मिशन, गॉवों का स्वामित्व, जनधन योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना एवं पीएम स्वनिधि योजना आदि से लाभान्वित किया जायेंगा। बैंक के स्टॉल के माध्यम से कृषकों की ई-केवाईसी, आधार सीडिंग, केसीसी एवं अन्य लोन से सम्बन्धित समस्याओं का निस्तारण किया जायेंगा। समस्त सहकारी समितियों द्वारा अभियान चलाकर अधिक से अधिक लोगों को सदस्य बनाया जायेंगा तथा रासायनिक उर्वरकों के वैकल्पिक उर्वरकों यथा-नैनो यूरिया के विषय में जागरूक किया जायेंगा। स्वास्थ्य विभाग एवं कृषि विभाग आदि विभागों के स्टॉल लगायें जायेंगे। विभिन्न योजनाओं के सफल लाभार्थी ह्लमेरी कहानी मेरी जुबानीह्वके तहत अपने अनुभव/फीडबैक साझा करेंगे। वैन के माध्यम से मा0 प्रधानमत्री जी का रिकार्ड किया गया संदेश आमजन को सुनाया जायेंगा। विकसित भारत के लिए संकल्प वीडियो प्रसारित किया जायेंगा। सत्त कृषि गतिविधियों पर सत्र-ड्रोन प्रदर्शन, प्राकृतिक खेती और मृदा स्वास्थ्य कार्ड पर प्रगतिशील किसानों/विषय विशेषज्ञों की वार्ता एवं चर्चा होगी। महिला एसएचजी सदस्यों/स्कूली छात्रों/स्थानीय कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियॉ-ह्लधरती कहे पुकारह्व एवं स्वच्छता गीत आदि प्रस्तुत किये जायेंगे। स्थानीय प्राथमिक/उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्यों द्वारा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया जायेगा।

नगर पालिका के अध्यक्ष पर दबाव बनाने के लिए सभासद ने शुरू किया ड्रामेबाजी

भरवारी कौशांबी। नगर पालिका परिषद भरवारी के भाजपा सभासद वीरेंद्र कुमार ने एक पत्र जारी कर लिखा है कि अध्यक्ष से त्यागपत्र देने की अभिलाषा व्यक्त करना चाहता हूं लिखकर उन पर दबाव बनाने का प्रयास किया है यदि सभासद को इस्तीफा देना था तो वह सक्षम अधिकारी जिला अधिकारी को त्यागपत्र सौप देते लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया है बल्कि भाजपा सभासद ने अध्यक्ष को पत्र देकर त्यागपत्र देने की अभिलाषा व्यक्त करना चाहता हूं लिखकर केवल ड्रामेबाजी की है जिसकी चर्चा पूरे दिन नगर क्षेत्र में होती रही हालांकि इस पत्र के माध्यम से उन्होंने नगर पालिका के अध्यक्ष पर तमाम गंभीर आरोप लगाए हैं इतना ही नहीं पत्र के माध्यम से उन्होंने अध्यक्ष से क्षमा भी मांग ली है अध्यक्ष के साथ काम करने का सौभाग्य मिलने पर आभारी भी अपने को बताया है आखिर सभासद को इस ड्रामेबाजी की क्या आवश्यकता पड़ी है यह जन जन में चर्चा का विषय बना हुआ है।

अखण्ड भारत की संकल्पना हर भारतीय की महत्वकांक्षा : वेद प्रकाश सत्यार्थी

ओसा स्थित महाविद्यालय में अखंड हिंद फौज के समरसता भोज कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

कौशाम्बी। अखंड भारत की संकल्पना हर भारतीय के मन में बैठी महत्वकंक्षा है जो यह सोच रखती है कि कैसे हम पुराने समय में अपने पूर्वजों द्वारा अखंड भारत क्षेत्र में फैली महान संस्कृति को पुनः एकत्रित कर इस महान संस्कृति को फिर से उसके स्वर्णिम काल में ले चले। उक्त बातें राष्ट्रवादी नेता वेद प्रकाश सत्यार्थी ने ओसा स्थित एक डिग्री कॉलेज में अखंड हिन्द फौज द्वारा आयोजित समरसता भोज कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए कही। कार्यक्रम का संयोजन अखण्ड हिंद फौज के दिलीप अग्रहरी ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि पूर्व में भारत देश सांस्कृतिक रूप से बहुत बृहद और विशाल था जो हिमालय से शुरू होता था और यह वर्तमान ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, मालदीव, श्रीलंका, म्यांमार, इंडोनेशिया, मलेशिया लाओस सहित लगभग एक दर्जन देशों तक विशाल रूप से फैला हुआ था। यही नहीं की महान संस्कृति चीन जापान सहित इन सभी देशों में आज भी देखने को मिलती है जहां गांव-गांव में भारतीय सांस्कृतिक विरासत के आज अवशेष आज भी मौजूद है। कि इस मौके पर उन्होंने आजाद हिंद फौज के कमांडर सुभाष चंद्र बोस से प्रेरणा लेने की बात कहते हुए कही की आजादी में आजाद हिंद फौज का अपना बड़ा योगदान था कि हम लोग 1947 में आजाद हो पाए। इस मौके पर अखंड हिंद फौज के कैडेट से बात करते हैं उन्होंने कहा कि यह आजाद हिंद फौज के वीर सैनिकों अंग्रेजन पर डर ही था कि वह तय समय से पहले 15 अगस्त 1947 में भारत छोड़ने को मजबूर हुए। इस मौके पर उन्होंने अखंड हिंद फौज के लोगों की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस तरीके से कैडेट्स को सैनिक संयम व नियम सीखने का जो मौका वह दे रहे हैं। वह इन क्रेडिट के उज्जवल भविष्य के लिए मजबूत स्तंभ साबित होगा। जिसके दम पर यह अपने जीवन की बड़ी सी बड़ी कठिनाई को हराकर उसे पर जीत साबित कर अपने को सफल बना पाएंगे। इस मौके पर अखण्ड हिन्द फौज के जिला कमांडर अनूप कुमार, इशिका, कमला देवी, बृजेश कुमार, निखिल कुमार, ज्ञान बाबू, हर्ष द्विवेदी, सुभाष कुमार, सुरेंद्र कुमार, पंचम लाल आदि मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

भगवान के 24 अवतार और परीक्षित को श्रीमद् भागवत कथा सुनाए जाने का कथा व्यास ने किया विस्तार से वर्णन

कौशाम्बी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर के ओसा स्थित वृद्ध जन आश्रम में श्रीमद् भागवत सप्ताह कथा सप्ताह ज्ञान यज्ञ के दूसरे दिन शनिवार को कथा व्यास आनंद धाम सरकार महर्षि नागेंद्र जी महाराज गुरु जी श्री धाम वृंदावन धाम श्री धाम चित्रकूट के मुखारविंद से भगवान के 24 अवतार और सुखदेव जी ने परीक्षित को श्रीमद् भागवत कथा सुनाए जाने का वर्णन किया गया इस मौके पर कथा व्यास नागेंद्र जी महाराज गुरु जी ने कहा के जब-जब पृथ्वी पर कोई संकट आता है तो भगवान अवतार लेकर उस संकट को दूर करते हैं। भगवान शिव और भगवान विष्णु ने कई बार पृथ्वी पर अवतार लिया है। भगवान विष्णु के 24 वें अवतार के बारे में कहा जाता है किह्लकल्कि अवतारह्वके रूप में उनका आना सुनिश्चित है। उनके 23 अवतार अब तक पृथ्वी पर अवतरित हो चुके हैं। इन 24 अवतार में से 10 अवतार विष्णु जी के मुख्य अवतार माने जाते हैं। यह है मत्स्य अवतार, कूर्म अवतार, वराह अवतार, नृसिंह अवतार, वामन अवतार, परशुराम अवतार, राम अवतार. कृष्ण अवतार, बुद्ध अवतार, कल्कि अवतार है स्वास्तिक वाचन व्यास एवं मंगलाचरण के बाद कथा आरंभ की गई। इस दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। कथा वर्णन करते हुए वृंदावन से पधारे महाराज ने कहा कि जब राजा परीक्षित ऋषि श्रृंगी के तरफ से गृह त्याग कर अनशन व्रत किया तब श्री सुखदेव जी आकर 7 दिनों तक उन्हें भागवत की कथा सुनाई। श्री सुखदेव जी ने कहा कि सभी मनुष्य को प्रेम से भगवान की लीला कथा का श्रवण, कीर्तन और स्मरण करना चाहिए।सृष्टि विस्तार का कथा कहते हुए उन्होंने कहा कि भगवान विष्णु के नाभि से कमल और कमल से ब्रह्मा जी की सृष्टि हुई। पुनः ब्रह्मा जी ने मनु और शतरूपा का सृष्टि कर नथुनी सृष्टि का विस्तार किया। ब्रह्मा जी के द्वारा मनकारी ऋषियों वराह भगवान का अवतार हुआ। वराह भगवान ने पृथ्वी की स्थापना और हिरण्यकछ्यप का वध किया इस दौरान सैकड़ों महिला-पुरुष श्रद्धालुओं की भीड़ जुटी रही।

कोखराज में विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का हुआ आयोजन

कोखराज कौशाम्बी। सिराथू तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत कोखराज विकास खण्ड सिराथू में शनिवार को ग्राम चौपाल और विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम का आयोजन किया गया विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम में सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी तथा छूटे हुए पात्र लाभार्थियों को विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित किया गया। कार्यक्रम में बैंक के स्टॉल के माध्यम से कृषकों की ई-केवाईसी, आधार सीडिंग, केसीसी एवं लोन से सम्बन्धित अन्य समस्याओं का निस्तारण किया। किसानों को रासायनिक उर्वरकों के वैकल्पिक उर्वरकों यथा-नैनो यूरिया के विषय में जागरूक किया गया। स्वास्थ्य विभाग एवं कृषि विभाग आदि विभागों के स्टॉल भी लगायें गयें। मेरी कहानी मेरी जुबानी के तहत विभिन्न योजनाओ के लाभार्थियों ने योजना के लाभ से जीवन में आये परिवर्तन एवं उन्नति का अनुभव सभी से साझा किया। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के लाभार्थियों को प्रमाण-पत्र भी वितरित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित ग्रामवासियों ने प्रधानमंत्री का रिकार्ड किया गया संदेश भी सुना कार्यक्रम के माध्यम से सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी उपस्थित ग्रामीणों को दी गई है इस कार्यक्रम के दौरान पशु चिकित्सा अधिकारी, कृषि विभाग के आधिकारी, स्वास्थ्य विभाग के आधिकारी सहित मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि लवकुश मौर्य खण्ड विकाश अधिकारी, भावेश शुक्ला, कृषि वैज्ञानिक मनोज सिंह, डीपीओ मनोज वर्मा,जल जीवन मिशन डीपीएमई संध्या सिंह, लेखपाल लोक नाथ पांडेय,ग्राम विकास अधिकारी नीरज यादव, ग्राम प्रधान रमेश कुमार मौर्य, प्रधान प्रतिनिधि नसीम, जोनल अधिकारी रामचन्द्र एडीओ एजी मनमोहन मिश्रा, आदि लोगों की उपस्थिति रही।

ननमई के एक ढाबे में पशु वाहनों को दिया जाता है शरण!

कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के नानमाई स्थित एक होटल ढाबे में बीते कई वर्षों से पशु वाहनों को शरण दिया जाता है बताया जाता है कि इसी होटल से पशु तस्करों की थाना पुलिस से सेटिंग कराई जाती है पशु तस्करों से मोटी रकम लेकर थाना पुलिस तक पहुंचाई जाती है जिससे थाना पुलिस पशु तस्करों पर ठोस कार्यवाही करती नहीं दिख रही है प्रतिदिन कई वाहन पशु तस्करों के इस ढाबे में खड़े होते हैं कुछ देर रुकने के बाद पशु वाहन गंतव्य को रवाना हो जाते हैं लेकिन स्थानीय पुलिस पशु तस्करों पर ठोस कार्रवाई करती नहीं दिख रही है जबकि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पशु तस्करी पर पूर्ण रोक लगाए जाने का निर्देश अधिकारियों को दिया है लेकिन उसके बाद भी पशु तस्करी के खेल पर रोक नहीं लग सकी है।

माली से कनवर्ट हुए कथित पंडितों के चलते रोजी रोटी के संकट से जूझते पुरोहित

साहब! बताएं कुंतलों माला फूल गंगा में डालने से या लोगों को तिलक लगाने से होता है प्रदूषण-पुरोहित

सैकड़ो वर्षों से गंगा किनारे कर्मकांड संपन्न कराने वाले पुरोहितों ने जीविकोपार्जन पर आए संकट से निजात दिलाने को संपूर्ण समाधान में जिलाधिकारी से लगाई गुहार

कौशांबी। इक्यावन शक्तिपीठों में कड़ा धाम के मां शीतला मंदिर के निकट कुबरी घाट में बीते कई वर्षों से कर्मकांड करने वाले पुरोहितों के सामने अचानक जीविकोपार्जन के लिए संकट खड़ा हो गया है जिससे निजात दिलाने के लिए संपूर्ण समाधान दिवस पर पहुंचे जिला अधिकारी सुजीत कुमार को जय मां गंगे तीर्थ पुरोहित उत्थान सेवा समिति के सदस्यों ने प्रार्थना पत्र देते हुए न्याय की गुहार लगाई है। मालूम हो कि बीते सैकड़ो वर्षों से मां शीतला मंदिर के निकट कुबरी घाट में कर्मकांड कराने वाले पुरोहितों द्वारा तख्त लगाकर आने वाले श्रद्धालुओं का कर्मकांड कराया जाता रहा है। इस बीच कुछ पंडा समाज के लोगों व अराजक तत्वों द्वारा वहां एकाअधिकार जमा कर माला फूल बेचना शुरू कर दिया था जिससे घाट पर अराजकता व प्रदूषण होने लगा इस बीच नवरात्रि के अवसर पर प्रशासन द्वारा प्रदूषण के नाम पर घाट से सभी तख्तों को हटवा दिया गया जिसमें पुरोहितों के तख्त भी शामिल थे। पीड़ितों का कहना है हमारे कर्मकांड की वजह से नहीं वहां मालियों और अराजक तत्वों द्वारा माला फूल बेचने से प्रदूषण फैल रहा था। प्रशासन के इस कदम से उनके जीविकोपार्जन पर एक बड़ा संकट खड़ा हो गया है। जिससे मजबूर होकर पुरोहितों ने जिला अधिकारी को प्रार्थना पत्र देते हुए पुनः पुरोहितों की तख्त व चौकी गंगा घाट पर लगाने की गुहार लगाई है। वही बता दे कि मामले को गंभीरता से लेते हुए जिला अधिकारी सुजीत कुमार ने एसडीएम सिराथू व सीओ सिराथू को जांच कर आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं।

हादसे में कमी लाने को सड़क सुरक्षा पखवाड़े का शुभारंभ

कौशांबी। सड़क दुर्घटनाओ में कमी लाने के लिए परिवहन विभाग की ओर से वाहन चालकों के बीच सड़क सुरक्षा पखवाड़े का शुभारंभ कर दिया गया है। मंझनपुर स्थित एआरटीओ कार्यालय में शुक्रवार को जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि जितेंद्र सोनकर व एआरटीओ तारकेश्वर माल्य ने प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि ने कहा कि यातायात के नियमों का पालन न करने से सड़क दुर्घटनाएं हो रही है। इससे हर दिन सैकड़ों लोग काल के काल में समा रहे है। वाहन चलाते समय हर चालक को ट्रैफिक नियमों का पालन करना अति आवश्यक है। एआरटीओ ने कहा कि शासन के निर्देश पर सड़क सुरक्षा पखवाड़े का शुभारंभ 15 दिसंबर से किया गया है। जो 31 दिसंबर तक चलेगा । इस दौरान प्रमुख चौराहे, स्कूल, कॉलेज व सार्वजनिक स्थानों पर वाहन चालकों को जागरूक किया जाएगा। आर आई कौशल किशोर सिंह ने बताया कि वाहन चलाते समय र ट्रैफिक नियमों का पालन करें । दो पहिया वाहन बगैर हेलमेट के न चलाएं। चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग अवश्य करें। चौराहा पार करते समय रेड लाइट या संकेतक चिन्ह को जरूर देखें। इसके बाद वहां पर उपस्थित लोगों को ट्रैफिक नियमों का पालन करने के लिए शपथ भी दिलाई गई।

बाल विवाह, बाल श्रम एवं बाल तस्करी जैसे मामलों पर चलाया जन जागरूकता अभियान

कौशाम्बी। जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति चित्रकूट एवं कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रन्स फाउंडेशन के सहयोग द्वारा जनपद के ब्लॉक कौशाम्बी, बारा, नेवादा और चायल कई पंचायतो मे ग्रामीण स्तर पर, विद्यालय स्तर पर, छोटे छोटे जन समूहों के माध्यम से समाज के हर वर्ग तक पहुंच बनाकर बाल विवाह, बाल श्रम एवं बाल तस्करी जैसे मुद्दे पर लोगो को जागरूक एवं मानसिक स्तर पर शाशक्त बनाने का प्रयास कर रही है। बाल विवाह, बाल श्रम, शोषण, तस्करी जैसी बुराई को दूर करने एवं लोगो जागरूक करने के जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति अपने सहयोगी कार्यकर्ताओ के साथ प्रत्येक दिन बाल विवाह, बाल श्रम एवम बाल तस्करी जैसे संवेदनशील मुद्दों के खिलाफ अभियान के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर जहा पर बाल विवाह, बाल श्रम जैसी घटना अभी भी घट रही हैं लोग ऐसा न करें या न कर पाए के लिए इस कार्यक्रम को प्रतिदिन कई गाँवो मे कई स्थानों पर आयोजित किया जाता हैं। आज ग्राम ढेकहाई ब्लॉक बारा के प्राथमिक माध्यमिक विद्यालय पर बालक एवं बालिकाओं एवं अध्यापक गणों के साथ बाल विवाह न करने या ना करवाने के लिए सामूहिक स्तर पर शपथ दिलाया गया। इसी क्रम मे जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति, चित्रकूट से अमित शुक्ल ने बच्चो को बताया कि बाल विवाह एक सामाजिक अभिशाप है। यदि ऐसा कही हो रहा हैं तो उस नाबालिग किशोर या किशोरी का उसके बचपन, शिक्षा का हनन एवं शारीरिक एवं मानसिक शोषण हीं होता हैं क्योंकि जिस उम्र मे इनको सही शिक्षा एवं उचित पोषण की आवश्यकता होती है उस उम्र मे विवाह करना

कानूनन अपराध हैं। यदि ऐसा हमारे आसपास कही हो रहा तो हम सब 1098 निः शुल्क नबर सूचना दे सकते हैं। इस प्रकार के प्रयास से हम सब किशोर एवम किशोरियों के बचपन को बचा सकते है तथा उनके जीवन को नया आयाम देना का प्रयास कर सकते है। इसके लिए समाज का हर तबके को जागरूक एवं शाशक्त बनाना होगा तब जाकर हम सब इस समाज को बाल विवाह, बाल श्रम एवं बाल तस्करी जैसी कुप्रथा से सुरक्षित कर पाएंगे और साथ मे इस पर अकुश लगा पाएंगे। ये प्रयास हमारा दायित्व हैं इसको ध्यान मे रखना पड़ेगा तब जाकर हम सब अपने समाज के नवनिहालो के बचपन को सुरच्छित कर पाएंगे। जन कल्याण शिक्षण प्रसार समिति एवम कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेन्स फाउंडेशन का एक मात्र लक्ष्य है कि भारत को बाल विवाह, बाल श्रम एवम बाल तस्करी मुक्त भारत बनाना है।

जेल से छूटने के बाद रेप आरोपी के आतंक से पीड़ित परिवार परेशान

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के मीरापुर गांव में नाबालिक बालिका से रेप के मामले में मंझनपुर कोतवाली में दर्ज मुकदमा अपराध संख्या 625 सन 2020 के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा था अदालत से रेप आरोपी को जमानत मिल गई है जमानत के बाद जेल से रिहा होने के बाद रेप आरोपी का आतंक व्याप्त है रेप पीड़िता नाबालिक बालिका के परिजनों को रेप के मुकदमे में सुलह समझौता के लिए आए दिन आरोपी द्वारा धमकी दी जाती है मारपीट की जाती है गाली गलौज दिया जाता है जिससे पीड़ित परिवार परेशान है 27 नवंबर को फिर रेप आरोपी ने पीड़ित परिवार को धमकी दी रेप आरोपी के पिता ने लाइसेंसी बंदूक लेकर पीड़ित परिवार को दौड़ा लिया और जान से मारने का प्रयास किया मामले के शिकायत थाना से लेकर पुलिस अधीक्षक कार्यालय में 30 नवंबर को हुई लेकिन रेप आरोपी और उसके पिता पर मुकदमा नहीं दर्ज हुआ है 15 दिसंबर को फिर पीड़ित बालिका की मां पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुँची और आरोपी की कहानी बताते हुए मुकदमा दर्ज कराकर गिरफ्तारी कराए जाने की मांग की है

रेप आरोपी के पिता की बंदूक नहीं हुई निरस्तीकरण

कौशांबी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के मीरपुर गांव में रेप का मुकदमा अपराध संख्या 625 सन 2020 मंझनपुर कोतवाली में दर्ज है इस मुकदमे के आरोपी के पिता नीरज कुमार पुत्र देशराज के पास लाइसेंसी शस्त्र है मुख्यमंत्री का निर्देश है कि आपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों के परिजनों को भी शस्त्र लाइसेंस न जारी किया जाए और जिन अपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों के परिवार के पास पहले से शस्त्र लाइसेंस है तो उनके लाइसेंस को निरस्तीकरण किया जाए लेकिन 3 वर्ष पूर्व रेप का मुकदमा दर्ज होने के बाद रेप आरोपी के पिता की बंदूक के लाइसेंस पर निरस्तीकरण की कार्यवाही अभी तक थाना पुलिस ने नहीं की है आतंक अत्याचार की हालत यह है कि आए दिन बंदूक निकालकर लोगों को धमकी दी जाती है कि तुम्हारी हत्या कर देंगे 27 नवंबर को रेप पीड़िता के परिजनों पर मुकदमे में सुलह समझौता का दबाव बनाने के लिए बंदूक लेकर रेप आरोपी के पिता ने पीड़ित परिवार के लोगों को दौड़ा लिया आए दिन आतंक अत्याचार का पर्याय रेप आरोपी का पिता बना हुआ है क्षेत्र के लोगों ने पुलिस अधीक्षक का ध्यान आकर्षित करते हुए रेप आरोपी के पिता की बंदूक का लाइसेंस निरस्त कराए जाने की मांग की है।

मजदूरी का पैसा ना मिलने से इलाज के अभाव में भट्ठा मजदूर के पोते की मौत

कौशांबी। बिहार प्रांत के गया जनपद के रहने वाले शाम वाली पुत्र बैसाखी पिपरी थाना क्षेत्र के गगन ईट भट्ठा में परिवार के साथ मजदूरी करते हैं उनकी मजदूरी की रकम ईट भट्ठा मालिक नहीं दे रहा है ईट भट्ठा मजदूर का पोता रोहित उम्र 6 वर्ष अचानक बीमार हो गया है इलाज के लिए उसे रकम की जरूरत पड़ी उसने ईट भट्ठा मालिक से अपने बकाया मजदूरी की रकम मांगी लेकिन उसे ईट भट्ठा मालिक ने समय पर मजदूरी की रकम नहीं दी बाद में उसकी बकाया मजदूरी से उसे कुछ रकम भट्ठा मालिक ने दिया लेकिन तब तक इलाज के अभाव में शाम वाली के पोते रोहित की मौत हो गई बच्चे की मौत होते ही परिवार में कोहराम मच गया मामले की सूचना स्थानीय पुलिस चौकी में दी गई दोनों पक्षों को पुलिस ने बुलाया काफी देर तक पुलिस चौकी में पंचायत चली पंचायत के बाद दोनों पक्षों के बीच पुलिस ने सुलह समझौता कर दिया है।

5 दिवसीय स्पेशल एजुकेटर्स प्रशिक्षण का समापन

कौशाम्बी। बी.आर.सी. मंझनपुर में समग्र शिक्षा के अंतर्गत 5 दिवसीय स्पेशल एजुकेटर्स एवं फिजियोथैरेपिस्ट के होम बेस्ड एजुकेशन, विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों में एक्सेसिबिलिटी, समावेशी शिक्षा में आई.सी.टी. के उपयोग एवं डिसेबिलिटी के विषय में प्रशिक्षण का समापन खंड शिक्षा अधिकारी मंझनपुर डॉ. जवाहरलाल यादव की उपस्थिति में किया गया प्रशिक्षण में संदर्भदाता शारदा कुमार सिंह द्वारा समावेशी शिक्षा की संकल्पना तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चे व दिव्यांगता का परिचय एवं दिव्यांगजनों हेतु नीति एवं अधिनियम तथा बच्चों के शारीरिक बाधाओं की स्क्रीनिंग व दृष्टि दिव्यांग बच्चों की शिक्षण पद्धति पर प्रकाश डाला गया तथा संदर्भदाता आशुतोष श्रीवास्तव के द्वारा सांकेतिक भाषा लेखन व आई.ई.पी. तथा बुनियादी साक्षरता को बढ़ाने हेतु शिक्षण नीतियों तथा दिव्यांग बच्चों के प्रोत्साहन व सुविधाओं एवं पेरेंट्स काउंसलिंग पर प्रकाश डाला गया तथा इरशाद हुसैन द्वारा सेरेब्रल पाल्सी ऑटिज्म एवं होम बेस्ड एजुकेशन पर प्रकाश डाला गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रधानाध्यापक संजय कुमार सरोज तथा जनपद कौशांबी के समस्त स्पेशल एजुकेटर एवं फिजियोथैरेपिस्ट उपस्थित रहे।

संपादक की कलम से

उत्तर-दक्षिण की बातें व्यर्थ

आज काशी तमिल संगमम का आयोजन हो रहा है। काशी गदगद है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस समागम में नमो घाट पर 1400 तमिल भाषी विशिष्टजनों से भेंट करेंगे और उपस्थित महानुभावों को सम्बोधित करेंगे। अनेक दक्षिण भारतीय विद्वानों के लिए काशी वैदिक ज्ञान परम्परा का मुख्य केन्द्र रहा है। वेद, वेदांग और संस्कृत सहित ज्ञान दर्शन परम्परा का मुख्य क्षेत्र काशी भी रहा है। देश की विश्व वरेण्य संस्कृति का प्राचीन केन्द्र रहा है। संस्कृति के कारण हम प्राचीन राष्ट्र हैं। अनेक भाषाएं हैं। अनेक बोलियां हैं और तमाम क्षेत्रों में अलग अलग घरेलू रीति-रिवाज भी हैं। तमाम विविधताओं के बावजूद भारत की सांस्कृतिक एकता बहुत गहरी है। लेकिन राष्ट्र को अखण्ड सत्ता न मानने वाले इक्का-दुक्का राजनैतिक समूह राष्ट्रीय एकता पर प्रहार करते हैं। लोकसभा में हाल ही में एक माननीय सांसद ने उत्तर दक्षिण की विभाजक बातें कही। सदन की कार्यवाही से आपत्तिजनक अंश हटा दिए गए हैं। लेकिन समाचार माध्यमों में यह बातें प्रमुखता से छपी व प्रसारित हुईं। भारत वैदिक काल से ही सांस्कृतिक राष्ट्र है। इसे उत्तर दक्षिण और पूरब पश्चिम के कृत्रिम खांचों में देखना अनुचित है। वैदिक संस्कृति दर्शन का विकास सप्तसिन्धु में हुआ और इसे भारत के जन गण मन ने अपनी जीवन पद्धति का आधार माना। भारत एक छंदबद्ध कविता है। काव्य के प्रवाह में दिशाओं का कोई मतलब नहीं होता। भारत एक सुव्यवस्थित संगीत जैसी शास्त्रीय रचना है। इसमें सभी राग और रागिनियां हैं। ऋग्वेद में मंत्र को ऋचा बताया गया है। ऋषि के अनुसार ऋचाएं परमव्योम में रहती हैं और जाग्रत बोध वाले लोगों के हृदय में प्रवेश करने की अभिलाषा करती हैं। भारत परमव्योम आकाश से उतरी एक ऋचा है। विश्व लोककल्याण में तपरत एक सार्वभौम जीवन दृष्टि है। भारत एक अनुराग है सृष्टि के सभी तत्वों के प्रति। विश्व कल्याण से प्रतिबद्ध एक प्रीति है। समस्त मानवता का सुख स्वस्ति और आनंद भारत का ध्येय है। भारतीय संस्कृति और दर्शन के विकास में देश के सभी क्षेत्रों का कर्मतप जुड़ा है। उत्तर-दक्षिण की बातें व्यर्थ हैं। सुब्रमण्य भारती प्रख्यात तमिल कवि थे। 1982 में उनकी जन्म शताब्दी थी। इस कार्यक्रम की आयोजन समिति ने भारती की कविताएं और गद्य नाम से कुछ रचनाओं का हिन्दी अनुवाद छपवाया था। इस संकलन की पहली कविता वन्दे मातरम् है। भारती इस कविता में कहते हैं, 'पराधीन जीवन पर लज्जित सारा भारत एक साथ है/हम सब यह संकल्प करेंगे/कभी नहीं परतंत्र रहेंगे/हम वन्दे मातरम् कहेंगे।' भौगोलिक दृष्टि से भारती दक्षिण के थे। पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। भारती के हृदय में वन्दे मातरम् है। भारती की कविताओं में सप्तसिन्धु भी है और भूगोल की दृष्टि से यह उत्तर पश्चिम में है। तमिल कवि के सामने समूचा भारत रहता है। भारती के मन में गंगा के मैदान लहकते हैं। एक कविता में कहते हैं, 'खूब उपजता गेहूं गंगा के कछार में/ताम्बूल सरस कावेरी के कगार में।' भारती के मन में उत्तर की गंगा बहती है और दक्षिण की कावेरी भी। काशी की ज्ञान परम्परा के प्रति भी उनका रागात्मक लगाव है। वे धुर दक्षिण के कांचीपुरम में बैठकर काशी के विद्वानों का संवाद सुनने के लिए एक यंत्र की कल्पना करते हैं, 'ऐसे यंत्र बनेंगे/कांचीपुरम में बैठकर/काशी के विद्वतजन का संवाद सुनेंगे।' भारती उपनिषदों के प्रेम में हैं और वेदों के भी। कहते हैं, 'मुख में वेदों का वास/हाथ में तीक्ष्ण असि शोभित मंगलकारी।' वे दर्शन के तल पर अद्वैतवादी जान पड़ते हैं। उनकी कविता और गद्य में योग साधना भी है। क्या अद्वैत दर्शन के विश्वसिद्ध व्याख्याता आचार्य शंकर को भी हम केवल दक्षिण का मान सकते हैं?

केरल के राज्यपाल पर हमला ?

अशोक मधुप
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने आरोप लगाया है कि बीते सोमवार को मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने उन्हें शारीरिक रूप से नुकसान पहुंचाने की साजिश रची। आरोप है कि एयरपोर्ट जाते समय सत्तारूढ़ सीपीएम की छात्र शाखा, स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) के कुछ सदस्यों ने राज्यपाल के वाहन को टक्कर मारी। कार के शीशे पर प्रहार किए। यह घटना सोमवार को तब हुई जब राज्यपाल नई दिल्ली जाने के लिए तिरुवनंतपुरम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर जा रहे थे। स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया ने उन पर काले झंडे लहराए और तीन स्थानों पर उनकी कार को रोकने की कोशिश की। एक जगह गवर्नर कार से बाहर निकले तो प्रदर्शनकारी भाग लिए। गवर्नर खान ने दिल्ली में मीडिया से कहा कि मुख्यमंत्री विजयन की संलिप्तता के बूते उन्हें शारीरिक नुकसान पहुंचाने के लिए एक ठोस प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि यह घटना कोई हादसा नहीं थी, बल्कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से निशाना बनाने के लिए जानबूझकर ऐसा किया गया। खान ने कहा, "मैं तीन बार प्रदर्शनकारियों के बीच आया और ध्यान देने वाली बात यह है कि इन प्रदर्शनकारियों को पुलिस जीपों में लाया गया था और घटना के बाद उन्हें इन जीपों में वापस ले जाया गया। उन्होंने कहा, सरकार मुझे डराने के लिए ऐसा कर रही है, लेकिन मैं डरने वाला नहीं हूं। राज?यपाल का यह आरोप बहुत गंभीर है, क्योंकि राज?य के मुख?यमंत्री पर साजि?श रचने का आरोप है, इसलिए केंद्र सरकार को इसे गंभीरता से लेना चाहि?ए। उन्हें राज्यपाल के आरोप की किसी केंद्रीय एजेंसी से या केंद्रीय आयोग से जांच करानी चाहिए। साथ ही राज्यपाल को अपने स्तर से अतिरिक्त सुरक्षा देनी होगी ताकि आगे से ऐसा न हो।

राज्यपाल और मुख्यमंत्री और राज्य सरकारों के बीच विवाद नया नही हैं। मुख्यमंत्री और सरकार चाहतीं है कि वे राज्य को अपनी मर्जी से चलाएं। जो चाहें करें। राज्यपाल संविधान के अनुरूप कार्य करने को कहते हैं। अपने पद के मद मुख्यमंत्री ये बर्दाश्त करने को तैयार नही होते की कोई उनके काम में अडंगा लगाए। यही टकराव का बड़ा कारण है। यदि मुख्यमंत्री ये समझ लें। अपनी सीमा जानलें तो कोई विरोध न हो। हालाकि कई जगह राज्यपाल भी मनमानी पर उतरें हैं। वह विधान सभा द्वारा पारित प्रस्ताव स्वीकृति की प्रतीक्षा में कई- कई माह से रोके हैं। इस पर सर्वोच्च न्यायालय भी कई बार नाराजगी जता चुका है। केरल सरकार द्वारा कन्नूर विश्वविद्यालय के कुलपति की नियुक्ति की गई। जब की इस नियुक्ति का अधिकार राज्यपाल का है। सुप्रीम कोर्ट ने 30 नवम्बर 2023 मुख्यमंत्री द्वारा की कन्नूर विश्व विद्यालय के राज्यपाल की नियुक्ति को अनाचार तथा अवैध दख्ल का दोषी करार दिया। कार्ट ने निर्णय में यहां तक कहा गया कि मुख्यमंत्री ने कानून का मजाक उड़ाया है। प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ और जेबी पारदीवाला और मनोज मिश्रा समेत तीन जजों की खण्डपीठ ने कुलपति गोपीनाथ रवींद्रन की नियुक्ति को अवैध बताया तथा निरस्त कर दिया। निर्णय में कहा गया कि निदेर्शानुसार राज्यपाल ही विश्वविद्यालय का कुलाधिपति होता है। यहां सुप्रीम कोर्ट ने कहा भी कि राज्य शिक्षा मंत्री आर बिन्दु का परामर्श कुलाधिपति पर अनिवार्य नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में केरल राजभवन की वह विज्ञाप्ति का भी उल्लेख किया जिसमें राज्यपाल ने लिखा था : श्री रवींद्रन की नियुक्ति का निर्णय स्वयं मुख्यमंत्री तथा उनकी उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती आर बिन्दु ने किया था। राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान ने कहा भी था कि पिनराई विजयन राजभवन आये थे और कन्नूर विश्वविद्यालय के कुलपति की नियुक्ति का अनुरोध किया था। बिन्दु भी दो बार लिखकर आग्रह कर चुकी हैं। अंततः सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में राज्य के अनुचित हस्तक्षेप के आधार पर डा. गोपीनाथ रवींद्रन को वीसी के रूप में फिर से नियुक्त करने वाली 23 नवम्बर, 2021 की अधिसूचना को रद्द कर दिया था। अदालत ने कन्नूर विश्ववि?द्यालय की स्वायत्तता पर जोर देते हुए कहा कि कन्नूर विश्ववि?द्यालय अधिनियम 1996 और यूजीसी कानून संस्थान को राज्य सरकार के हस्तक्षेप से बचाने के लिए बनाए गए थे। इसमें इस बात पर जोर दिया गया कि चांसलर, विश्वविद्यालय में एक महत्वपूर्ण भूमिका रखता है और वह स्वतंत्र रूप से कार्य करता है। वह अपनी विवेकाधीन शक्तियों के प्रयोग में राज्य सरकार की सलाह से बाध्य नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय के इस आदेश के बाद राज्यपाल ने प्रदेश सरकार द्वारा अन्य विश्वविद्यालयों में नियुक्त कुलपति की नियुक्ति भी निरस्त कर दी। इतना ही नहीं केरल उच्च न्यायालय ने भी केरल यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एंड ओशियन स्टडीज के कुलपति के रूप में डॉ रिजी जॉन की नियुक्ति को रद्द कर दिया। अदालत ने नियुक्ति को अवैध करार देते हुए कहा कि इस प्रक्रिया में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा निर्धारित दिशा निदेर्शों का उल्लंघन किया गया। यूजीसी शिक्षा मंत्रालय के तहत एक वैधानिक निकाय है जो देश भर में उच्च शिक्षा संस्थानों के कामकाज की देखरेख करता है।

लगता है कि केरल के मुख्यमंत्री और सत्ताधारी वामपंथी दल इस सब से नाराज है। विश्वविद्यालयों में उनके सदस्य कुलपति नहीं बन पा रहे, इससे वे गुस्से में हैं। वे इसके लिए राज्यपाल आरिफ मुहम्मद खां को जिम्मेदार मानते हैं। उनका आरोप है कि राज्यपाल विश्वविद्यालयों का भगवाकरण कर रहे हैं। इसीका वह विरोध कर रहे है। राज्यपाल को काले झंडे दिखा रहे हैं। केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान के काफिले पर राजधानी तिरुवनंतपुरम में कम्युनिस्ट छात्र संगठन स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के हमले के बारे में हमले से पहले राज्य खुफिया विभाग राज्यपाल ने तीन चेतावनियाँ जारी की थीं। ये चेतावनियाँ 24 घंटे के अंतराल में जारी की गई थी। इसमें काले झंडे वाले प्रदर्शन और राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान के खिलाफ संभावित हमले की चेतावनी दी गई। यही नहीं, सोमवार 11 दिसंबर, 2023 दोपहर को जारी आखिरी रिपोर्ट में विरोध प्रदर्शन के संभावित जगहों का भी जिक्र किया गया। स्टेट इंटेलिजेंस ने अपनी रिपोर्ट में सुझाव दिया गया था कि राज्यपाल को अतिरिक्त सुरक्षा दी जानी चाहिए, लेकिन पुलिस के आला अधिकारियों ने इसे नजरअंदाज कर दिया था। इसके अलावा, खुफिया विभाग को पता चला कि राज्यपाल का ट्रैवल रूट शहर के पुलिस आयुक्त को गुप्त रखने के निर्देश दिए गए थे। खुफिया विभाग का दावा है कि पुलिस एसोसिएशन के लीडर ने इसे सोमवार सुबह एसएफआई (एसएफआई) को लीक कर दिया। पहली खुफिया रिपोर्ट में सोमवार को सिफारिश की गई कि राज्यपाल के लिए हवाई अड्डे तक जाने के लिए नियमित रास्ते के इतर एक और रास्ता भी तय किया जाना चाहिए। रविवार शाम को सिटी पुलिस कमिश्नर ने इसे गुप्त रखने के लिए ड्यूटी पर तैनात पुलिस अधिकारियों को वायरलेस संदेश भेजा था। सोमवार सुबह दूसरी इंटेलिजेंस रिपोर्ट में विरोध तेज होने की तरफ भी इशारा किया गया था। दोपहर में दी गई तीसरी रिपोर्ट में खुफिया एजेंसी ने यह भी बताया था कि पलायम अंडरपास और पेट्टा सहित तीन जगहों पर विरोध प्रदर्शन की संभावना हैं। इसके साथ ही यह सुझाव दिया गया कि राज्यपाल की सुरक्षा चाक-चौबंद रखने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया जाना चाहिए। खुफिया विभाग का कहना है कि पुलिस अधिकारियों ने रिपोर्ट के मुताबिक न कोई सावधानी बरती और न ही अतिरिक्त सुरक्षा उपाय किए।

इस प्रकरण में कांग्रेस नेता शशि थरूर ने केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान की कार पर एसएफआई के कार्यकर्ताओं के कथित हमले को लेकर मंगलवार को राज्य की एलडीएफ नीत सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि कम्युनिस्ट शासन में पुलिस सत्तारूढ़ दल की ज्यादतियों में सहभागी बनी हुई है। केरल के तिरुवनंतपुरम से सांसद ने कहा, कम्युनिस्ट शासन के तहत पुलिस अराजकता की एजेंट रही है, सत्तारूढ़ पार्टी की सबसे भीषण ज्यादतियों में शामिल रही है। उन्होंने राज्यपाल पर हमले की अनुमति दी, जबकि मुख्यमंत्री के खिलाफ शांतिपूर्ण छात्र प्रदर्शनकारियों के साथ दुर्व्यवहार की अनुमति दी। शर्मनाक। केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री वी. मुरलीधरन ने गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि केरल में कानून-व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई है।

उधर गवर्नर आरिफ मुहम्मद खान ने सार्वजनिक तौर से ऐलान किया कि राज्य में कानून-व्यवस्था के हालात खराब हो गए हैं। राज्यपाल आरिफ मुहम्मद खान ने कहा,ह्वे नाराज हैं क्योंकि मुख्य सचिव द्वारा केरल उच्च न्यायालय के समक्ष एक हलफनामे में वित्तीय स्थिति के बारे में बताए जाने के बाद, मैंने इस पर एक रिपोर्ट मांगी है। मुख्यमंत्री को यह कहते हुए सुना गया कि सरकार को राज्यपाल द्वारा पूछे गए सभी सवालों का जवाब देने की जरूरत नहीं है। किसी सीएम ने कभी ऐसी बात नहीं कही। खान का कहना है कि, ह्वकेरल में, संवैधानिक मशीनरी का पतन शुरू हो गया है। गवर्नर के विरूद्ध प्रदर्शन, हमलावरों का उनकी कार तक पंहुचना, गवर्नर की कार रोकना और कार के शीशे पीटना गंभीरतम मामला है। गवर्नर यह भी कहते हैं कि हमलावर पुलिस की गाड़ियों से आए उनकी कार को रोका। उनके कार से उतरने पर पुलिस के वाहनों से भाग गए। यह भी सूचनाएं हैं कि राज्यपाल के रूट की जानकारी एक पुलिस एसोसिएशन के पदाधिकारी से प्रदर्शनकारियों कैसे पहुंची। वैकल्पिक मार्ग से जाने की सलाह पर भी ध्यान नही दिया गया। केंद्र को चाहिए कि पूरे मामले का गंभीरता से ले। गवर्नर आरिफ मुहम्मद खान की सुरक्षा सुनिश्चित करे। इस पूरे प्रकरण की केंद्रीय न्यायिक आयोग से जांच कराए। आयोग से एक माह में रिपोर्ट से और आयोग द्वारा दिए सुझाव पर कार्वाई सुनिश्चित करे। राज्यपाल की सुरक्षा की चूक के जिम्मेदार पर भी कठोर कार्रवाई हो।

(यह लेखक के निजी विचार है।)

देश में क्या खूंखार डॉग्स को पालने में लगेगी रोक?

योगेश कुमार सोनी

दिल्ली हाई कोर्ट डॉग बाइट और अटैक (कुत्तों के काटने और हमले) की घटनाओं पर सख्त हुआ है। वह अक्टूबर में खतरनाक कुत्तों को रखने के मुद्दे पर अहम आदेश दे चुका है। हाई कोर्ट ने पिटबुल, टेरियर, अमेरिकन बुलडॉग और रॉटविलर जैसे खतरनाक नस्ल के कुत्तों को रखने के लाइसेंस पर प्रतिबंध लगाने और रद्द करने के मुद्दे पर केंद्र सरकार को तीन माह के अंदर निर्णय लेने के लिए कहा। अदालत ने याचिकाकर्ता बैरिस्टर लॉ फर्म के प्रतिवेदन पर जल्द से जल्द विचार करने को कहा है। दरअसल देश में कुत्तों के काटने और हमला करने से कई लोगों की जान जा चुकी है। चिंता की बात यह है कि कुछ लोग तो बिना लाइसेंस के ही खतरनाक नस्ल के कुत्तों को पाल लेते हैं हैं। याचिका में कहा गया था कि ऐसे नस्ल के कुत्तों ने अपने मालिकों सहित अन्य लोगों पर भी हमला किया है।

इस लॉ फर्म ने अदालत का ध्यान दिलाया कि ब्रिटेन के खतरनाक कुत्ते अधिनियम (1991) में पिटबुल और टेरियर को लड़ाई के लिए सूचीबद्ध किया गया था। टाइम मैगजीन के अनुसार अमेरिका में पिटबुल और टेरियर्स की संख्या कुत्तों की आबादी का केवल छह प्रतिशत है लेकिन वर्ष 1982 से कुत्तों के 68 प्रतिशत हमलों और 52 प्रतिशत मौतों के लिए इसी नस्ल के डॉग जिम्मेदार हैं। याचिका के अनुसार आमतौर पर पिट बुल ऐंड टेरियर्स अन्य कुत्तों से ज्यादा आक्रामक होते हैं। ऐसे कुत्तों को प्रतिबंधित करना और उनके पालन-पोषण के लाइसेंस को रद्द करना समय की मांग है। याचिका में दावा किया गया कि यह केंद्र और राज्य सरकार का कर्तव्य है कि लोगों के हित में काम करे और ऐसे खतरनाक नस्लों के कुत्तों के काटने की किसी भी बड़ी घटना के जोखिम से नागरिकों के जीवन को बचाने के लिए प्रभावी कार्रवाई करें। दरअसल ऐसे डॉग्स से मानव जीवन पर प्रहार हो रहा है। जो लोग खतरनाक नस्ल के कुत्ते पालते हैं, उनसे दूसरो को तो खतरा होता ही है, उनकी अपनी जान का भी खतना बना रहता है। स्ट्रीट डॉग से भी बाहरी लोगों का लगातार खतरा रहता है। कुत्तों की संख्या में लगातार वृद्धि होने से मानव जीवन पर संकट आ गया है। बिना वजह लोगों का मरना चिंता विषय है। सुप्रीम कोर्ट भी इस पर संज्ञान ले चुका है। सुप्रीम कोर्ट ने इस पर सरकार को एक्शन लेने आदेश दिया था। कुत्तों के काटने के कारण हुई मौतों में करीब 36 फीसदी लोगों की मौत रेबीज की वजह से होती है। बड़ा तथ्य यह है कि अधिकांश मामले तो रिपोर्ट ही नहीं होते।

भारत में सबसे ज्यादा लावारिस कुत्ते हैं। हमारे यहां ऐसा कानून है ऐसे डॉग्स को मारा नहीं जा सकता। इसकी वजह से इनकी संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। इससे मानव जीवन पर संकट बना हुआ है। इसके अलावा लावारिस पशुओं की वजह से हर रोज कई लोगों की जान जा रही है। इसके बचाव लिए सरकारों के पास कोई भी प्लान नही हैं। दुखद यह है कि वाघ बकरी के मालिक पराग देसाई भी डॉग अटैक का शिकार होकर चल बसे। इस हाई प्रोफाइल व्यक्ति की मौत पर कई दिनों तक चर्चा हुई। हालांकि देश में हर रोज ऐसी सैकड़ों मौतें होती हैं। कुछ समय पहले दिल्ली में एक प्रोफेसर को कुत्तों ने नोच-नोच कर मार डाला था। दरअसल ऐसी मौतों को हत्या नहीं माना जा सकता, लेकिन यदि इसकी गंभीरता को समझा जाए तो यह सवालों के घेरे में संबंधित विभाग आता है, क्योंकि लावारिस कुत्तों को नियंत्रित करने के लिए अच्छा खासा बजट होता है। कई बार तो ऐसी खबरें सामने आई हैं जब छोटे बच्चों को भी कुत्तों ने नोच कर खा लिया। बीते दिनों एक खाना देने वाले डिलीवरी ब्वॉय को पीछे कुत्ते पड़ गए। वह जान बचाकर भागा। मोटरसाइकिल की गति तेज कर दी। इससे बैलेंस नहीं बन पाया और एक खंभे से टकरा कर बेमौत मारा गया।

एनिमल बर्थ कंट्रोल रूल्स की एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में सबसे ज्यादा लावारिस कुत्तों के हमले भारत में होते हैं। इस मामले में याचिकाकर्ता बैरिस्टर लॉ फर्म ने आरोप लगाया था कि खतरनाक नस्लों के कुत्ते भारत सहित 12 से अधिक देशों में प्रतिबंधित हैं, लेकिन दिल्ली नगर निगम अभी भी इनका पंजीकरण पालतू जानवर के रूप में कर रहा है। ऐसे कुत्तों की खरोद-फरोख्त करने वालों को भी यह समझना होगा कि वह इन नस्लों को आगे न बढ़ाएं और पालें। दरअसल देशभर के तमाम लोग खतरनाक कुत्तों को प्रजनन करके उनको बेचने का व्यापार करते हैं। यदि सरकार इनको रखने के लिए लाइसेंस नहीं भी देगी तो वह चोरी से इनको रखेंगे। इसलिए सरकार को इसके लिए विशेष अतिरिक्त विभाग बनाकर बड़ा काम करना होगा। यह काम जितना आसान लग रहा है, उतना है नहीं। सबसे पहले तो इसके प्रजनन पर प्रतिबंध लगाना होगा। जब ही नस्ल आगे नहीं बढ़ेगी, तो यह खत्म हो जाएगी। दूसरा खरीद-फरोख्त पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना भी बड़ा उपाय हो सकता है। कानून-कायदों का उल्लंघन करने पर कड़ी सजा का प्रावधान भी कारगर हो सकता है।

शिवराज की एक और अग्निपरीक्षा

राकेश अचल

भाजपा विधायक और मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान अभी अप्रासंगिक नहीं हुए हैं। भाजपा है कमान उन्हें भले ही कहीं और प्रतिष्ठित कर दे किन्तु उन्हें राजनीति में एक और अग्निपरीक्षा देना पड़ सकती है ,शिवराज की राजनीति में अब लाड़ली बहना योजना अब भाजपा और शिवराज दोनों के लिए गले की हड्डी बन गयी है।

मप्र के मुख्यमंत्री रहते हुए शिवराज सिंह चौहान ने चुनाव से ठीक सात महीने पहले लाड़ली बहना योजना शुरू की थी इस योजना के तहत मप्र की महिलाओं को प्रति माह एक हजार रुपए देना शुरू किया गया था । सरकार ने इस योजना के तहत महिलाओं को प्रति माह 250 रुपए बढ़ते हुए ये राशि तीन हजार रुपए तक करने की घोषणा की थी। इस योजना के तहत प्रदेश की सवा करोड़ से अधिक महिलाओं ने आवेदन किये और उन्हें इस योजना के तहत राशि देना शुरू किया गया था । प्रदेश में नेतृत्व परिवर्तन के बाद महिलाओं के खाते में सातवीं किश्त पहुँच गयी है ,लेकिन आशंका जताई जा रही है कि मोहन यादव सरकार इस योजना को या तो बंद करेगी या फिर इसके स्वरूप में परिवर्तन करेगी। योजना का नाम और नियम भी बदले जा सकते हैं।

विधानसभा चुनाव में लाड़ली बहना योजना एक तरह से गेम चेंजर रही लेकिन भाजपा है कमान ने इस योजना का न कहीं कोई जिक्र किया और न शिवराज सिंह चौहान को चुनाव में जीत का श्रेय दिया। चुनाव के बाद शिवराज सिंह को जब मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया तो लाड़ली बहना योजना से जुड़ी महिलाएं बिलखने लगी । उन्होंने शिकायत की कि उन्होंने ने तो शिवराज सिंह को मुख्यमंत्री बनाने के लिए वोट दिया था। खुद शिवराज सिंह चौहान नए मुख्यमंत्री का नाम घोषित होने के बाद आभार प्रदर्शन के लिए अपनी लाड़ली बहनों के बीच पहुँच गए थे ,उन्हें उम्मीद थी कि पार्टी है कमान उन्हें ही पांचवीं बार मुख्यमंत्री बनाएगा। शिवराज सिंह की लोकप्रियता को दरकिनार करते हुए पार्टी है कमान ने श्री मोहन यादव को मप्र का नया मुख्यमंत्री बनाने का फैसला किया तो न सिर्फ शिवराज सिंह के पांवों के नीचे की जमीन खिसक गयी अपितु लाड़ली बहनायें भी रुआंसी हो गयीं। महिलाओं को आशंका है कि शिवराज सिंह चैहान के मुख्यमंत्री न बनने की दशा में उन्हें मिलने लाभ से वंचित किया सकता है। सवाल ये है कि अव्वल तो ये योजना बंद करने का जोखिम नए मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव लेंगे नहीं ,और यदि वे ऐसा करते हैं तो क्या शिवराज सिंह चौहान पार्टी अनुशासन की अनदेखी कर उसी तरह मैदान में कूदेंगे ,जिस तरीके केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया कांग्रेस में रहते हुए किसानों के मुद्दे को लेकर उस समय की कांग्रेस सरकार के खिलाफ बागी हो गए थे। किसानों के मुद्दे को लेकर ही सिंधिया और तत्कालीन मुख्यमंत्री कमलनाथ में तकरार शुरू हुई था । सिंधिया ने उस समय की अपनी ही पार्टी की सरकार को चेतावनी दी थी कि यदि किसानों कि मांगों की अनदेखी की गयी तो वे सड़कों पर उतर आएंगे। कमलनाथ ने सिंधिया कि धमकी को गंभीरता से नहीं लिया था और कह दिया था कि सिंधिया को रोका किसने हैं ? जानकार कहते हैं कि शिवराज सिंह चौहान सिंधिया जैसा साहस नहीं रखते । यदि लाड़ली योजना बंद भी हुई तो भी शिवराज सिंह चूं तक नहीं कर सकते,पार्टी के प्रति बगावत का तो सवाल ही नहीं उठता। उनके सामने पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती के अलावा पार्टी से बगावत करने वाले दूसरे अनेक नेताओं का हश्र भी सबके सामने है। उनमें सिंधिया जितना दुस्साहस भी नहीं कि वे पार्टी नेतृत्व से इस मुद्दे पर टकरा जाएँ।

लाड़ली बहना योजना के भविष्य को लेकर उठायी जा रही आशंकाओं के बीच पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की मजबूरी है मौन रहना ,क्योंकि चार बार के मुख्यमंत्री के रूप में भी वे अपने बेटों को राजनीति में स्थापित नहीं कर पाए । वे यदि इस समय पार्टी के मौजूदा नेतृत्व और निर्णय के खिलाफ खड़े होते हैं तो उनके बेटों का भविष्य बाधित होता है। शिवरज सिंह चौहान के लिए बहनों से ज्यादा बेटे महत्वपूर्ण हैं। वे किसी भी सूरत में भाजपा के मौजूदा नेतृत्व की तरह बगावत नहीं कर सकते। मुमकिन है कि वे भी तत्कालीन मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर की तरह मोहन यादव के मंत्री मंडल में शपथ लेते हुए नजर आ जाए। हालाँकि पार्टी नेतृव उन्हें मप्र में रखकर मुख्यमंत्री मोहन यादव के लिए मुसीबत पैदा नहीं करना चाहेगा

भाजपा और शिवराज सिंह चौहान की स्थिति ऐसी हो गयी है कि तो को और,न मो को ठौर अर्थात दोनों का एक-दूसरे के बिना काम नहीं चल सकता। शिवराज न अपनी पार्टी से बगावत कर नई पार्टी बना सकते हैं और न ही दल-बदल कर कांग्रेस में शामिल हो सकते हैं। उन्हें पार्टी हाईकमान जहाँ काम देगा वे वहीं काम करेंगे। विसंगति सिर्फ इतनी है कि समय शिवराज सिंह चौहान के अनुकूल नहीं है। वे त्रिशंकु हो गए है। वे घर के रहे न घाट के। मप्र में नेतृत्व कि दौड़ में पिछड़े पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद पटेल हों या कैलाश विजयवर्गीय कि स्थिति शिवराज सिंह चौहान से सर्वथा भिन्न है इनमें से कोई न यशवंत सिन्हा हो सकता है और न शत्रुघ्न सिन्हा।

(यह लेखक के निजी विचार है।)

संसद भवन की सुरक्षा में बड़ी सेंध

एक ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपनी पार्टी के दो नवनिर्वाचित मुख्यमंत्रियों- मध्यप्रदेश में डॉ. मोहन यादव और छत्तीसगढ़ में विष्णुदेव साय के शपथ ग्रहण समारोह में शिरकत कर रहे थे, उसी दौरान नए संसद भवन को चार लोगों ने अपने निशाने पर ले लिया। इन लोगों ने लोकसभा के भीतर रंगीन धुआं छोड़ दिया। लोकसभा में दर्शक दीर्घा से दो लोगों ने छलांग लगाकर साबित कर दिया कि देश की सबसे बड़ी पंचायत अब भी वैसी ही असुरक्षित है जिस प्रकार आज से ठीक 22 साल पहले थी जब इसी दिन पुराने भवन पर एक बड़ा आतंकी हमला हुआ था। संयोग से तब भी भाजपा की ही सरकार थी। हालांकि उस घटना और आज के घटनाक्रम के स्वरूप में बड़ा फर्क है लेकिन जो बात स्पष्ट तौर पर उभरकर आई है, वह यही कि सुरक्षा अब भी एक बड़ा मुद्दा है। दोपहर करीब एक बजे आसंदी पर वरिष्ठ सदस्य राजेन्द्र अग्रवाल विराजमान थे और पश्चिम बंगाल के माल्हदा के सांसद खरगेन मुर्मु अपने सवाल पूछ रहे थे। तभी एक व्यक्ति दर्शक दीर्घा से कूद पड़ा और नारे लगाता हुआ एक से दूसरी बेंच पर छलांगें लगाने लगा। वह अपने जूते से रंगीन धुंआ छोड़ने वाला स्प्रे निकालने के लिये प्रयासरत भी दिखा। उसके पीछे-पीछे एक महिला ने भी छलांग लगा दी। वे लोग नारेबाजी कर रहे थे।

सदन में तैनात मार्शल तो बाद में हरकत में आये, कांग्रेस और बसपा के सांसदों ने घेराबन्दी कर उन्हें पकड़ लिया। तत्पश्चात मार्शलों के द्वारा वे पुलिस के हवाले कर दिये गये।

समस्या ग्रस्त को अधिकारी करें संतुष्टः डीएम

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला की मौजूदगी में संपूर्ण समाधान दिवस में फरियादियों की समस्यायें सुनीं।

शनिवार को तहसील सभागार मानिकपुर में जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला ने संपूर्ण समाधान दिवस में आईं समस्या निस्तारण रजिस्टर देखा। निस्तारण आख्या भी देखी। मातहत अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिन समस्याओं

तहसील मानिकपुर में समस्या सुनते डीएम-एसपी।

का निस्तारण हो रहा है, समस्या ग्रस्त व्यक्ति को भी बतायें, ताकि वह समस्या के निस्तारण से संतुष्ट हो सके। उन्होंने जिला स्तरीय अधिकारियों से कहा कि शासन से निर्धारित समय सीमा में समस्या निस्तारण शासन की मंशानुसार करायें। जिन-जिन विभागों की आज समस्यायें मिली हैं, उनका मौके पर जाकर निस्तारण करायें। एसडीएम व थाना प्रभारियों से कहा कि भूमि संबंधी मामले में राजस्व, चकबंदी व पुलिस की संयुक्त टीम लेकर मौके पर निस्तारण करायें।

उन्होंने कहा कि शासन के कडे निर्देश है कि जमीन बाबत मामलों का तत्काल निस्तारण करायें। पुलिस अधीक्षक ने थाना प्रभारियों को निर्देश दिए कि महिला संबंधी विवाद जल्द निस्तारित करें। इस मौके पर एसडीएम रामजन्म यादव, सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी, डीएफओ डॉ नरेन्द्र कुमार सिंह, डीडीओ आरके त्रिपाठी, तहसीलदार मानिकपुर वाचस्पति सिंह, डीपीआरओ कुमार अमरेंद्र, बीडीओ धनंजय सिंह, सीबीओ डॉ सुभाष चंद्र, अग्रणी जिला प्रबंधक इंडियन बैंक तुलसीराम, जिला समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेंद्र सिंह भदौरिया, बंदोबस्त अधिकारी मनोहरलाल धर्मान, एक्सईएन लोनिवि निर्माण खंड कृष्ण कुमार आदि मौजूद रहे।

समस्या ग्रस्त व्यक्ति दुबारा न हो परेशानः एसडीएम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एसडीएम राजापुर प्रमोद कुमार झा व एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी तथा सीओ श्रीमती निष्ठा उपाध्याय ने सम्पूर्ण समाधान दिवस तहसील राजापुर में फरियादियों की समस्यायें सुनकर निस्तारण के मातहतों को निर्देश दिये।

शनिवार को एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी, एसडीएम राजापुर प्रमोद कुमार झा, सीओ राजापुर श्रीमती निष्ठा उपाध्याय ने तहसील सभागार राजापुर में सम्पूर्ण समाधान दिवस में आये फरियादियों की शिकायतें सुनकर मातहतों को जल्द निस्तारण के निर्देश दिये। कहा कि भूमि विवाद

राजापुर तहसील में समस्या सुनते अधिकारीगण।

के मामलों को पुलिस व राजस्व की संयुक्त टीम को मौके पर भेजकर निस्तारण करायें। एसडीएम प्रमोद कुमार झा ने कहा कि सम्पूर्ण समाधान दिवस के मामलों की समीक्षा शासन स्तर से की जाती है। ऐसे में सभी अधिकारी समस्याओं को गुणवत्तापूर्ण ढंग से हल करें, ताकि समस्या ग्रस्त व्यक्ति को दुबारा परेशान न होना पडे। इस मौके पर थानाध्यक्ष मनोज कुमार आदि मौजूद रहे।

एसपी के निर्देश पर पांच पर गैंगेस्टर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक मऊ राजेश कुमार द्विवेदी ने संगठित गिरोह बनाकर समाज विरोधी क्रियाकलाप व गौ तस्करी जैसे संगीन अपराध करने वाले आर्थिक-भौतिक लाभ लेने वाले फतेह मुसलमान पुत्र इकबाल निवासी

एसपी श्रीमती वृन्दा शुक्ला।

चंदेल पुरवा मजरा बियावल, दिनेश यादव पुत्र गोली यादव निवासी पिपरौंध, साधू उर्फ सधुवा पुत्र बहिरा निवासी पिपरौंध, गजनी उर्फ यादवेन्द्र सिंह पुत्र जगदीश सिंह निवासी 247ए/6ए/7ए/7क्यू ओमगायत्री नगर थाना कर्नलगंज जिला प्रयागराज व मो सईद उर्फ बबलू चिकना पुत्र जहूर निवासी मलाकमोउद्दीन मजरा महगांव थाना चरवा जिला कौशाम्बी पर गैगेस्टर एक्ट की कार्यवाही की है। इससे अपराधी तत्वो में खलबली मची है।

साढे तीन किलो गांजा समेत एक दबोचा

पुलिस गिरफ्त में गांजा कारोबारी।

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर मादक पदार्थों की तस्करी एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक सरधुवा जयप्रकाश उपाध्याय की अगुवाई में अपराध निरीक्षक अंजनी कुमार सिंह की टीम ने अरुण सिंह पुत्र अमर सिंह निवासी हूसेपुर थाना बिन्दकी जिला फतेहपुर को तीन किलो छह सौ ग्राम गांजा समेत गिरफ्तार किया। उस पर एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया। टीम में अपराध निरीक्षक अंजनी कुमार सिंह, दीवान अरविन्द सोनी व सिपाही मेहेन्द्र कुमार शामिल रहे।

18 क्वार्टर शराब समेत एक दबोचा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर श्रीमती रीता सिंह की अगुवाई में चैकी प्रभारी सरैया यदुवीर सिंह की टीम ने ओमप्रकाश उर्फ राजू यादव पुत्र माताबदल निवासी पवारी पडरी मजरा मदना के कब्जे से 18 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया। उस पर थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया। टीम में चैकी प्रभारी सरैया यदुवीर सिंह व सिपाही रोहित यादव शामिल रहे।

एलईडी वाहन को हरीझंडी दिखा किया रवाना

चित्रकूट। प्रवर्तन विवेक शुक्ला ने बताया कि द्वितीय सड़क सुरक्षा पखवाड़ा 15 से 31 दिसम्बर तक चल रहा है। शनिवार को परिवहन विभाग के प्रवर्तन अधिकारी/एआरटीओ विवेक कुमार शुक्ला, सम्भागीय निरीक्षक प्राविधिक गुलाब चन्द्र व यात्रीकर/मालकर अधिकारी डॉ सन्तोष कुमार तिवारी ने जिले के तहसीलवार एवं ब्लाकवार एलईडी युक्त प्रचार वाहन को हरीझंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यालय में स्थापित पब्लिक एडेज्स सिस्टम से आये लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया। सोशल मीडिया व अन्य माध्यम से आमजनता को सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियमों का बडे पैमाने पर प्रचार-प्रसार किया।

भ्रष्टाचार में आकंठ डूबा है चकबंदी विभाग

मूल चक से दो किमी दूर बना दिया पांच बिसवा का चक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। चकबंदी प्रक्रिया से जिले के कास्तकार खासे परेशान हैं। चकबन्दी विभाग पूरा का पूरा भ्रष्टाचार में गोते लगा रहा है। चकबन्दी अधिकारियों पर किसी का नियंत्रण नहीं है। वे हर जगह मनमानी पर उतारु रहते हैं। ऐसे में जिले में चकबन्दी विभाग के प्रति लोगों में आक्रोश उभर रहा है। चकबन्दी विभाग के गोलमाल का खुलासा शनिवार को हुआ। बताया गया कि मानिकपुर तहसील के खरौंध मजरा में चक बनाते समय पूर्व एसीओ व कानूनगो ने चक बनाने में दो बीघा जमीन छोड़ दी थी। कास्तकार को चक परिवर्तन का पता चला कि जमीन कम है, तो कास्तकार राधेरमण व रामसूरत पुत्र मतगंजन प्रसाद ने उच्चाधिकारियों से गुहार लगाई। चकबंदी अधिकारी के यहां मामला दायर किया। पूर्व चकबंदी अधिकारी ने उच्चाधकारियो के आदेश पर छह माह बाद फैसला किया। कास्तकार के मूल नंबर पर पांच बिसवा का चक बना दिया, जबकि मूल चक से दो किमी दूर है। चकबंदी अधिकारी को मूल चक के पास ही चक देना चाहिए। पांच बिसवा का अलग चक होना ही नही चाहिए। पूर्व चकबंदी अधिकारी ने रुपये न मिलने से कास्तकार को परेशान करने की गरज से ऐसा किया है। पूर्व चकबंदी अधिकारी के खिलाफ कास्तकारों ने पैसा लेकर गलत कार्य करने का आरोप लगाया है। पूर्व अधिकारी को शासन से बर्खास्त भी किया जा चुका है। एक वर्ष बाद फिर से बहाल हुए, और पुनः गलत कार्य पर आमादा हो गये।

पुनः बंदोबस्त अधिकारी चकबंदी के यहां कास्तकार ने आदेश के खिलाफ मामला दायर किया। उन्होंने भी यही हाल किया, जबकि पूरी गलती चकबंदी विभाग की है। आखिर ऐसी गलती क्यों की कि दो बीघा का पूरा नंबर ही उड़ा दिया। छोटे कास्तकारों के छोटे-छोटे चक होने चाहिए, वह भी दो किमी दूर पांच बिसवा के चक के क्या मायने हैं। चकबंदी विभाग पूरा का पूरा भ्रष्टाचार में डूबा है। ये महज दबाव व पैसों के बूते काम करता है। नीचे से ऊपर तक चकबंदी विभाग के कर्मचारी व अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। सही जांच हो तो 80 फीसदी कर्मचारी-अधिकारी नपेंगे।

गांजा तस्कर को हुई तीन वर्ष की सजा, बीस हजार का हुआ जुमार्ना

चित्रकूट। सूबे के पुलिस महानिदेशक के जारी आपरेशन कन्विक्शन के तहत न्यायालय में लम्बित वादों में पैरवी कर अपराधियों को सजा दिलाने को पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निदेर्शों के अनुपालन में प्रभारी निरीक्षक मऊ राजेश कुमार द्विवेदी व पैरोकार आनंद कुमार की पैरवी से गांजा तस्करी आरोपी को न्यायालय ने तीन वर्ष की सजा व बीस हजार रुपये के जुमार्ना से दंडित किया। शनिवार को सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता सनद कुमार मिश्रा की प्रभावी बहस के चलते न्यायालय अपर जनपद न्यायधीश/एफटीसी (न्यू) सुशील कुमार वर्मा ने मऊ थाने में दर्ज एनडीपीएस एक्ट के आरोपी धनराज केवट उर्फ पांडे पुत्र रामफल निवासी गढवा को तीन वर्ष की सजा व बीस हजार रुपए के जुमार्ना से दंडित किया।

अपहरण का वांछित दबोचा

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर वारंटी/वांछित की गिरफ्तारी को जारी अभियान में प्रभारी निरीक्षक मऊ राजेश कुमार द्विवेदी की अगुवाई में दरोगा कृपानंद शर्मा की टीम ने अपहरण, गाली-गलौज व जान से मारने की धमकी के वांछित सारुल पुत्र भगवानदास निवासी रेडी भुसौली को गिरफ्तार किया। टीम में दरोगा कृपानंद शर्मा व सिपाही प्रवीण कुमार शामिल रहे।

कार्य पूरा न होने पर ठेकेदार-प्रोजेक्ट मैनेजर पर होगी रिपोर्टः डीएम

डीएम ने आडिटोरियम आदि का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने रुर्बन मिशन के तहत निमार्णाधीन मल्टी पर्पज ऑडिटोरियम कर्वी व उद्यमिता विकास प्रशिक्षण केंद्र एवं जीबीपीआर कंपनी से बनाए जा रहे सीडब्लूआर-5 पंप हाउस पटा मानिकपुर का निरीक्षण कर प्रोजेक्ट मैनेजर को निर्देश दिये कि जल्द कारपेट बिछाने का कार्य शुरू करें।

शनिवार को जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द ने डीडीओ को निर्देश दिये कि निरीक्षण करें कि कार्य हो रहा है या नहीं। ऑडिटोरियम में चेयर, पेन्टिग,

निरीक्षण करते डीएम।

स्टोन ग्लैडिग, मिट्टी भराई बाबत जानकारी ली। प्रोजेक्ट मैनेजर ने बताया कि 31 दिसंबर तक कार्य पूरा कर लिया जायेगा। उन्होंने निर्देश दिये कि समय से कार्य पूरा न होने पर ठेकेदार व प्रोजेक्ट मैनेजर पर रिपोर्ट दर्ज कराई जाएगी। विकास भवन में बन रहे रुर्बन मिशन के तहत उद्यमिता प्रशिक्षण केंद्र देखा। कार्यदाई संस्था को निर्देश दिये कि पेन्ट व लाइट के बचे कार्य जल्द पूरा करायें।

उन्होंने मानिकपुर के पटा में बन रहे सीडब्लूआर-5 पंप हाउस देखा। प्रोजेक्ट मैनेजर ने बताया कि पटा से सरहट तक पानी आपूर्ति की जायेगी। जिलाधिकारी ने कहा कि पाइप नहीं है तो जल्द मंगवायें। कार्य न करने पर टर्मिनेट कर दिया जाएगा। अपर जिलाधिकारी नमामि गंगे को निर्देश दिये कि क्लस्टर हेड को बुलायें, तभी कार्य आगे बढ़ेगा। जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्थाओं को निर्देश दिये कि समय सीमा के भीतर कार्य न होने पर कार्रवाई की जाएगी।

शासन की मंशानुसार गुणवत्तापूर्ण कार्य न होने पर कोई लापरवाही नहीं होनी चाहिए। इस मौके पर सीडीओ अमृतपाल कौर, एडीएम नमामि गंगे सुनंदू सुधाकरण, डीडीओ राजकुमार त्रिपाठी, डीसी मनरेगा धर्मजीत सिंह, एक्सईएन जल निगम संजय कुमार गुप्ता, प्रोजेक्ट मैनेजर रामफल व जीवीपीआर श्रीनिवासन मौजूद रहे।

काली घाटी में अब नहीं होंगे हादसेः डीएम

अखंड भारत संदेश

मानिकपुर/चित्रकूट। तहसील मानिकपुर काली घाटी में हो रहे सड़क हादसों के मद्देनजर जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला ने काली घाटी का निरीक्षण कर लोनिवि एक्सईएन कृष्ण कुमार को नये निर्माण के निर्देश दिये।

शनिवार को डीएम-एसपी ने काली घाटी का निरीक्षण कर लोनिवि निर्माण खंड-1 कृष्ण कुमार को निर्देश दिए कि काली घाटी सड़क मंदिर के पीछे से सड़क का प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजा जाये। तब तक घाटी में सड़क चैड़ीकरण की जाये। जहां-जहां घाटी पर नीचे से ऊपर तक मोड हैं, वहां रंबल स्टेप ब्रेकर बनाए जायें। स्पीड को संकेतक बोर्ड लगाये जायें, ताकि हादसों को रोका जा

सके। जिलाधिकारी की हादसों को रोकने की संवेदनशील पहल का क्षेत्रवासियों ने स्वागत किया है। क्षेत्रवासियों ने कहा कि जिलाधिकारी को जनहित के मामलों में इसी तरह की पहल की अपेक्षा है।

अधिवक्ता संघ चुनाव

नामांकन समाप्त, प्रचार में आई तेजी

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। *जिला बार एसोसिएशन के नामांकन तिथि समाप्ति से प्रत्याशियों का प्रचार तेज हो गया है। अध्यक्ष पद पर अवधेश मिश्रा, संजय करवरिया व सुरेश पटेल प्रभु किस्मत आजमा रहे हैं। महासचिव पद पर मनोज कंचनी, राजेश चैहान, पंकज त्रिपाठी, चंद्रमौली मिश्रा, सचिन श्रीवास्तव, राजकुमार यादव शामिल हैं।*

शनिवार को वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर आनन्द मिश्रा, शिवकुमार सिंह, अशोक शुक्ला, कोषाध्यक्ष पद पर मनमोहन चतुर्वेदी, शिवकुमार कुशवाहा, कनिष्ठ उपाध्यक्ष व कार्यकारिणी पर निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। चुनावी प्रतिक्रिया देते हुए एडवोकेट काउंसिल के जिला प्रभारी रामप्रकाश पाण्डेय एड ने कहा कि जो प्रत्याशी कभी वकीलों के हित में खड़ा नहीं हुआ। वकीलों के विपरीत काम किया है, ऐसे प्रत्याशियों को वकील नकार देंगे। अधिवक्ता हित को सर्वोपरि बताते हुए उस प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करेंगे। वरिष्ठ अधिवक्ता आनन्द मिश्रा ने कहा कि वकीलों को आपसी प्रेम-सौहार्द व तालमेल बनाए रखना चाहिए। चुनाव एक पर्व है, खुशी-खुशी इसे लेना चाहिए।

दस करोड़ गरीबों को धुआ की जिन्दगी से मोदी ने निकाला बाहरः सांसद

मोदी की गारंटी गाडी का गर्मजोशी से हुआ स्वागत

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत जिले के मऊ ब्लाक के तिलौली गांव में भारत संकल्प यात्रा मोदी की गारंटी वाली गाड़ी का ढोल-नगाड़ों से गर्मजोशी से स्वागत हुआ।

शनिवार को गारंटी वाली गाड़ी से ग्रामीणों ने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को वर्चुअल सुना। इस मौके पर हुई गोष्ठी में सांसद आरके सिंह पटेल ने कहा कि प्रत्येक लाभार्थी तक योजनाओं का लाभ पहुंचे, ये मोदी की गारंटी है। मोदी ने देश में 65 लाख घरों तक बिजली पहुंचाई है। ग्रामीण परिवारों में देश में दस करोड़ से अधिक उज्जवला गैस सिलेंडर देकर गरीब परिवारों के जीवन को धुआ की जिंदगी से बाहर किया है।

प्रत्येक गरीब परिवार के जीवन को गरीबी से ऊपर उठाने की सोंच मोदी रखते हैं। मोदी ने देश में चार करोड़ से अधिक परिवारों को पक्की छत देने का काम किया है। देश में 11 करोड़ से अधिक किसानों को 2.6 लाख करोड़ रुपये से किसान सम्मान निधि दी जा रही है, ताकि किसान कर्जदार न बनें। हर घर नल से

मोदी को वर्चुअल सुनते ग्रामीण।

जल जीवन मिशन से प्रत्येक परिवार को पीने योग्य पानी पहुंचाने की मोदी की गारंटी है।

मऊ-मानिकपुर विधायक अविनाश चंद्र द्विवेदी, मंडल अध्यक्ष ओमप्रकाश बालाजी, जिला पंचायत सदस्य विनीत द्विवेदी, बीडीओ रामजी मिश्रा, राधेश्याम मिश्रा, केशव त्रिपाठी, मनोरमा सिंह, श्रीकांत द्विवेदी, कृष्ण कुमार, राकेश कौशल, दिलीप कुमार सिंह, रामबली सिंह, डॉ हारून, जयपाल, इंद्र नारायण पांडे, प्रेम भान सिंह, शक्ति प्रताप सिंह तोमर, राजकुमार त्रिपाठी, आशीष रघुवंशी, शिवाकांत पांडे आदि मौजूद रहे।

विवाद भूल खुशी-खुशी रहने को तैयार हुए दम्पति

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृन्दा शुक्ला के निर्देश पर सामाजिक रिश्तों को बचाने के प्रयास में पुलिस कार्यालय स्थित परिवार परामर्श केन्द्र पुलिस टीम ने दम्पति के आपसी विवाद को सुलह करा परिवार को टूटने से बचाया। शनिवार को बहिलपुरवा थाने के तख्तूपुर गांव के जयगोपाल पुत्र सदल ने पुलिस अधीक्षक को सौंपे पत्र में कहा कि पुत्री मिथिला को पति पप्पू पुत्र देशराज व ससुरालीजन घर में रहने नहीं देते। मानसिक रुप से प्रताडित कर गाली-गलौज करते हैं। पुलिस अधीक्षक ने प्रभारी परिवार परामर्श केन्द्र को पत्र निस्तारण को भेजा। परिवार परामर्श केन्द्र में तैनात महिला सिपाही शिवांगनी श्रीवास्तव ने शिकाय को सुन-समझकर दूसरे पक्ष को पुलिस कार्यालय बुलाया। दोनों पक्षों को भविष्य में विवाद न करने व पारिवारिक कर्तव्यों का पालन करने की बात कही। आपसी सुलह होने पर दोनों पक्षों ने तालमेल से रहने का भरोसा दिया।

दम्पति को पुलिस ने किया एक।

मोसाद प्रमुख डेविड बार्निया की यूरोप में होगी कतर के प्रधानमंत्री से मुलाकात

तेल अवीव। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने मोसाद प्रमुख डेविड बार्निया को कतर के प्रधानमंत्री के साथ बंधक समझौते पर बातचीत के लिए यूरोप भेजने का फैसला किया है। यह जानकारी इजराइल के अखबार द टाइम्स ऑफ इजराइल ने शनिवार को अपनी वेबसाइट पर साझा की।

द टाइम्स ऑफ इजराइल ने एक्सियोस की रिपोर्ट के हवाले से कहा है कि नेतन्याहू ने बंधक सौदे की दिशा में बातचीत फिर से शुरू करने के लिए मोसाद प्रमुख को यूरोप भेजने का फैसला किया है। बार्निया की इस सप्ताह के अंत में यूरोप में कतर के प्रधानमंत्री मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान अल थानी से मिलने की उम्मीद है।

उल्लेखनीय है कि इससे पहले इजराइल और हमास के बीच एक और युद्धविराम कराने की कोशिशों को झटका लग चुका है। दरअसल इजराइल की तरफ से युद्ध विराम पर चर्चा के लिए मोसाद चीफ कतर जाने वाले थे लेकिन उनकी यह यात्रा रद्द कर दी गई। मोसाद प्रमुख की यात्रा रद्द होने पर इजराइली बंधकों के परिजनों ने नाराजगी जताई और सरकार से जवाब मांगा है।

लुफ्थांसा एयरलाइंस 8 जनवरी से इजराइल के लिए फिर शुरू करेगी उड़ान

फ्रैंकफर्ट। इजराइल और हमास के बीच जारी युद्ध के बीच जर्मन एयरलाइन लुफ्थांसा ने शुक्रवार को बड़ा एलान करते हुए 8 जनवरी 2024 से इजराइल के लिए फिर से उड़ानों को शुरू करने की घोषणा की है। लुफ्थांसा ने कहा है कि इजराइल पर हमास के हमलों के बाद से हवाई सेवा निलंबित कर दी गई थी। लुफ्थांसा ने अपने बयान में कहा कि समूह शुरूआत में तेल अवीव से आने-जाने के लिए कुल 20 साप्ताहिक फ्लाइट्स की पेशकश करेगा। यह परिचालन लुफ्थांसा के नियमित उड़ानों का लगभग 30 प्रतिशत है। वहीं, एयरलाइन ने कहा है कि 13 अक्टूबर से बेरूत के लिए निलंबित चल रही उड़ानें शुक्रवार को फिर से शुरू कर दी गईं। लुफ्थांसा एयरलाइंस फ्रैंकफर्ट और म्यूनिख से फ्लाइट कनेक्शन की पेशकश करेगी, जबकि ऑस्ट्रियन एयरलाइंस और स्विस एयरलाइंस भी तेल अवीव के लिए उड़ान सेवा फिर से शुरू करेंगे।

बता दें कि लुफ्थांसा ने 9 अक्टूबर को इजराइल के लिए उड़ानों पर रोक लगा दी थी। वहीं, हमले के बाद ब्रिटिश एयरवेज, एयर फ्रांस-केएलएम और अमेरिकी एयरलाइन डेल्टा सहित अन्य एयरलाइनों ने भी तेल अवीव के लिए उड़ानों में कटौती कर दी थी। बता दें कि इजरायल के हमले में गाजा में अबतक 18,700 से अधिक लोग मारे गए हैं। इसमें ज्यादातर महिलाएं और बच्चे शामिल हैं। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि गाजा के 24 लाख लोगों में से 19 लाख लोग युद्ध के कारण विस्थापित हो चुके हैं।

ईरान में रस्क पुलिस मुख्यालय पर आतंकी हमला, 11 की मौत

तेहरान। ईरान के रस्क पुलिस मुख्यालय पर रात करीब दो बजे हुए आतंकी हमले में वरिष्ठ पुलिस अफसरों समेत 11 लोग मारे गए। हमले में कई लोग घायल बताए जा रहे हैं।

प्रमुख अखबार तेहरान टाइम्स के अनुसार, रस्क पुलिस मुख्यालय दक्षिण-पूर्वी ईरान में है। सिस्तान और बलूचिस्तान प्रांत के डिप्टी गवर्नर अली रेजा मरहेमाती ने शुक्रवार को कहा कि यह स्थान तेहरान से लगभग 1,400 किलोमीटर दूर है। इस हमले में वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और कई अन्य सैनिक मारे गए। मरहेमाती ने इस हमले के लिए आतंकवादी समूह जैश-अल-अदल को जिम्मेदार ठहराया है। इससे पहले जैश अल-अदल ने एक बस पर आत्मघाती बम विस्फोट की जिम्मेदारी ली थी। विस्फोट में ईरान रिवोल्यूशनरी गार्ड के 27 सदस्य मारे गए थे।

अखबार ने मरहेमाती के हवाले से कहा है कि जवाबी कार्रवाई में कई आतंकवादी मारे गए। पुलिस प्रवक्ता ने घात लगाकर किए गए हमले को "कायरतापूर्ण और आतंकवादी हमला" कहा है। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार हमले की जिम्मेदारी आतंकवादी समूह जैश अल-अदेल समूह ने ली है।

इमरान खान को तोशाखाना मामले में दो दिन की एनएबी की हिरासत में भेजा गया

इस्लामाबाद,। पाकिस्तान की एक अदालत ने तोशाखाना भ्रष्टाचार मामले में जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को गुरुवार को दो दिन के लिए राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) की हिरासत में भेज दिया।

नेपाल में बढ़ी चीन की दखलंदाजी, चीनी कंपनी को टेंडर दिलाने के लिए हुए मनमाफिक बदलाव

काठमांडू। नेपाल में चीन की दखलंदाजी और प्रभाव किस हद तक बढ़ा है, इसका भंडाफोड़ हुआ है। यह दखलंदाजी सरकार, ब्यूरोक्रेसी या राजनीतिक दल के भीतर नहीं बल्कि सबसे संवेदनशील विभाग सेना के भीतर देखने को मिली है। चीन की घुसपैठ नेपाली सेना के भीतर किस हद तक बढ़ गई है उसका यह ताजा उदाहरण है। नेपाल में बन रहे पहले फास्ट ट्रैक रोड के टेंडर को चीन की कंपनी को देने के लिए नियमों में कई मनमाफिक बदलाव तक किए गए।

नेपाल के काठमांडू को भारतीय सीमा तक जोड़ने के लिए देश का पहला फास्ट ट्रैक रोड बनाया जा रहा है। इसकी जिम्मेदारी सरकार ने नेपाली सेना को दिया हुआ है। इसके निर्माण की सभी प्रक्रिया सेना के ही अधीन हैं। इस फास्ट ट्रैक रोड में अब तक जो भी काम हुआ है उसका टेंडर किसी ना किसी चीनी कंपनी को ही दिया गया है। कहने के लिए तो ग्लोबल टेंडर निकाला जाता है, लेकिन सभी टेंडर किसी ना किसी चीनी कंपनी को ही मिले इसके लिए इसके नियमों में कई बदलाव भी किए जाते हैं।

हाल ही में नेपाली सेना ने फास्ट ट्रैक रोड के पैकेज 8ए और 9बी

के लिए जो टेंडर निकाला था उसके तकनीकी रूप से फेल हो चुके चीन की कंपनी शांक्सी रोड एंड ब्रिज कंस्ट्रक्शन ग्रुप कंपनी लिमिटेड (एसएक्सआरबी) को फिर से इंट्री दे दी गई है। इस टेंडर को लेकर सेना ने 08 दिसंबर को ही चीनी कंपनी एसएक्सआरबी को तकनीकी रूप से अयोग्य घोषित कर दिया था, लेकिन दो दिन बाद यानी 10 दिसंबर को सेना ने एक नोटिस के जरिए इस कंपनी को फिर से योग्य होने की जानकारी दी।

इस चीनी कंपनी के अलावा अन्य चार कंपनियों को भी तकनीकी रूप से अयोघ्य कर दिया गया था। एसएक्सआरबी को तो दोनों ही पैकेज के लिए अयोग्य घोषित कर दिया गया था, लेकिन अभी बाकी अन्य कंपनियों को छोड़ कर सिर्फ इसी कंपनी को दोनों ही पैकेज के लिए तकनीकी रूप से योग्य होने का सर्टिफिकेट देते हुए फाइनेंशियल बिड में आगे बढ़ने को कहा गया है।

इन दोनों ही टेंडर पैकेज में इंडियन कंपनी एएफसीओएनएस ने भी टेंडर भरा था। हालांकि पैकेज 8ए में क्वालीफाई करने के बावजूद पैकेज 9बी में भारतीय कंपनी एएफसीओएनएस को डिसक्वालीफाई कर दिया गया था। सेना की तरफ से बताया गया है कि इंडियन कंपनी को 9बी के लिए भी क्वालीफाई कर दिया गया है। यह सिर्फ इसलिए ताकि चीनी कंपनी को डिसक्वालीफाई से क्वालीफाई करने पर हंगामा न हो। चीनी कंपनी को दोनों टेंडर में बरकरार रखने के लिए और जियो पॉलिटिकल बैलेंस के लिए इंडियन कंपनी को भी क्वालीफाई दिखा दिया गया है। हालांकि इस भारतीय कंपनी ने क्वालीफाई करने के लिए कोई प्रक्रिया या लॉबिंग ही नहीं की थी। पूर्व रक्षा सचिव देवेन्द्र कार्की ने कहा कि एक बार जिस कंपनी को डिसक्वालीफाई कर दिया गया हो उसको फिर से क्वालीफाई दिखाने के लिए नियमों में बदलाव गैर कानूनी है। किसी भी कारण से किसी खास कंपनी को फायदा पहुंचाने के लिए ऐसा नहीं किया जा सकता है लेकिन सेना जैसी संस्था के द्वारा किया गया है तो इसलिए इस पर कोई कुछ भी नहीं बोल रहा है।

सेना के प्रवक्ता ब्रिगेडियर जनरल कृष्ण प्रसाद भंडारी ने कहा कि सेना ने अपने मन से कोई भी निर्णय नहीं किया है। सेना को रक्षा मंत्रालय की तरफ से जो भी निर्देश मिला है उसी के मुताबिक प्रक्रिया को आगे बढ़ाई गई है। टेक्निकल बिड के बाद जो परिणाम आया उसकी जानकारी सेना की तरफ से रक्षा मंत्रालय को देने के बाद ही यह प्रक्रिया आगे बढ़ी है।

रक्षा मंत्रालय की तरफ से 21 नवंबर को नेपाली सेना को एक पत्र लिखा गया था जिसमें चीनी कंपनी को फाइनेंशियल बिड में आगे बढ़ाने की सिफारिश की गई है। रक्षा मंत्रालय की सिफारिश के बाद चीनी कंपनी को ही टेंडर देने के लिए टेंडर के फार्म के सेक्शन 3 के 2.2.1 में बदलाव कर ऐसा प्रावधान रखा गया है जिससे इसी कंपनी को टेंडर मिलना सुनिश्चित हो। 2500 करोड़ के टेंडर में पहले यह शर्त रखा गया था कि टेंडर भरने वाली कंपनी का नेटवर्थ टेंडर की कुल लागत से 75 प्रतिशत अधिक होना चाहिए। इस चीनी कंपनी की स्थानीय कंपनी कालिका कंस्ट्रक्शन का का नेटवर्थ पिछले ऑडिट के मुताबिक सिर्फ 173.40 करोड़ ही है।

रक्षा मंत्रालय की तरफ से कोई भी अधिकारी इस बारे में बोलने के लिए तैयार नहीं है। जब उप प्रधानमंत्री तथा रक्षा मंत्री पूर्णबहादुर खड्का से इसकी प्रतिक्रिया लेने की कोशिश की गई तो उन्होंने कोई भी प्रतिक्रिया देने से इनकार कर दिया, लेकिन यह जरूर कहा कि वो इस बारे में मंत्रालय के संबंधित विभाग और सेना से बात करेंगे। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि यदि कहीं कोई गड़बड़ी हुई है और नियमों की अनदेखी की गई है तो इसको रद्द भी किया जा सकता है।

आईडीएफ की गाजा की लड़ाई में बड़ी भूल, अपने ही नागरिकों पर चला दी गोली, तीन इजरायली बंधकों की मौत

तेल अवीव। इजराइली सुरक्षा बलों ने गाजा पट्टी में छिड़े युद्ध के दौरान अपने ही देश के तीन लोगों को मार डाला। इनको हमास ने बंधक बना लिया था। इनकी मौत शुजाया में लड़ाई के दौरान हुई। इजराइल डिफेंस फोर्सेज (आईडीएफ) ने मारे गए बंधकों के परिवारों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए घटना की पारदर्शी जांच कराने की घोषणा की है।

इजराइल के प्रमुख अखबार द टाइम्स ऑफ इजराइल के अनुसार, आईडीएफ ने मारे गए तीनों बंधकों की पहचान का खुलासा करते हुए एक्स हैंडल पर उनके फोटो जारी किए हैं। आईडीएफ से यह भूल युद्ध के 70वें दिन शुक्रवार को हुई। इजराइली सेना के मुख्य प्रवक्ता डैनियल हगारी ने कहा कि अभी यह साफ नहीं है कि तीनों बंधक हमास के चंगुल से भाग निकले थे या उन्हें छोड़ दिया गया था। उन्होंने कहा कि सभी पहलुओं की जांच

कराई जाएगी। गलत पहचान के चलते की गई गोलीबारी में इन तीनों की मौत हुई है। आईडीएफ ने एक्स हैंडल पर कहा है कि इस घटना से सबक लेकर युद्ध क्षेत्र के सभी सैनिकों को जरूरी दिशा-निर्देश दिए हैं। आईडीएफ ने तीन बंधकों को मार देने की बात स्वीकार करते हुए उनकी पहचान 28 वर्षीय योतम हैम, 25 वर्षीय समर तलाल्का और 26 वर्षीय अलोन लुलु शमरिज के तौर पर की है। हमास ने सात अक्टूबर को इन तीनों युवकों का अपहरण किया था। उल्लेखनीय है कि फिलिस्तीन के आतंकवादी संगठन हमास ने सात अक्टूबर को दक्षिणी इजराइल पर भीषण हमला किया था। हमले के दौरान हमास के आतंकवादियों ने 250 लोगों को बंदी बना लिया था और करीब 1,200 लोगों को मार डाला था। इसके बाद इजराइल ने गाजा में बमबारी शुरू कर दी। इजराइल के हमलों में अब तक 18,700 फिलिस्तीनी मारे गए हैं। द टाइम्स ऑफ इजराइल के अनुसार आईडीएफ प्रवक्ता डैनियल हगारी ने कहा है कि शुक्रवार सुबह हुई दुखद घटना की आईडीएफ पूरी जिम्मेदारी लेता है।

राष्ट्रपति पुतिन के आलोचक अलेक्सी नवलनी को दूसरी जेल ले जाया गया

मास्को। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के धुर आलोचक अलेक्सी नवलनी को देश के दूसरे भाग स्थित जेल में ले जाया गया है। वहां पहुंचने के बाद कानून के अनुसार उसके बारे में जानकारी दी जाएगी।

नवलनी की प्रवक्ता किरा यर्मिश ने कहा कि उन्हें कहां ले जाया गया है, इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है। वकीलों को बताया गया है कि 11 दिसंबर को वह व्लादिमीर क्षेत्र से बाहर भेज गए हैं। उनके वकीलों ने छह दिसंबर से उन्हें नहीं देखा है।

बड़ा देश होने के कारण कैदियों को रेल से ले जाने में कई हफ्ते लग सकते हैं। इस दौरान कैदी के गंतव्य तक पहुंचने, उसके स्वास्थ्य आदि की जानकारी प्राप्त करने में वकील और परिवार के सदस्य असमर्थ होते हैं। पूर्व वकील नवलनी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की आलोचना और बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाने के बाद सुर्खियों में आए थे।

नवलनी को सर्बिया में अगस्त 2020 में जहर देने का आरोप लगा, लेकिन क्रेमलिन ने उनकी हत्या के प्रयास का आरोप खारिज कर दिया था। बाद में नवलनी को चिकित्सा कराने जर्मनी ले जाया गया, जहां जांच में पता चला कि उन्हें नर्व एजेंट (जहर) दिया गया था। 2021 में नवलनी जर्मनी से रूस लौटे।

बाइडन प्रशासन ने निखिल गुप्ता पर मुकदमा चलाने की जानकारी पांच भारतीय-अमेरिकी सांसदों को दी

वाशिंगटन। भारतीय नागरिक निखिल गुप्ता पर मुकदमा चलाए जाने की जानकारी पांच भारतीय अमेरिकी अमेरिकी सांसदों को अमेरिका के राष्ट्रपति जो. बाइडन के प्रशासनिक अधिकारियों ने शुक्रवार को दी। गुप्ता पर अमेरिकी में एक सिख अलगाववादी नेता गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या के प्रयास की साजिश रचने का आरोप लगाया गया है।

कांग्रेस सदस्य अमी बेरा, प्रमिला जयपाल, रो खन्ना, राजा कृष्णमूर्ति और श्री थानेदार ने गुप्ता पर मुकदमा चलाए जाने को लेकर बाइडन प्रशासन से जानकारी मिलने के बाद एक संयुक्त बयान जारी किया। गुप्ता पर 29 नवंबर को अमेरिका में अमेरिकी नागरिक गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की नाकाम साजिश में कथित भागीदारी का आरोप लगाया गया है।

भारतीय-अमेरिकी सांसदों ने बयान में कहा, ह्वकांग्रेस सदस्य होने के नाते हमारे नागरिकों की सुरक्षा और उनका कल्याण हमारी सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता है। मुकदमे में लगाए गए आरोप बेहद चिंताजनक हैं।ह्व बयान के मुताबिक, ह्वहम (सांसद) हत्या की साजिश की जांच के लिए जांच समिति गठित

करने की भारत सरकार की घोषणा का स्वागत करते हैं और यह बेहद ही जरूरी है कि भारत मामले की पूर्ण जांच करे, अधिकारियों सहित जिम्मेदार लोगों को कसूरवार ठहराए तथा आश्वासन दे कि ऐसा दोबारा नहीं होगा। बयान में कहा गया, ह्वहमारा मानना है कि अमेरिका और भारत के बीच साझेदारी ने दोनों देशों के लोगों के जीवन पर सार्थक प्रभाव डाला है लेकिन हमें चिंता है कि मुकदमे में उल्लेखित समस्याओं को अगर उचित रूप से हल नहीं किया गया तो इससे साझेदारी को नुकसान पहुंच सकता है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।